

आर.एन.आई. नं. 3653/57  
मुद्रण तिथि 5 से 8 जून, 2021  
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2021

वर्ष : 79 अंक : 05-06  
वैशाख-ज्येष्ठ, 2078 मूल्य : ₹ 10  
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23  
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिन्वाणी

मई-जून, 2021 (संयुक्तांक)



ब्रह्मो अस्तिहंताणं  
नमो सिद्धाणं  
ब्रह्मो आत्मियाणं  
नमो उवज्ञायाणं  
नमो लोए सब्वसाहूणं

ऐसो पंच नमोवकारे, सब्व-पातप्पणासणो  
मंगलाणं व सत्वेस्मि, पढ़मं हवह मंगलं ॥



Website : [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

आप सोचें तो सही, साथ लेकर क्या जायेंगे ?

– आचार्यश्री हीरा

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

---

आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगड़ाने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीशा

---

जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

**With Best Compliments :**  
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**

ॐ अर्हम्

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

4-3-1941 - 23-05-2021



मुक्ति का राही

# Sampat Raj Choudhary

Delhi (Pipar)

अनन्य गुरु भक्त, धर्म के धोरी

मूर्धन्य लेखक, उत्कृष्ट कवि, मानवता के पुरोधा

IN CELEBRATION OF HIS LIFE

Wife Smt. Meema Choudhary, Dr Sunil-Sangita, Vimal-Priyanka, Anand  
Sneha, Akshay, Aagam & Entire Choudhary Family

जय गुरु हस्ती

जय महावीर  
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

जय गुरु हीरा-मान

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अनन्त श्रद्धा के केन्द्र

आचार्यप्रवर्ण 1008 श्री हृषीमलजी म.ला.

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

श्रद्धेय आचार्यप्रवर्ण 1008 श्री हृषीकेशबद्धजी म.ला.

के चरण कमलों में शत-शत वन्दन, नमन।

श्रद्धा श्रद्धा श्रद्धा श्रद्धा श्रद्धा श्रद्धा श्रद्धा

## शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

संयम-यात्रा के लिए प्रथम साधन शरीर है।

कर्म-निर्जरा के लिए  
निःस्वार्थ भाव से कृत गुरुसेवा  
और  
मानव सेवा सर्वोपरि है।

❀ ❀ श्रद्धान्वित गुरुभक्त कोठारी-परिवार ❀ ❀

सुमतिचन्द-इन्दिरा कोठारी, जयपुर  
हेमन्त-स्वाति, ईशान कोठारी, मुम्बई

# जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

**अधिकारी संस्थापक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763  
E-mail : [absjrhssangh@gmail.com](mailto:absjrhssangh@gmail.com)

**अधिकारी संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

**अधिकारी प्रकाशक**

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997  
जिनवाणी वेबसाइट- [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

**अधिकारी प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द्र जैन

**अधिकारी सह-सम्पादक**

नीरतनमल मेहता, जोधपुर  
मनोज कुमार जैन, जयपुर

**अधिकारी सम्पादकीय कार्यालय**

ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)  
फोन : 0141-2705088  
E-mail : [editorjinvani@gmail.com](mailto:editorjinvani@gmail.com)

**अधिकारी भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23  
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परिजूरद्ध ते सरीरयं,  
केसा पंडुस्था हवंति ते।  
से जिब्ब-बले य हायद्ध,  
समयं गोयम! मा पग्यायु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.24

हो रहा जीर्ण यह तन तेरा,  
हो रहे केश ये धवल पक्कर।  
घट रहा तुम्हारा रसनाबल,  
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर॥

**मई-जून, 2021 (संयुक्ताइक)**

**वीर निर्वाण सम्वत्, 2547**

**वैशाख-ज्येष्ठ, 2078**

**बर्ष 79 अंक 5-6**

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा  
कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : [sgpmandal@yahoo.in](mailto:sgpmandal@yahoo.in)

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

## विषयालेख

<b>सम्पादकीय-</b>	कोरोना का प्रभाव	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	7
<b>अमृत-चिन्तन-</b>	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	10
<b>विचार-वारिधि-</b>	अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. 12	
<b>प्रवचन-</b>	स्वयं को ही करनी होगी तप-साधना	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. 13	
	असंख्यं जीवियं मा पमायए	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी 16	
	जीव पर कर्म का प्रभाव	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. 20	
	वाह रे वाह कोराना	-श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. 25	
<b>स्मृति-दिवस-</b>	आचार्य श्री हस्ती की इतिहास दृष्टि	-श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	28
<b>प्राचीनक-</b>	लॉकडाउन के सकारात्मक पहलू	-श्री पारसमल चण्डालिया	34
<b>आत्म-परिवर्तन-</b>	मेरी व्यसनमुक्ति..शाश्वत भी..और अक्षय भी	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	38
<b>शोधालेख-</b>	पर्यावरण-प्रदूषण एवं जैनधर्म में उसका निवारण	-सुश्री डिम्पल जैन एवं प्रो. बीना	41
<b>English-section</b>	<b>Hindu Marriage : A socio-religious cum ethical Institution</b>	<i>-Dr. I. M. Khicha</i>	<b>46</b>
<b>स्मृतिशोष-</b>	साहित्यकार, संघहितैषी श्री सम्पत्तराजजी	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	48
<b>काव्य-</b>	बनना है वीतराग	-श्री सम्पत्तराज चौधरी	51
<b>जीवन-व्यवहार-</b>	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (5)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	54
<b>युवा-स्तम्भ-</b>	सफलता का तट बौद्ध है धीर्य	-श्री पदमचन्द्र गाँधी	55
<b>संवाद-</b>	कोरोना की व्यथा कथा	-श्रीमती कमला हणुवन्तमल सुराणा	57
<b>जीवन-बोध-</b>	स्वयं की अनाथता का बोध	-श्री गौतम पारख	59
<b>स्वास्थ्य-विज्ञान-</b>	अध्यात्म की उपेक्षा करने वाला स्वास्थ्य-विज्ञान अपूर्ण	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	61
<b>तत्त्व-चर्चा</b>	आओ मिलकर कर्मों को समझें (12)	-श्री धर्मचन्द्र जैन	64
<b>चिन्तन -</b>	अनित्य भावना	-श्री लड्डलाल जैन	66
<b>गीत/कविता-</b>	हम सब आत्माएँ हैं एक समान सबको नमस्कार है/झील का पानी	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	15
	जीवन का अर्थ समझ में आया	-डॉ. रमेश 'मयंक'	40
	कहती है हमको महावीर वाणी	-डॉ. रेनू सिरोया कुमुदिनी	45
	जैनधर्म नहीं जीवन जीने की कला है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	47
<b>विचार/चिन्तन-</b>	संयम वही सार्थक जो आत्मलक्ष्य से जुड़ा हो सुखी होने के लिए बदलें अपनी सोच का	-श्रीमती मंजू जैन	67
	तरीका	-श्री पीरचन्द्र चोरड़िया	58
<b>साहित्य-समीक्षा-</b>	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द्र जैन	68
<b>समाचार-विविधा-</b>	समाचार-संकलन	-संकलित	70
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
<b>बाल-जिनवाणी -</b>	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

## कोरोना का प्रभाव

❖ डॉ. धर्मचन्द्र छौल

**एक** अदृश्य सूक्ष्म वायरस का मानव-शरीर पर कितना प्रभाव पड़ता है, इसका बोध कोरोना की इस द्वितीय लहर से हो गया है। पूरा विश्व इससे आतंकित है। भारत में इस बार डेढ़ माह पूर्व प्रतिदिन लगभग 5 लाख लोग इस रोग से संक्रमित हो रहे थे, जो लॉकडाउन एवं सख्त नियन्त्रण के कारण अब प्रतिदिन 1,65,000 रोगी इस वायरस से संक्रमित हो रहे हैं। जो रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में श्वास आदि के माध्यम से संक्रमित हो जाता है, वह महामारी का रूप ले लेता है। कोरोना वायरस ने भी महामारी का विकराल रूप धारण किया है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार भारत में इससे 3,25,998 लोग कालकवलित हुए हैं, किन्तु अमेरिकी एजेन्सी इस संख्या को 6 से 45 लाख तक मानती है। यह तो निश्चित है कि सरकारी आँकड़े वास्तविकता से कम हैं।

आज ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके परिवारजन या रिश्तेदार, परिचित या पड़ौसी की कोरोना से मृत्यु नहीं हुई हो। कई परिवार बिलख रहे हैं। बच्चे माता-पिता विहीन हो गए हैं। कहीं पत्नी पतिविहीन तो कहीं पति पत्नीविहीन हो गए हैं। कहीं युवा बेटा चला गया है तो कहीं आजीविका न होने से पूरा परिवार तबाह हो गया। कहीं शब को अर्थी देने वाले नहीं हैं, तो कहीं अस्पताल के द्वार से शब सीधा श्मशान घाट पहुँचाया जा रहा है। एक-दूसरे का दुःख बाँटने के लिए लोग नहीं पहुँच पा रहे हैं। सबको संक्रमित होने एवं इसके तेजी से फैलने का अन्देशा है। सब मोबाइल फोन पर ही बात करके या सन्देश भेजकर सन्तुष्ट हो रहे हैं। अखबार के पन्ने शोक समाचारों से भरे रहते हैं। 2021 के अप्रैल और मई माह में लाखों लोग धराशायी हुए हैं। अस्पतालों में बेड़ नहीं मिल रहे थे, ऑक्सीजन सिलेण्डर की कमी चल रही थी। हजारों लोगों ने

वेणीलेट पर पहुँचकर या उसके अभाव में दम तोड़ दिया। कोई प्रारम्भ में आये बुखार को हल्के में लेकर संक्रमण को बढ़ाते चले गए, फिर दौड़कर अस्पताल पहुँचे तो बेड़ नहीं मिला, ऑक्सीजन नहीं मिली और व्यवस्था हो गई तो शरीर सम्बल नहीं सका। फेफड़े भीतर से काले हो गए, श्वास की गति मन्द एवं फिर बन्द हो गई। इस कोरोना की चिकित्सा के पश्चात् कई लोग दीर्घकाल तक कमजोरी का अनुभव कर रहे हैं और कुछ ब्लैक फंगस, यलो फंगस एवं श्वेत फंगस के शिकार हो गए हैं, जो अपने आपमें विशेष पीड़ादायी है।

कोरोना महामारी ने हमें कई प्रकार की सीख दी है एवं प्रभाव छोड़ा है, यथा-

1. हमें जो कक्षुओं से दिखता है, उतना ही सत्य नहीं है। जो आँखों से नहीं दिखती हैं-ऐसी वस्तुओं, जीवों, पुद्गलों या परमाणुओं की भी सत्ता है। वायरस नेत्रों से नहीं दिखता है, किन्तु उसके कार्यों से उसकी सत्ता सिद्ध होती है। इसलिये इन्द्रिय ज्ञान को ही पर्याप्त मानना उचित नहीं, अनेक पदार्थ ऐसे हैं जो अतीन्द्रिय हैं, उनमें से कुछ को वैज्ञानिक उपकरणों से जाना जा सकता है।
2. हर जीव एवं पुद्गल अपने गुण-धर्मों के अनुसार कार्य करता है। अनुकूल वातावरण मिलने पर वह अपना प्रभाव दिखाता है एवं वृद्धि को प्राप्त होता है। कोरोना वायरस अपनी अभिवृद्धि करने के लिए शरीर के ग्लूकोज को ग्रहण करता है। डी.आर.डी.ओ. द्वारा 2डीजी (2 डी-ऑक्सी-डी-ग्लूकोज) के पाउडर का आविष्कार किया गया है जो ग्लूकोज का भ्रम उत्पन्न करता है एवं उसे ग्रहण करके यह वायरस अपनी वृद्धि नहीं कर पाता है। उसके लिए यह प्रतिकूल वातावरण है।

- कैंसर में भी यह दबा उपयोगी है। हल्दी, फिटकरी, गिलोय आदि जो वायरस के प्रभाव को कम करने के साथ रोग-प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाते हैं वे भी इस काल में उपयोगी समझे गए। आयुर्वेद एवं घरेलू दवाओं का भी महत्त्व उजागर हुआ है।
3. मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) को सही रखना चाहिए, ताकि बाह्य वायरस का प्रभाव न हो, या अधिक न हो। शीघ्र ही उस पर काबू पाया जा सके। इसके लिये प्रातःकाल भ्रमण, योगासन, प्राणायाम, पौष्टिक भोजन आदि उपयोगी हैं। भोजन में स्वाद की नहीं स्वास्थ्य की प्रधानता हो। स्वास्थ्य के नियमों एवं आहार-संयम आदि की समुचित जानकारी एवं उसकी पालना इसमें सहायक है।
  4. कोरोना से हुए विपुल विनाश ने हमें जीवन की अनित्यता का पाठ पढ़ाया है। मनुष्य न जाने कितने स्वप्न संजोए रखता है, किन्तु कोरोना काल में गए लोगों के सारे स्वप्न धरे रह गए। व्यक्ति धन-संग्रह करता है, उसके लिए झूठ, कपट का आश्रय लेता है, न जाने कितने लोगों से वैर-विरोध करता है। वह सोचता है—बड़ा बंगला बनाऊँगा, व्यापार को नई ऊँचाइयाँ दूँगा, बच्चों के विवाह धूमधाम से करूँगा, किन्तु अभी ये सब इच्छाएँ स्वप्न बनकर रह गईं। इस अनित्य जीवन को सुन्दर रीति से जीना चाहिए। हम सोचते हैं कि हम इस मनुष्य जीवन में सदा बने रहेंगे, यह हमारा भ्रम है।
  5. धन की उपयोगिता की सीमा का बोध हुआ। धन का संग्रह कितना भी हो, किन्तु इस कोरोना काल में धनिकों को भी अस्पताल में बेड़ नहीं मिल पाया। धन ही शरणभूत एवं रक्षक नहीं है।
  6. संकटकाल का कई लोगों ने नाज़ायज लाभ उठाया। अस्पताल में बेड़ के अभाव के साथ आवश्यक दवाओं की भी कमी पड़ गई। रेमडेसिवर इञ्जेक्शन की काला बाजारी हुई। तीन हजार रुपये की कीमत वाले इस इञ्जेक्शन को लुटेरों ने बीस हजार और पचास हजार तक बेचा। कहीं इससे भी अधिक कीमत वसूली गई। कई प्राइवेट अस्पतालों ने लाखों का बिल बनाकर लूटने का धन्धा खूब चलाया। जब तक भुगतान पूरा नहीं हुआ तब तक शब्द नहीं सौंपा गया तथा शमशान के लिए नहीं भेजा गया।
  7. कोरोना वायरस उतना खतरनाक नहीं, जितना उसका भय एवं असावधानी खतरनाक है। कोरोना होने पर जो व्यक्ति जितना भयभीत हुआ एवं हिम्मत हार गया वह रोग का गम्भीर शिकार हो गया। वह अस्पताल पहुँचने एवं वहाँ भर्ती होने के लिए विवश हो गया। ऑक्सीजन सिलेण्डर एवं वेणिलेटर पर पहुँचने पर घर वालों की चिन्ता शिखर पर पहुँच गई। ऐसे रोगी अस्पताल से कम ही स्वस्थ होकर लौटे। अतः रोग से बुरा रोग का भय है। बार-बार ऑक्सीजन लेवल नापना एवं थोड़ा भी कम होने पर चिन्ता का बढ़ते जाना एवं फिर ऑक्सीजन लेवल का घटना, इससे फिर चिन्ता का बढ़ना—यह क्रम चलते रहने पर श्वास फूलने लगती है और ऑक्सीजन का स्तर गिरता चला जाता है। जो अधिक भयभीत हुए वे शीघ्र सम्भल नहीं पाए। सावधानी आवश्यक है, किन्तु भय नहीं।
  8. कोरोना वायरस की कोई अचूक औषधि नहीं होने के कारण विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों ने वैक्सीन का आविष्कार किया। भारत में भी कोविशील्ड एवं को-वैक्सीन नामक वैक्सीन का निर्माण प्रारम्भ हुआ। अमेरिका में फाइजर एवं मोडना, रूस में स्पूतनिक आदि वैक्सीन निर्मित हुए। भारत में पहले स्वास्थ्यकर्मियों, आवश्यक सेवा प्रदाताओं को वैक्सीन लगाए गए, फिर वरिष्ठ नागरिकों, 45 वर्ष से अधिक वयोवानों एवं तदनन्तर 18 वर्ष से

- अधिक आयु के युवाओं को ये टीके लगने प्रारम्भ हुए। भारत में अब तक 21 करोड़ 20 लाख वैक्सीन लग चुके हैं। इन टीकों की दो डोज लगायी जाती है। प्रतिदिन लगभग 30 लाख टीके लग रहे हैं। बिना आधार कार्ड के भी सन्त-महात्माओं, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोगों आदि को वैक्सीन की सुविधा प्रारम्भ की गई है। कई जैन सन्त भी यह टीका लगवा रहे हैं। यह टीका इज्जेक्शन के रूप में भुजा में लगाया जाता है।
9. लोग पहले विवाह-समारोह में अपार धन खर्च किया करते थे, कोरोना काल में उनका काम बहुत सस्ते में निपट गया, क्योंकि सरकार ने कहीं 20 तो कहीं 50 व्यक्तियों को शामिल होने की अनुमति दी। कहीं मई माह में शादी-विवाह पर पूर्ण रोक लगा दी गई। कुछ विवाह उसके पश्चात् भी अत्यन्त सीमित संख्या में सम्पन्न हुए। विवाह आदि समारोह नहीं होने से एक ओर आयोजकों का धन बच गया तो दूसरी ओर बाजार के व्यापार ठप्प हो गए।
10. आर्थिक गतिविधियाँ कुछ क्षेत्रों तक सीमित हो गई। विशेषतः चिकित्सा, दवा-विक्रेता, फल-सब्जी, दूध, किराना, इण्डस्ट्री एवं ऑन लाइन व्यापार होते रहे। अन्य व्यापारिक कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। घर से कार्य करने की संस्कृति का विकास हुआ। सीमित रूप में शिक्षा भी घर बैठे ऑनलाइन चल रही है।
11. ऑक्सीजन की कमी के कारण त्राहि-त्राहि मची। अतः अब नये ऑक्सीजन प्लॉट स्थापित हो रहे हैं। औद्योगिक संस्थानों में आ रही ऑक्सीजन भी रोगियों के लिए भेजी गई। ऑक्सीजन कंसण्ट्रेटर मँगवाए गए। कई सेवाभावी संस्थाओं एवं उदारमना व्यक्तियों ने भी इस दशा में महत्वपूर्ण सराहनीय योगदान किया। ऑक्सीजन कंसण्ट्रेटर मशीन से बातावरण में से ऑक्सीजन एकत्रित कर रोगी को दी जाती है।
12. घर में रहकर कई श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक एवं स्वाध्याय की साधना में वृद्धि की। ज्ञानार्जन हेतु अनेक वेबिनार कक्षाएँ चालु हुईं, जिनमें युवकों, युवतियों, श्रावकों एवं श्राविकाओं ने अच्छी रुचि दिखाई। अनेक व्याख्यान वेबिनार के माध्यम से हुए, संगोष्ठियाँ भी इसी प्रकार हुईं। इन ऑनलाइन कार्यक्रमों की यह विशेषता रही कि इनमें देश-विदेश का कोई भी व्यक्ति जुड़कर श्रवण कर सकता है, प्रश्नोत्तर कर सकता है। इस तरह ज्ञानवर्धन की दृष्टि से ये ऑनलाइन कार्यक्रम मामूली व्यय से सफल रहे। संगोष्ठियों में आने-जाने का समय एवं धन दोनों में बचत हुई।
13. जो बालक अनाथ हो गए, माता-पिता दोनों नहीं रहे, उनकी करुण दशा है। आज सम्पन्न लोगों को आगे आकर इसमें मदद करने की आवश्यकता है। कुछ राज्य सरकारें भी आगे आई हैं। कहीं ऐसे बच्चों की शिक्षा आदि का उत्तरदायित्व सरकार ले रही है तो केन्द्र सरकार द्वारा 10 लाख रुपये की राशि का सहयोग किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट भी इस ओर प्रशासन का ध्यान केन्द्रित कर रहा है। उल्लेखनीय है कि जैन समाज भी इस ओर अग्रसर हुआ है। अनेक व्यक्ति एवं संस्थाएँ सहयोग करने में तत्पर हुए हैं। यह एक अवसर है जब मानवजाति की भावात्मक एवं क्रियात्मक सेवा की जा सकती है। अपने पास जो है, उसका दूसरों के लिए जीवन-रक्षण एवं जीवन-सञ्चालन के लिए सदुपयोग किया जा सकता है।
14. इस कोरोनाकाल ने हमारी जीवनशैली परिवर्तित कर दी है। अब जीवन से बढ़कर कोई कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण नहीं रह गया है। जिन कार्यों के बिना जीना सार्थक नहीं समझ रहे थे, अपने को अत्यन्त व्यस्त समझ रहे थे—अब वे कार्य भी जीवन रक्षा के समक्ष महत्वहीन हो गए हैं। होटलों एवं रेस्टोरेण्ट

(क्रमशः शेषांश पृष्ठ 11 पर)

## आगाम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

**से सुयं च मे अज्ञत्थयं च मे बन्धपमोक्षो  
अज्ञत्थेव॥२१॥**

-आचाराङ्गसूत्र, प्रथम श्रुत स्कन्ध, पंचम अध्ययन,  
उद्देशक 2, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित

अर्थ-मैंने सुना है, अनुभव किया है, बन्ध तथा मोक्ष  
तुम्हारी आत्मा में ही स्थित है।

**विवेचन-**यह सूत्र स्पष्ट करता है कि बन्ध एवं मोक्ष,  
आत्मा में ही है। आत्मा के भीतर ही बन्धन का कारण  
एवं मुक्ति का कारण विद्यमान है। जब आत्मा  
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र से युक्त होता  
है तो वह मुक्ति की ओर अग्रसर होता है तथा जब वह  
राग, द्वेष, मोह तथा कषाय भावों में लिप्त होता है तो वह  
कर्मों से बँधा रहता है।

अनादि काल से यह आत्मा अष्टविध कर्मों से  
आबद्ध है। मिथ्यात्व, अज्ञान, अविरति, प्रमाद, कषाय  
और अशुभ योग के कारण निरन्तर नये कर्मों का आस्रव  
करके यह आत्मा कषाय के कारण नये-नये कर्मों का  
बन्ध करता आया है या उनकी प्रगाढ़ता और भोग काल  
की स्थिति में परिवर्धन करता रहा है। जो आत्मा आठों  
कर्मों से मुक्त हो जाता है, वह फिर पुनः कर्म बन्धन में  
आबद्ध नहीं होता, क्योंकि उसमें बन्धन के सभी कारण  
समाप्त हो जाते हैं। सिद्धात्मा पूर्ण शुद्ध आत्मा है। आत्मा  
का वही स्वरूप हम संसारी जीवों में भी प्रकट हो सकता  
है। किन्तु उसके लिए आवश्यकता है कि बन्धन रहित  
हो जाये, नये कर्मों का आस्रव न हो तथा पूर्व बद्ध कर्मों  
का रत्नत्रय की साधना से क्षय करें। इसमें आत्मा के  
वीर्यगुण की भी महती भूमिका होती है। इस वीर्य को  
शुभ में लगाया जाता है या अशुभ में, नये कर्म बन्धन में  
लगाया जाता है या बन्धन रहित होने में, कषाय की वृद्धि  
में लगाया जाता है या विशुद्धि में-यह जीव की समझ पर  
निर्भर करता है। जब जीव को सम्यग्दर्शन होता है अर्थात्

जीवन और संसार के प्रति सही दृष्टिकोण का विकास  
होता है, भोग-वासनाओं से हटकर योग एवं उपयोग को  
संवर की निर्जरा की साधना में लगाता है तो वह अपने  
लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

आज कुछ लोग कहते हैं कि आत्मा तो शुद्ध ही है  
वह अशुद्ध कहाँ है? उन लोगों को लिए आचाराङ्गसूत्र  
का यह सूत्र स्पष्ट कथन कर रहा है कि बन्धन का कारण  
भी भीतर में विद्यमान है। अज्ञत्थ या अध्यात्म शब्द का  
अर्थ आत्मा में या आत्मा के भीतर या अपने भीतर ग्रहण  
करना चाहिए। आत्मा को बाँधने वाला कोई दूसरा नहीं  
है, वह स्वयं अपने भीतर विद्यमान राग-द्वेष, क्रोधादि  
कारणों से बन्धन को प्राप्त होता है।

क्रोध, मान, माया एवं लोभ यद्यपि आत्मा के  
स्वरूप नहीं हैं, किन्तु वे उसी के दोष स्वीकार किए गए  
हैं, यथा वीरत्थुई में कहा गया है-

कोहं च मायं च तहेव मायं,  
लोभं च उत्थं च अज्ञत्थ दोसा।  
एयाणि वंता अरहा महेसी,  
न कुब्वङ पावं न कारवेऽ॥

-वीरत्थुई, गाथा 26

क्रोध, मान, माया एवं लोभ ये आध्यात्मिक  
(भीतर में विद्यमान) दोष हैं। ये दोष शरीर के नहीं हो  
सकते, क्योंकि शरीर में क्रोध, मान आदि उत्पन्न नहीं  
होते। ये दोष मन के भी नहीं होते, क्योंकि बिना मन वाले  
जीवों में भी ये दोष पाए जाते हैं। क्रोध, मान आदि चारों  
कषाय न्यूनाधिक रूप में एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय एवं  
असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों में भी पाये जाते हैं, जिनके मन  
नहीं होता है। अनादिकाल से ये चारों कषाय जीव के  
साथ लगे हुए हैं। जीव और आठ कर्मों का अनादिकाल  
से सम्बन्ध है। इन कर्मों के कारण जीव का शुद्ध स्वरूप  
आवरित, विकृत या बाधित रहता है। अतः क्रोधादि की

उत्पत्ति उस कर्मयुक्त जीव से ही होती है। कर्म भी तब तक प्रभावी हैं जब तक वे जीव के साथ सम्बद्ध हैं। राग-द्वेष, मोह आदि कर्मयुक्त संसारी जीव के ही दोष हैं, जिन्हें जीव ही दूर कर सकता है। ये जीव के स्वभाव नहीं हैं, विकार हैं, इन्हें दूर करने पर मुक्ति का आविर्भाव होता है। ये राग-द्वेष आदि भीतर में रहे हुए वे दोष हैं, जिनके कारण कर्मों का नियत बन्ध होता है—‘अज्ञात्थहेउं निययस्स बंधो।’ (उत्तराध्ययनसूत्र 14.18) भीतर में रहे कारणों से ही कर्मों का बन्ध होता है। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय आदि भीतर के दोष हैं। इन दोषों का प्रभाव मन, वचन एवं काया पर भी परिलक्षित होता है। अर्थात् इनसे मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति प्रभावित होती है। जब क्रोध आता है तो मन में प्रकट होता है तथा शरीर भी तदनुरूप क्रियाशील हो जाता है। आत्मिक दोषों के कारण ही कोई हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रहस्तेवन, परिग्रह आदि पापों में प्रवृत्त होता है। इसलिये ये दोष भीतर में हैं, इसे स्वीकार करना होगा तथा ये स्वभाव नहीं अपितु विकार हैं, जिनसे जीव की

विभाव पर्याय व्यक्त होती है। इन दोषों का निराकरण करके ही जीव शुद्धावस्था को प्राप्त होता है, जिसे मोक्ष कहा गया है।

यह सत्य तीर्थद्वारा से सुना है एवं आर्य सुधर्मा ने स्वयं आत्मिक स्तर पर अनुभव किया है। उपनिषदों में मन को बन्धन एवं मुक्ति का कारण कहा गया है—मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। यह कथन आंशिक रूप से सत्य है। क्योंकि यह मन वाले जीवों पर ही लागू होता है, अन्य एकेन्द्रियादि जीवों पर नहीं। दूसरी बात यह है कि मन तो एक उपकरण है उसका जिस तरह प्रयोग किया जाएगा वह वैसा ही कार्य करेगा। वह आत्मभावों के अनुसार ही कर्म करेगा। जैनदर्शन में औदयिकभाव में कर्मबन्धन माना जाता है। कषाय, लेश्या आदि औदयिक भाव हैं जो जीव के ही स्वीकार किये गए हैं। मुक्ति की अवस्था में यह औदयिकभाव नहीं रहता है। मुक्ति में औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक एवं पारिमाणिक भाव सहयोगी होते हैं।

#### (क्रमशः पृष्ठ 9 का शेषांश)

की बढ़ती प्रवृत्ति इस कोरोना से कुछ काल के लिए थम गई है।

15. साधु-सन्तों को आत्म-साधना के लिए पर्याप्त समय मिल रहा है। पहले लोगों को सम्भालने में, प्रवचन आदि में जो समय जाता था, उसका उपयोग वे स्वाध्याय एवं आत्म-साधना में कर सकते हैं। सन्तों के चातुर्मासों में जो धन व्यय होता था, वह इस काल में बहुत कम हो गया है। इस धन का भी मानवसेवा में उपयोग किया जा सकता है।
16. लॉकडाउन के कारण घर पर अधिक समय मिलने के कारण टी.वी., लेपटॉप, मोबाइल आदि का प्रयोग बढ़ा है। टी.वी. एवं व्हाट्सएप आदि से कहीं नकारात्मक सोच बढ़ा है तो प्रेरक वाक्यों को

सोशियल मीडिया पर देखकर आत्म सम्बल भी प्राप्त हुआ है। सूचनाओं का बड़ी तीव्रता से सञ्चरण हुआ है। सरकारी आदेश भी तुरन्त सोशियल मीडिया से सर्वत्र पहुँच जाते हैं।

17. आज ऐसी संस्थाओं की महती आवश्यकता है जो संघ-समाज के सदस्यों की वास्तविक स्थिति की जानकारी कर इस संकटकाल में सही रीति से आवश्यक सहयोग पहुँचा सके। जरूरतमन्द सदस्य सीधे उस संस्था से सम्पर्क कर सकें।

हर परिस्थिति हमें जीवन में कोई सीख देने के लिए आती है। आवश्यकता है उससे दुःखी एवं परेशान न होकर सत्‌शिक्षा ग्रहण करें।

## अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सर.

- ⑥० अपध्यान में बाहरी हिंसा नहीं दिखती, परन्तु वहाँ अन्तरङ्ग हिंसा है।
- ⑥० अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है।
- ⑥० मनुष्य को ज्ञान का तीर लगे तो एक ही काफी है और नहीं लगे तो जन्मभर सुनते रहने पर भी कोई लाभ नहीं होता।
- ⑥० मनुष्य के मन पर माया की झिल्ली आने से वह सतत्त्व को नहीं देख पाता और सत्कर्म में चल भी नहीं सकता।
- ⑥० पारिवारिक प्रार्थना, साप्ताहिक स्वाध्याय सुसंस्कार के साधन हैं। इनके साथ निर्व्वसनी, प्रामाणिक और शुद्ध व्यवहार वाला होना आवश्यक है।
- ⑥० जिसके द्वारा हित-अहित, कर्तव्य-अकर्तव्य और धर्माधर्म का बोध हो, वही सच्चा ज्ञान है। ज्ञान के बिना विज्ञान जीवन में हितकारी नहीं हो सकता।
- ⑥० तप के साथ क्रोध आदि विकारों का त्याग करना उसका भूषण है। कहा है—सोहा भवे उग्गतवस्स खंती। अर्थात् क्षमाभाव से उग्र तपस्या की शोभा है।
- ⑥० बाहरी विषमता दूर करने से शान्ति नहीं होगी। उससे कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं, पर शान्ति के लिए समता आवश्यक है।
- ⑥० गृहस्थ-जीवन दान-शील प्रधान है और मुनि-जीवन तप-संयम प्रधान है।
- ⑥० बालक के संस्कार-निर्माण में पिता से अधिक मातृजीवन कारण होता है।
- ⑥० अरिहन्त कहते हैं—यदि ज्ञानी बनना है तो मोह-माया का पर्दा दूर करो। ज्ञान का प्रकाश बाहर नहीं,
- तुम्हारे ही भीतर है।
- ⑥० मानव तन, धन, परिवार पद आदि के मोह में भूला हुआ है, अतः प्राप्त सामग्री का उचित उपयोग नहीं कर पाता है।
- ⑥० बिना ज्ञान के क्रिया करते हुए प्राणी अन्धकार में घूमता है, सत्य प्राप्त नहीं कर पाता।
- ⑥० विद्या से विनय के बदले अविनय बढ़ता हो तो समझना चाहिए कि वह सद्विद्या नहीं है।
- ⑥० ज्ञानी अपनी करणी को भौतिक पदार्थों के बदले नहीं गँवाता।
- ⑥० जो निमित्त पाकर पुरुषार्थ करता है, वह अवश्य ही आत्मा का उत्थान कर लेता है। सदगुरु का निमित्त पाकर भी जो पुरुषार्थ नहीं करता वह ज्ञान-लाभ नहीं कर सकता।
- ⑥० धर्म-साधना के लिए धन आवश्यकता नहीं है। इसकी साधना इतनी सस्ती, सरल और सुलभ है कि अमीर-गरीब सब कोई इसका लाभ उठा सकते हैं।
- ⑥० धन की भूख धन से नहीं मिटती, वह सन्तोष से मिटती है।
- ⑥० देश के नागरिकों को सामूहिक बल से हिंसा का विरोध करना होगा।
- ⑥० अहिंसा, सत्य एवं सदाचार का त्रिगुण मन्त्र धारण कर देश को संकट से बचा लेना चाहिए।
- ⑥० जीवन की गाड़ी में धन का पेट्रोल ही भरते जाओगे और ब्रत का जल नहीं होगा तो यात्रा खतरे से खाली नहीं होगी।
- ⑥० मन बदल जाता है तो जीवन बदलते देर नहीं लगती।
- ⑥० धर्म के प्रचार में भी आचार का बल चाहिए।  
— ‘नमरो पुरिस्वरणंथहत्थीणं’ ग्रन्थ से सामार

## स्वयं को ही करनी होगी तप-साधना

परमश्रद्धेय उत्तरार्थप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. शास्त्रीय गृह रहस्यों को सरलतम और बोलचाल की भाषा में इस युक्ति से समझाते हैं कि श्रोताओं के मन में ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप का हार्द न केवल समझ में आता है, बल्कि हर श्रोता भक्ति-भावना से उस पर चलने को सहज तत्पर हो जाता है। कल्पतरु गार्डन, कांदिवली-मुम्बई में 31 अगस्त, 2008 को प्रदत्त इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नीरतनमल मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

आन्तरिक एवं बाह्य तप करके घनघाती कर्मों का क्षय करने वाले अरिहन्त भगवन्तों एवं तप की साधना में जीवन-निर्माण करने वाले सन्त भगवन्तों के श्री चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

मोक्ष-मार्ग का चौथा चरण तप के नाम से व्याख्यायित किया जा रहा है। जड़ और चेतन का भेद करना ज्ञान है तो उस पर विश्वास होना दर्शन है। ज्ञान और दर्शन हो जाने के पश्चात् आस्रव को छोड़कर संबर-चारित्र के माध्यम से आगे बढ़ने का नाम है संयम और भीतर में रहे हुए सञ्चित कर्मों को खपाना तप है।

यहाँ समझना यह है कि दूसरों का ज्ञान न मेरे काम आयेगा न आपके। कोई कितनी ही वीतरागता की बात कहे, कितने ही दृष्टान्तों के माध्यम से समझाने का प्रयास करे, पर जब तक मेरा जीवन जानकार नहीं होगा, मेरे जीव को विश्वास नहीं जमेगा तब तक मेरे चरण चारित्र में नहीं बढ़ेंगे। जब चारित्र में चरण ही नहीं बढ़ेंगे तो मुक्ति नहीं होगी।

आज कइयों में एक मिथ्या विश्वास घर कर गया है कि करता कोई दूसरा है, राजी कोई दूसरा हो रहा है। कई हैं जो गर्व से कहते रहते हैं कि मेरे पिताजी ने दीक्षा ले ली, मेरा पुत्र प्रब्रजित हो गया, मेरी घर वाली रोज ग्यारह सामायिक करती है, मेरे घर अमुक के एकान्तर तप चल रहा है, वह दूसरों की बातें कहता है, बताता है, लेकिन खुद क्या कर रहा है, नहीं कहता। वह घर के एक-एक सदस्य की बात बड़े हर्ष और गर्व से कहता है तो क्या घर वालों की बातों से उसका कल्याण हो जायेगा?

आपकी घर वाली खाती है तो क्या आपका पेट भर जायेगा? घर वाली सोती है तो क्या आपको नींद लेने की जरूरत नहीं? दूसरों का दृष्टान्त देना, दूसरों की बात कहना भ्रम है। कोई किसी को नहीं तारता। अगर तारने वाला होता तो गणधर गौतम स्वामी को पहले केवलज्ञान हो जाता। भगवान महावीर के प्रति गौतमस्वामी की अटूट श्रद्धा थी, पूरा समर्पण था और उनमें अप्रमत्तता तो थी ही, पुरुषार्थ भी था।

गणधर गौतम स्वामी के लिए शास्त्र में जगह-जगह वर्णन मिलता है। आपने शास्त्र-श्रवण किया है, इसलिए आप जानते हैं। उनसे पूछा जाता-आप कहाँ रहते हैं? गौतम स्वामी जवाब में कहते हैं कि-मैं भगवान महावीर के चरणों में रहता हूँ। गौतम स्वामी जब भी कोई बात कहते तो उनका कथन होता कि भगवान ऐसा फरमाते हैं। क्या गौतमस्वामी जैसी श्रद्धा आज भी है? क्या वैसा समर्पण है?

गौतमस्वामी जैसी श्रद्धा-भक्ति और समर्पण न आपमें है, न मेरे में है। मजे की बात तो यह है कि गौतमस्वामी ने जिनको दीक्षित किया उनको तो केवलज्ञान हो गया, लेकिन गौतमस्वामी को नहीं।

क्यों? कारण क्या? न गुरु तारता है और न भगवान ही। मेरी बात आपको समझ में आ रही है न। जब तक हमारी दृष्टि नहीं बदलेगी, तब तक साधना के प्रति विश्वास नहीं जगेगा, जब तक समर्पण के साथ स्वयं का चलना नहीं होगा तब तक मुक्ति होने वाली नहीं है।

याद रखिये-दूसरों के दृष्टान्त देना छोड़ दीजिये। विघ्न-बाधाओं से, दुःख-द्वन्द्व से, मोह-ममता से जब तक अलग नहीं होंगे तथा जब तक साधना में समर्पण नहीं होगा तब तक आप मुक्त नहीं हो सकते। मोह-ममता के त्याग के बिना कोई भी जीव न मुक्त हुआ है, न ही होगा।

संकल्प करने वाला तिरता है। अभी आप गजसुकुमाल का उदाहरण सुन गए। जो छोड़ सकता वह मालिक है। वासुदेव श्रीकृष्ण गजसुकुमाल से कहते हैं- भाई! तू मुझे बहुत प्यारा है, राज्य मुझे उतना प्यारा नहीं। वासुदेव कहते ही नहीं, छोटे भाई को प्रेम से गोद में बिठाते हैं, राज्य सिंहासन देते हैं और स्वयं सामने खड़े होकर पूछ रहे हैं-कहिये, मेरे लिए क्या आज्ञा है?

आपने सुना है कई बार सुनते हैं, पर आपसे यदि पूछा जाय कि आपको अपना छोटा भाई कितना प्यारा लगता है? मैं वासुदेव श्रीकृष्ण और गजसुकुमाल की बात कहूँ या ज्ञाताधर्मकथाङ्ग में थावच्चा-पुत्र की बात कहूँ। शास्त्र में ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं। आज कौन है जो दीक्षा लेने को तैयार है?

आज एक पिता अपने पुत्र को गोद में लेकर पूछे- बता, तुझे क्या तकलीफ है? तुझे कौनसा दुःख है?

जवाब क्या आता है, आप स्वयं नहीं जानते।

थावच्चा पुत्र ने क्या कहा? आपको ध्यान में है क्या? थावच्चा पुत्र ने कहा-पिताश्री आप मुझे भौतिक सुख-सुविधा के साधन तो दे सकते हैं, तो क्या आप मरने से भी मुझे बचा सकते हैं?

जिनमें आत्मज्ञान है या जिनकी दृष्टि बदल गई या जिन्हें अपने पर और धर्म पर विश्वास हो गया तो कहना होगा-ऐसे जीव सम्यग्दृष्टि हैं। थावच्चा पुत्र के के लिए शास्त्र में उल्लेख है-तुम धन्य हो, पुण्यशाली हो और तुम्हारा जीवन सार्थक है।

आपने वासुदेव श्रीकृष्ण के मुख से सुना होगा- वे अपने भाई के लिए कह रहे हैं-भैया, तुम धन्य हो मैं अधन्य। भोग भोगने की उम्र में घर छोड़ना महान्-

पुण्यवानी है। मैं अधन्य हूँ, धिक्कार है मुझे। मैं आपको सार्थक-सद्प्रयास के लिए बार-बार धन्यवाद देता हूँ। मैं जानता हूँ, मानता हूँ, पर मेरा आयुष्य-बन्ध हो चुका है, इसलिए तीर्थड़कर भगवान की सेवा का सुयोग पाकर भी मैं व्रताराधन नहीं कर सकता।

वासुदेव निदानकृत होने के कारण भी दीक्षा नहीं ले सकते। आप शास्त्र-श्रवण कर रहे हैं, वीतराग वाणी भी सुन रहे हैं, पर संसार के सुख के साधन जिनमें दुःख समाहित हैं, उन्हें छोड़ना नहीं चाहते तो फिर मुक्ति कैसे?

याद रखिये-चारित्र में चरण उन्हीं के बढ़ेंगे, जिनकी दृष्टि बदल गई है। तप की साधना भी वही कर सकता है, जिसकी तन की ममता छूट गई है। तप कौन कर सकता है? जिसकी या तो तन की ममता छूट गई या फिर जो तन की ममता छोड़ने का अभ्यास कर रहा है, वह तपाराधन कर सकता है।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के चरणों में ऐसे-ऐसे तपस्वी देखें हैं, जिनके शरीर की एक-एक हड्डी देखना चाहो तो देखी जा सकती है, चलने-फिरने की शक्ति नहीं वत् है, उन्हें भी पारणे का कहा जावे तो जवाब मिलता है-बाबजी! अभी तो साता है, दो दिन और तपस्या करनी है, करने दो। एक तरफ ऐसी भावना तो दूसरी तरफ मिठाई पर मिठाई खाते हुए भी कुछ और आने दो। एक तरफ पारणा नहीं करने का मन है तो दूसरी तरफ और-और खाने का मन।

आज तप के सन्दर्भ में कुछ कहना है। ताप तन को तपाता है, कषाय मन को तपाता है तो तप कर्मों को तपाता है। शरीर का ताप 99 डिग्री से जब बढ़ता है तो बुखार या टायफाइड का खतरा रहता है। कषाय का ताप बाहर का कोई नुकसान नहीं करता, पर क्रोध, मान, माया और लोभ आने पर आदपी हैरान-परेशान होता ही है। कषाय मन को तपाता है और तप सञ्चित कर्मों को खपाता है-‘भवकोडिसंचियं कम्मं तवसा निज्ज-रिज्जइ।’ तप करोड़ों भवों से सञ्चित कर्मों को खपाता है।

तप के अनेक दृष्टान्त हैं। भगवान् ऋषभदेव से भगवान् महावीर तक जो भी उत्तम पुरुष हुए हैं उनके तप का आगमों में वर्णन है। तप के कई भेद हैं। अनशन तप है तो ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रस-परित्याग भी तप हैं तो ध्यान-कायोत्सर्ग, विनय का भी तप में शुमार है। विनय-सेवा से भी केवलज्ञान प्राप्त हो सकता है।

तप का लक्ष्य क्या है, तो कहा है कि तपस्या से कषाय कम होना चाहिए। तप का सार है—कषाय का कम होना। पढ़े हुए ज्ञान का, ज्ञानी का सार है—कषाय घटाना। ब्रती के जीवन का लक्ष्य समाधि प्राप्त करना है। आपसे जो बने, तप करें। सदगृहस्थ का रोज का काम है—तप करना। दिनचर्या में आप तप को स्थान दें। अनशन कर सकें, वे अनशन करें नहीं तो ऊनोदरी भी तप में सम्मिलित है। वृत्ति-संक्षेप और रस-परित्याग भी तप हैं। भूल-सुधार के लिए प्रायश्चित्त तप है तो विनय भी तप है।

तप कर्म काटने की अचूक रामबाण औषधि है। आप दिन-प्रतिदिन तप करें। आप अपने जीवन का निरीक्षण करें। आप वीतराग वाणी सुन रहे हैं, सत्संग में आते हैं, सुनने-समझने की कोशिश करते हैं तो इतना

जरूर देखें कि आपके जीवन में क्या अन्तर आया? आप इतना तो चिन्तन करें ही आपकी आयु बढ़ रही है तो क्या उसके साथ दोष घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं?

आप सब अपने-अपने जीवन में दोष घटाने का प्रयास करें। दोष घटाने की आवश्यकता है। आप जानते हैं कि अन्त तपाने पर खाने लायक बनता है। दूध तपाया जाएगा तो मावा बनेगा। लोहे को तपाया जाएगा तो वह औजार बनेगा। सोना तपाया जाएगा तो रहा हुआ विकार दूर होगा। कोयला तपाया जाएगा तो कालिमा छूटेगी। आप-हम जितने-जितने तपेंगे उतने-उतने कर्म खपेंगे।

तपना जरूरी है। तपना बाहर का हो तो भीतर का भी। बाहर के त्याग को गौण कर दिया जाएगा तो विकारों का अन्त और मन की एकाग्रता कैसे रह पायेगी?

जरूरत है दृष्टि बदलने की। एक बार सम्यकत्व आ गया तो फिर कितना ही बड़ा संकट क्यों न हो, वह सुलझ सकेगा। सही विश्वास जमने पर दुःख दूर होंगे ही। आप कोई न कोई तप करें तो ही आपका सुनना और हमारा सुनाना सार्थक होगा। जो तपाराधन करेगा, वह एक-एक भव कम करते-करते मुक्त हो सकेगा।

## हम सब आत्माएँ हैं एक समान

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुल्लिजी म.सर.  
तुझमें, मुझमें, सबमें हैं भगवान्,  
हमें हो चुकी अब जीव तत्त्व की पहचान,  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं एक समान....॥1॥  
यहीं रह जायेंगे, ये सब साजो सामान,  
व्यर्थ है अपने को अमर बनाने का अरमान  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं, एक समान....॥2॥  
साथ न आयेंगे, पद प्रतिष्ठा सम्मान  
शान्ति भङ्ग करती है, व्यर्थ की खींचतान,  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं, एक समान....॥3॥

परिजन को भी अपना मत मान,  
भले ही वे हैं, आज्ञाकारी गुणवान  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं, एक समान....॥4॥  
'भेद-भाव' का भाव है अज्ञान,  
समत्व का भाव ही है सम्यज्ञान,  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं, एक समान....॥5॥  
जीवन में अपनायेंगे, भेद-विज्ञान,  
सिद्धालय ही है हमारा शाश्वत स्थान,  
फिर क्यों करें झूठा अभिमान,  
हम सब आत्माएँ हैं, एक समान....॥6॥  
—संकलनकर्ता, श्री धर्मचल्दजी जैन, रजिस्ट्रार-  
जोधपुर (राजस्थान)

## असंख्यं जीवियं मा पमायए

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गैतममुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गैतममुनिजी म.सा. द्वारा प्रतापनगर-जयपुर स्थानक में 15-16 मई, 2021 को कोरोना से हृदय-विदारक मानव क्षति का शोक लेकर आये श्रावक-श्राविकाओं को सान्त्वना, सहानुभूति के शब्दों का मुनिशी द्वारा जो कथन किया गया। उसका व्यवस्थित संकलन श्री हेमन्तजी जैन, मानसरोवर-जयपुर ने किया है।

-अम्पादक

यह जीवन विचित्रताओं के कारण बहुत रहस्यपूर्ण है। इसमें कब, क्या घट जाये यह प्रश्न प्रत्येक मानव मन का है। इसका समाधान प्राप्त करना भी प्रायः असम्भव जैसा ही है। इस रहस्यपूर्ण जीवन की विशेषताएँ भी अगर हमको जाननी हैं तो स्वयं अनुभव करके जान सकते हैं अथवा आगम का सहारा लेना होता है। जीवन को उत्तराध्ययनसूत्र असंस्कृत बता रहा है। जीवन की गगरी गहन कुएँ में एक कच्चे धागे से बन्धी लटकी हुई है। यह जीवन डोर बहुत नाजुक है, कब टूट जाए, कब छूट जाए, अन्दाजा नहीं। यह जीवन ताश के पत्तों के घर की तरह कब बिखर जाये, यह पता नहीं है। यह जीवन शीशों के महल की भाँति एक बार टूट जाने पर पुनः जुड़ पाना असाध्य है। इसलिए इस जीवन को 'असंख्यं जीवियं' असंस्कृत कहा है। असंस्कृत अर्थात् टूटा हुआ है, सान्धा नहीं जा सकता है। जीवन इसलिए असंस्कृत है क्योंकि आयुष्य के क्षण समाप्त होते जा रहे हैं, फटे हुए कपड़े, टूटे-फूटे बर्तन, टूटी डोरी को तो सान्धा जा सकता है। लेकिन इस समाप्त होते जीवन को देवता भी क्या कहूँ भगवान् भी जोड़ने में समर्थ नहीं हैं। इसलिए इस असंस्कृत जीवन का रहस्य अभी तक रहस्य ही रहा हुआ है।

इस जीवन के रहस्य में अस्थिरता भी समायी है। जीवन स्थिर नहीं होकर अस्थिर है। रात्रि के बीत जाने पर वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता झङ्ग जाता है, बस इसी प्रकार यह जीवन भी एक दिन अचानक समाप्त हो जाता

है। आगम में कहा, आपने प्रवचनों में सुना भी होगा—  
कुसगे जह ओस बिन्दुए, थोवं चिदृढ़ लंबमाणए।  
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए॥

-उत्तराध्ययनसूत्र 10/2

कुश के अग्रभाग पर टिकी ओस की बून्द का जीवन कितना है? बस इसी प्रकार यह मानव जीवन भी अल्पकालीन है, अस्थिर है। इस रहस्यमय जीवन में रोग, शोक, प्राण-हानि, शस्त्र, जल, विष, अग्नि आदि अनेक संकटों का निमित्त कब क्या कर जाये, यह अनजाना ही है। इसलिए यह जीवन अस्थिर है।

यह जीवन अशाश्वत भी है। यह जीवन आयुष्य के बन्धे पुद्गलों का परिणाम है। आयुष्य का बल तो इतिहास प्रसिद्ध है ही। साँसों की तारों से बनी चादर के समान आयुष्य कब सिमट जाए यह अज्ञात ही है। इसलिए इसमें शाश्वतता के क्षण खोजना मात्र हम जैसे मानव मन की एक भूल ही है।

उम्र थोड़ी-सी हमको मिली थी मगर।

वो भी घटने लगी देखते-देखते।

श्वास रुकने लगी देखते-देखते।

माटी गलने लगी देखते-देखते।

डोली उठने लगी देखते-देखते।

राख उड़ने लगी देखते-देखते।

पर यह भी जान लो कि 'अक्खरस्स अणंतभागो  
णिच्चुघाडिओ' 'आशा अमर फलदायिनी' 'उम्मीद पर  
दुनिया कायम है' ऐसी उकितयाँ हमें जीवन के असंस्कृत

होने पर भी निराश नहीं होने देतीं, अस्थिर होने पर भी हताश नहीं होने देतीं, अशाश्वत होने पर भी हीनता नहीं आने देतीं। इसी विश्वास आशा, उम्मीद के बल पर हम जीवन सार्थक करके इस रहस्यपूर्ण जीवन का पटाक्षेप कर संस्कृत, स्थिर और शाश्वत बनाने का विश्वास जगा सकते हैं। इसी का नाम जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। जीवन के क्षण-क्षण को सार्थक करके ही जीवन का शिल्पकार बना जाता है। जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त करके ही जयवन्त बना जाता है।

जीवन में घटित होने वाली प्रत्येक घटना गुरु हो सकती है। जीवन का प्रत्येक प्रसङ्ग प्रेरणा प्रदान कर सकता है। जीवन का प्रत्येक वाक्या वैराग्य का निमित्त हो सकता है। बशर्ते उस घटना, प्रसङ्ग और वाक्ये से हम कुछ सीख लेवें, कुछ प्रेरणा पावें। मैंने अनुभव किया है हम घटना को याद रखते हैं, लेकिन उस घटना से जो सीख जीवन में घटित होनी चाहिये, उसे घटित नहीं कर पाते हैं। किसी अन्य का जीवन देखने की जरूरत भी नहीं है, हम स्वयं के जीवन का भी अवलोकन करें तो पायेंगे कि हमारा जीवन भी झकझोर देने वाली अनेक हृदय-विदारक घटनाओं का पुञ्ज है। ये घटनाएँ हमारे जीवन को एक परिवर्तन का मोड़ देवें, ऐसा लक्ष्य रखें।

क्या हम नहीं देख रहे हैं अभी वर्तमान का भयावह कोरोना काल। इस क्रूर काल ने किसी के घर का मुख्य आधार, तो किसी का प्राणाधार, किसी का एकाकी पुत्र तो किसी का घनिष्ठ मित्र, किसी की मात तो किसी का तात, निकटवर्ती रिश्तेदार तो अनेक परिवार के परिवार छीन लिये। जो काल कवलित हुए उनकी अभी उप्र पक्की नहीं थी, जीवन जीने की आस थमी नहीं थी, पर यह कोरोना काल अकाल में ही उन्हें ले गया। किसी के दूध के दाँत ही अभी नहीं टूटे थे, जिनकी उप्र ऐसी कि माता-पिता की छत्रछाया में खेले-कूदे, घर-आँगन में उनकी किलकारियाँ-ठिठोलियाँ गूँजती थी। वे बच्चे

अब अनाथ से हैं, स्तब्ध हैं, खिल-खिलाना तो दूर मुस्कुराना भी भूल गये हैं। किसी की परिवार में बच्ची आखिरी उम्मीद दादी छीन गयी। बस बरबस फफक रहे हैं बच्चे अनेक घरों में। ये घटनाएँ वज्रपात जैसी हैं रोम-रोम कंपकंपा देने वाली हैं। पर इस प्रतिकूल काल में भी हमें जीजिविषा का परिचय देकर इन घटनाओं से प्रेरणा लेनी है। ये घटनाएँ हमें प्रेरित करती हैं कि जो बच्चे अनाथ हो गये हैं, उनका भविष्य कैसे संवरे, वे कैसे सम्भलें, इसका ध्यान रखें। उनके प्रति मंगल भावना तो रखें, साथ ही मानवीय कर्तव्यों का निर्वहन करने का लक्ष्य भी रखें। यहाँ एक बात यह भी कहना चाहूँगा कि ‘किसी की सेवा और सहयोग नहीं करने से भले ही कोई दण्ड नहीं मिले, मगर मानव का सामाजिक मूल्य जरूर खत्म हो जाता है।’ बस यह कोरोना काल हमें जीवन की सत्यता का, जीव की नित्यता का, पदार्थों की क्षणभंगुरता का और शरीर की नश्वरता का बोध प्राप्त करा दे, ऐसी भावना रखें।

मुख्य रूप से मैं बात यह कहना चाहता हूँ कि यह सार्वभौमिक, सार्वकालिक सत्य है कि जिसका संयोग हुआ है उसका वियोग निश्चित है। जन्म और मृत्यु एकान्तरित है अर्थात् जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म होता है। जन्म शब्द में आदि का अक्षर ‘ज’ यदि जन्म का परिचायक है तो अन्तिम अक्षर ‘म’ मृत्यु का सूचक है। यह बात भी तो प्रसिद्ध है कि मृत्यु चक्षु विहीन होती है, वह यह नहीं देखती कि यह शिशु है या युवा है। मृत्यु यह भी नहीं देखती कि यह पालक है या भिक्षुक है। इकलौता है या चहेता है। ज्ञानवान है या शक्ति सम्पन्न, वैभवशाली है या आपना। बस यह तो आ जाती है, न गाती है, न गुनगुनाती है, चुपके से आती है और ले जाती है। इसलिए मृत्यु को हृदयहीन निष्ठुर कहा है। दया से इसका दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है।

इस मृत्यु का विधान प्रत्येक जीव पर लागू होता है। क्योंकि शाश्वत सत्य है कि अमर बनकर कोई नहीं आया।

संयोग-वियोग, जन्म-मृत्यु का युगल जोड़ा सदाकाल शाश्वत है। भले ही मृत्यु को निर्दय, निष्ठुर कहो, पर यह एक स्थायी सीख देती है, परिवर्तन की प्रेरणा देती है। मृत्यु उद्बोधित कर कहती है—हे मानव! इस मतलबी दुनिया में क्यों इतना नेह पालता है? क्यों झूठे अहंकार में झूमता है? क्यूँ किसी से आसक्ति की रति करता है? क्या एक दिन सारे तेरे सपने, अरमान धरे के धरे नहीं रह जायेंगे? जब जाने वाली श्वास, पुनः लौटकर आयेगी, इसका भी भरोसा नहीं है, फिर क्यों मुरादों में मुझांता है, अरमानों को पालता है? यह निश्चित जान ले कि यहाँ कुछ भी शाश्वत और स्थिर नहीं है।

यह सत्य उत्तराध्ययनसूत्र के 14वें अध्ययन का स्वाध्याय करके भलीभाँति जान भी सकते हो। वो कमलावती महारानी राजपथ से गुजरते धन से भरे गाड़ों को देखकर विस्मयपूर्वक महाराजा इषुकार से पूछती है—“हे नृपतिवर! यह सारा धन कहाँ जा रहा है और इसका स्वामी कौन है?” महारानी के प्रश्न का उत्तर देते हुए इषुकार राजा कहते हैं—“पुरोहित भृगु सपरिवार दीक्षित हो रहा है। परिवार सहित दीक्षित होने के कारण उनका सारा धन राजकोष में जमा होने जा रहा है।” तब महारानी कमलावती ने महाराजा इषुकार को सिंह गर्जना से कहा—

वंतासी पुरिसो रायं! ण सो होइ पसंसिओ।  
माहणेण परिच्चन्तं, धणं आदाउमिच्छसि॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 14/35

राजन्! भृगु पुरोहित के द्वारा परित्यक्त धन को तुम ग्रहण करना चाहते हो, किन्तु यह जान लो संसार में वमन किये हुए पदार्थ को खाने वाला प्रशंसनीय नहीं होता है। और जब—

मरिहिसि रायं! जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय।  
एक्कोहुधम्मोनरदेव! ताणं, ण विज्जइअण्णमिहेहकिंचि॥

—उत्तराध्ययनसूत्र 14/40

इन मनोज्ञ कामभोगों को छोड़कर मरोगे तब एकमात्र धर्म ही त्राणदायक होगा। इस संसार में मृत्यु

आने पर धर्म के अतिरिक्त कोई भी रक्षक नहीं है। धन, वैभव, भोग आदि सभी अनित्य एवं क्षणिक हैं, यह जीवन भी क्षणभंगुर है। अतः जब एक दिन अवश्य मरना है तो इन भोगों के प्रयोजन का अवकाश ही कहाँ रहता है। इस अमूल्य जीवन को मूल्यहीन मत करो, शाश्वत धर्म को अपनाकर शाश्वत जीवन की नींव रखो।’

अब तो समझ ही गये होंगे कि इस बाह्य चकाचौंध का क्या अस्तित्व है? परन्तु फिर भी देखते ही हैं कि लघु जीवन में व्यक्ति अज्ञानवश पर को स्व, अनित्य को नित्य, अशुद्ध को शुद्ध, छूटने वाली को स्थायी मानकर उस पर अहं और आसक्ति, मैं और मेरा का कृत्रिम विश्वास बनाता है। मोह का घटाटोप उसे स्मरण नहीं होने देता कि एक दिन यह सब बिखरने वाला है, छूटने वाला है। यदि किसी निमित्त से सच्चाई को जान भी लें तो भी बाहरी भेड़चाल के कारण अनदेखी कर अहंता और ममता को ही बढ़ावा देता रहता है। बस यही अज्ञानदशा और मूढ़तृष्णि व्यक्ति के पतन का कारण बनती है। फलस्वरूप जीव पुनः पुनः दुर्गति, ठोकरों पर ठोकरें खाकर आर्त-रौद्र का शिकार हो जाता है। क्योंकि जितना मोह उतनी मौत होती है, जितना पाप उतना दुःख होता है और जितनी हिंसा उतनी ही असाता होती है।

परन्तु यह भी सच है कि प्रत्येक व्यक्ति संसार-घर-परिवार का त्याग कर संयमी तो बन नहीं सकता, तो फिर घर में रहकर अनासक्त रहना निरहंकरी बनना कैसे शक्य है? परन्तु यह उलझन कोई विशेष मोल नहीं रखती है क्योंकि ज्ञानियों ने घर-गृहस्थी का सञ्चालन करते हुए भी जीवन जीने की श्रेष्ठ कला का निरूपण किया है। कैसे गृहस्थ में रहकर निर्मम, निसंग, निर्लिप्त, निस्पृह रहें, इसका सुन्दर समाधान सूचित किया है कि पहली बात तो यह है कि आगम और अनगार के समीप रहें दूसरी बात यह है कि अनित्य आदि 12 भावनाओं से भावित बनें तब ‘अनेक मांहि एक विराजे’ एकत्व भाव

की कला का सञ्चार होगा। यह भी बता देता हूँ ये एकत्व भाव में रहने की कला दुसाध्य तो है, पर असाध्य नहीं है। अभ्यास की नियमितता और निरन्तरता से यह कला हमारे व्यावहारिक जीवन का अंग बन सकती है। जिम्मेदारियों का गुरुतर निर्वहन करते हुए भी जीवन में परिलक्षित हो सकती है। फिल्म अथवा नाटक में अभिनय करने वाला अपने निभाने वाले किरदार को जीवन्त निभा ही देता है। मगर अभिनयकर्ता चोर, पुलिस आदि का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हुए भी स्वयं यह जानता है कि मेरा वास्तविक स्वरूप यह नहीं है। यह तो किरदार की माँग है जिसे मुझे निभाना है।

इसी प्रकार बैंक केशियर जिसके पास प्रतिदिन लाखों रुपयों का लेन-देन होता है। परन्तु वह भी तर में जानता है कि आने वाले रुपये भी मेरे नहीं हैं तो जाने वाले रुपये भी मेरे नहीं हैं और इसी कारण वह रुपयों के लेन-देन पर हर्ष-शोक से दूर रहता है।

इसी प्रकार गृहस्थ अवस्था में सुखद और दुःखद जो भी स्थिति समक्ष आवे उसे स्वीकार करें। हर्ष और विषाद में पड़कर कमजोर ना पड़ें, सहज रहने का प्रयास करें। ‘प्राप्ति प्रयास साध्य है’ फिर देखो कोई भी परिस्थिति न तो प्रभावित करेगी और न ही पराजित करेगी। जब तक व्यक्ति पदार्थों में अनुरक्त और व्यक्तियों में प्रतिबद्ध बना रहता है, तब तक ही वह आकर्षणों में क्षुब्ध होता है और एकत्व को और आनन्द को प्राप्त नहीं कर पाता है। इसलिए सहजता का स्वीकार ही भीतरी आनन्द का अहसास करायेगा। अतः जितनी सहजता उतना सुख प्राप्त होता रहेगा।

यह सहजवृत्ति, एकत्व भावना कण-कण में ऐसी समाये कि घर में भी जल कपलबत् निर्लिप्त रहा जा सके। जब हम दृढ़ निश्चय पूर्वक सहज एकत्व को जीवन्त जीयेंगे तो दुर्घटना का प्रभाव हम पर घटित नहीं होगा। साथ ही न अहंता का और न ही ममता का पाप

होगा तथा न ही इनके दुष्परिणामों से पाला पड़ेगा। मैं तो यही कहता हूँ कि यह एकत्व भाव अनेक समस्याओं का समाधान है। क्या गुरु हस्ती ने हमसे नहीं कहा-

ममता से सन्ताप उठाया, आज हुआ विश्वास।

भेद-ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया भव पाश॥

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आस॥

मानता हूँ उपदेश देना, सुझाव देना बहुत सरल है। मगर जब जीवन में अप्रत्याशित घटना का आदान होता है तो अच्छे-अच्छे साधकों का चित्त-चलायमान हो जाता है। ऐसी घटना-प्रतिघटना हो सकती है जो विचलित कर सकती है। पर आखिर तय तो हमको ही करना होगा, निश्चय तो हमको ही करना होगा कि नरभव और सर्व अनुकूलताओं की लब्धि के साथ जिनवाणी का इतना सुन्दर मार्गदर्शन एवं श्रेष्ठ गुरु का समागम प्राप्त होते हुए भी हम दृढ़ नहीं बनेंगे क्या? जरूर बनेंगे, बनके रहेंगे।

तो बस यही कहता हूँ कि इस अवसर को चूकना नहीं, भुनाना है और अपने आपको एकत्व भाव से भावित कर संकल्पित होना है। निश्चित ही समाधान प्राप्त होगा, मन को सुकून भी मिलेगा, जन्म और जीवन भी सफल बनेगा और सुखद भविष्य होगा। सबसे बड़ी उपलब्धि जन्म-मरण से मुक्त होने का लक्ष्य सधेगा और जन्म के साथ उत्पन्न होने वाली समस्याओं का सामना होने से भी छुटकारा मिलेगा। क्योंकि जब-जब जीव का जन्म होता है तब-तब इन सारी परिस्थितियों का प्रकारान्तर से सामना करना पड़ता है, लेकिन हमारा उद्देश्य है मौलिक आत्मगुणों को प्राप्त करना। वहाँ जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं। एक दिन जन्म-मरण के अनादिकालीन चक्र से मुक्त होने का कठिन कार्य अवश्य सफल होगा।



## जीव पर कर्म का प्रभाव

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुलिजी म.सा.

आचार्यप्रबर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुलिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक व्याख्यान फरमाए गए थे। उनमें से एक इस आलेख का आशुलेखन श्री नौरतनमलजी मेहता, सह सम्पादक, जिनवाणी द्वारा किया गया है।  
-सम्पादक

### बन्धुओं!

नवपद आयम्बिल आराधना का प्रारम्भ हो रहा है। परमेष्ठी की साधना, आयम्बिल की आराधना। परमेष्ठी शब्द सही है या परमेष्ठी! (श्रोताओं में दोनों तरह के प्रत्युत्तर-परम इष्ट हैं इसलिए परमेष्ठी...) दोनों पक्ष के श्रोता हैं परमेष्ठी या परमेष्ठी, पर परमेष्ठी का अर्थ...कोई नहीं बता पा रहे- “परमे भावे-मोक्षे संयमे वा तिष्ठति इति परमेष्ठी।” ज्ञानियों ने कहा परम भाव दो ही हैं-मोक्ष अथवा संयम। मोक्ष में अवस्थित हैं अनन्त-अनन्त सिद्ध और संयम के गुणस्थान 6 से 14 तक में शेष चारों परमेष्ठी। मोहनीय कर्म की 13 सर्वधाति प्रकृतियाँ हैं जिनमें मिथ्यात्व मोह और 3 कषाय चौक का समावेश होता है। बन्ध की अपेक्षा ये 13 तथा उदय की अपेक्षा 1 मिश्र मोहनीय और मिल जायेगी। जिनके मोहनीय की सर्वधाति प्रकृतियों का न तो हो रहा है बंध और न ही हो रहा है उदय। प्रबल मोहोदय से जिनका छुटकारा हो गया वे ही हैं परमेष्ठी।

मोह विजय के लिये इन्हें नमस्कार किया जाता है। नमस्कार पुण्य है, आगे बढ़ने पर नमस्कार संवर है, नमस्कार तप है। गुरुदेव फरमाते थे-

इक्को वि णमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्वमाणस्स  
संसार-सागराओ तारेइ, नरं वा नारिं वा॥।

जिनवर को किया गया एक नमस्कार भी संसार सागर से तरा सकता है, पार ले जा सकता है। वहाँ तक पहुँचने के लिए उस उत्कृष्ट रसायन वाले नवकार के लिए सबसे प्रथम उपकारी तत्त्व है पुण्य। चर्चा उसी की

करनी है, किन्तु पूर्व के प्रसङ्ग को थोड़ा और पुष्ट कर लें।

‘हूँ परमात्मा हूँ, वर्तमाने परिपूर्ण हूँ’ - यह कथन किस नय से किया गया? क्या हम ऐसा बोल सकते हैं? सत्ता की अपेक्षा ‘अप्पा सो परमप्पा’ भले ही कह दिया, पर बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा से तीन भेद किये गये। सिद्ध के स्वरूप को समझकर अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त करना है। अभी आज की दशा में हम यदि परिपूर्ण हैं, तो फिर साधना आराधना का प्रश्न ही कहाँ? फिर परमेष्ठी में केवल शुद्ध आत्मा को ही नमस्कार होता या फिर उस नमस्कार का भी अवसर नहीं है, क्योंकि सभी जीव शुद्ध जो ठहरे।

आचाराङ्ग 2.15.766 में ‘सिद्धाण्ड णमोक्कारं करेइ’-दीक्षा लेने के पूर्व भगवान भी सिद्धों को नमस्कार करते हैं।

अरिहंत परमेष्ठी मूर्त हैं और अभी पूरी तरह शुद्ध जीव नहीं हैं-अरिहंत परमेष्ठी क्यों अशुद्ध हैं? विद्यावाणी से कहें तो-इसलिए कि अभी वे कृतकृत्य नहीं हुए हैं। अभी चार कर्म शेष हैं। जो शुद्ध होता है वह कृतकृत्य होता है, वह आराधक नहीं होता है, वह अपने आपमें स्वयं आराध्य भी होता है। सिद्ध परमेष्ठी पूर्णतः आराध्य हैं, आराधक नहीं। अहन्त परमेष्ठी अभी आराधक भी हैं और आराध्य भी हैं। इतना अवश्य है कि वे हमारे जैसे आराधक नहीं हैं। उनका वह जीवत्व का परिणमन अब शुद्धत्व के निकट पहुँच चुका है। अभी वे वास्तविक जीवत्व की प्राप्ति नहीं कर पाये हैं।

कुन्दकुन्द आचार्य महाराज ने एक स्थान पर जीव का स्वरूप बताया है और एक स्थान पर जीव का लक्षण बताया है। स्वरूप और लक्षण में बहुत अन्तर है।

अरसमरुवमगंधं, अब्वत्तं चेदणागुणमसदं।

जाण अलिंगग्रहणं, जीवमणिद्विसंठाणं॥

यह जीव का स्वरूप है। जिसमें जीव को रस, रूप, गन्ध आदि से रहित बताया है। उसे अव्यक्त एवं चेतनागुण से युक्त तथा शब्द रहित कहा है। “उपयोगो लक्षणम्” यह जीव का लक्षण है। इस प्रकार जीव के लक्षण और जीव के स्वरूप में बहुत अन्तर है। जीव का स्वरूप तो अमूर्त है, लेकिन जीव का लक्षण अमूर्त नहीं हो सकता। जीव का लक्षण यदि अमूर्त हो जाएगा तो अमूर्त तो अन्य द्रव्य भी हैं, धर्मास्तिकाय अमूर्त है, अधर्मास्तिकाय भी है, आकाश और काल भी है। अरस, अरूप, अगन्ध आदि यह जीव का लक्षण नहीं है, यह तो जीव का स्वरूप है।

आचार्य कहते हैं कि स्वभाव को प्राप्त करना है, वह प्राप्तव्य है। लक्षण तो प्राप्त ही है। जिस स्वभाव को प्राप्त करना है, जिसका भान हमें कराया गया है वह स्वभाव मात्र सिद्धालय में प्राप्त होगा। वह अभी अर्हन्त परमेष्ठी को भी प्राप्त नहीं है। अर्हन्त परमेष्ठी के पास उनको प्राप्त करने की क्षमता है, शक्ति है, लेकिन उस शक्ति के उद्घाटन के लिए प्रयास परम आवश्यक है। जिसे वे कर रहे हैं दिन रात।

अर्हन्त भगवान को अभी कुछ और प्राप्त करना है और वह है शुद्ध जीवत्व की प्राप्ति। अभी हमारी इन्द्रियों की पकड़ में आ रहे हैं अर्हन्त परमेष्ठी। उनकी भावना है कि सभी की पकड़ से बाहर निकल जाएँ। इसके लिए वे अभी योग-निरोध करेंगे। शुक्ल-ध्यान के अन्तिम दो चरणों के माध्यम से शेष कर्मों का क्षय करेंगे। इसीलिए नमोत्थुण में ‘संपत्ताण’ और ‘संपावित्कामाण’ से सिद्ध और अरिहंत का अन्तर बोलते हैं।

द्रव्य जहाँ शुद्ध है वहाँ सारी की सारी द्रव्य की

पर्यायें भी शुद्ध हैं, गुण भी शुद्ध हैं। जहाँ एक भी अशुद्ध है वहाँ सारा का सारा अशुद्ध है। कारण कार्य का विचार करें तो पर्याय किसी न किसी का कार्य होना चाहिए और इस पर्याय रूप कार्य का उपादान भी परमावश्यक है। वह उपादान कौन है? और वह शुद्ध है या अशुद्ध? इसका विचार किया जाए तो मालूम पड़ेगा कि पर्याय जिस द्रव्य में से निकली है यह द्रव्य भी अशुद्ध है। आचार्यों ने जहाँ कहीं भी कहा कि द्रव्य शुद्ध है वहाँ शुद्ध रूप परिणमन करने की शक्ति है, इस अपेक्षा से कहा है।

एक बार जब उस स्वाभाविक शक्ति का उद्घाटन हो जाएगा तो पुनः वैभाविक पर्याय शक्ति की अभिव्यक्ति नहीं होगी।

जीव तत्त्व शुद्ध रूप में संसार दशा में प्राप्त नहीं हो सकता। शुद्ध जीव तत्त्व चाहिए तो वह सिद्धों में है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इसकी प्राप्ति के कारण हैं। ये सुख के कारण हैं। मुक्ति के कारण हैं। स्वयं सुख रूप नहीं हैं, इसलिए इन्हें मार्ग कहा गया है। मार्ग में पूरा सुख नहीं मिलता, सच्चा सुख तो मञ्जिल में ही है, मोक्ष में है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र सुख के कारण हैं, इनसे ही सिद्धत्व रूप कार्य होता है। ये सुख के कारण हैं और सिद्धत्व सुख रूप अवस्था है। अरिहंत अवस्था भी चार कर्मों से युक्त है। वह भी पूर्ण शुद्ध नहीं है।

इस प्रकार बहुत कुछ जीव तत्त्व के बारे में कहा गया है। जीव तत्त्व के बारे में इतना अवश्य समझना चाहिए कि वर्तमान संसारी दशा में जीव अशुद्ध है, द्रव्य की अपेक्षा भी अशुद्ध है और पर्याय की अपेक्षा से भी अशुद्ध है। इतना अवश्य है कि जीव में शुद्धत्व की शक्ति विद्यमान है। पर्याय जब शुद्ध होगी तब शुद्ध जीव तत्त्व की प्राप्ति नियम से होगी और वह शुद्ध तत्त्व की अनुभूति फिर अनन्त काल तक रहेगी। उसमें कोई क्रिया सम्भव नहीं है, वह एक सहज प्रक्रिया होगी। इसे समझकर हमें सिद्ध पर्याय को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

रत्नत्रय को अङ्गीकार करके मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होना चाहिए। यहीं जीव तत्त्व को समझने की सार्थकता है।

जीव तत्त्व से विपरीत अजीव तत्त्व है। वह ज्ञान दर्शन से शून्य है। आगम में उसके पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल—ये पाँच भेद कहे गये हैं। इनमें धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन चार के द्वारा जीव में कोई विकृति नहीं आती, परन्तु कर्म रूप परिणत पुद्गल द्रव्य की उदयावस्था का निमित्त पाकर जीव में रागादि विकार प्रकट होते हैं।

यद्यपि इन रागादि विकारों का भी उपादान कारण आत्मा है तथापि मोहनीय कर्म की उदयावस्था के साथ अन्वय-व्यतिरेक होने से वह इनका निमित्त कारण होता है। रागादि विकारी भावों का निमित्त पाकर कार्मण वर्गणा रूप पुद्गल में कर्मरूप परिणति होती है। इसी के फलस्वरूप जीव की संसार वृद्धि होती रहती है। कर्म से शरीर रखना होती है, शरीर में इन्द्रियों का निर्माण होता है। इन्द्रियों से स्पर्शादि विषयों का ग्रहण होता है। इससे नवीन कर्मबन्ध होता है। इस तरह कर्म, नोकर्म और भावकर्म रूप अजीव का, जीव के साथ अनादि काल से सम्बन्ध चला आ रहा है। जब तक इसका लेशमात्र भी सम्बन्ध रहेगा तब तक मुक्तावस्था की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए इस अजीव तत्त्व को समझकर इसे पृथक् करने का सम्यक् प्रयत्न करना चाहिए। श्वेताम्बर मत के आचार्य भी इसकी पुष्टि करते हैं।

#### जीव की उलझन

शरीरधारी जीव की क्रिया दो प्रकार की होती है—बाहरी क्रिया और भीतरी क्रिया। मन, वचन और काया की क्रियाएँ बाहरी और जानने और देखने रूप आत्मा का व्यापार भीतरी क्रिया है। इन क्रियाओं को शास्त्रीय परिभाषा में क्रमशः ‘योग’ और ‘उपयोग’ कहा जाता है। योग के द्वारा जीव कर्म से स्पृष्ट होता है और यदि उस समय उपयोग बहिर्मुख होकर विकारों में बह जाता है तो जीव कर्मों का, दुःख के हेतुओं का अर्जन करता आया है।

उपयोग का बहिर्मुख होकर विकारों में बह जाना समत्व विहीन दशा है। जीव का अपने आप में उलझना है। जीव की यह भीतरी उलझन योगों को भी उलझा देती है। उनसे जुड़कर उन्हें स-पाप बना देती है। विकृत चेतना को अशुद्ध उपयोग और विकृत चेतना से प्रेरित योग, पापमयी मानसिक, वाचिक और कायिक क्रिया को ‘सावद्य योग’ कहते हैं। इस प्रकार ये द्विविध उलझने एक रूप ही भासित होती हैं।

#### उलझन का क्रम

बाहरी क्रिया की उलझन में भीतरी क्रिया और भीतरी क्रिया की उलझन में बाहरी क्रिया निमित्त बनती रहती है। बाहरी क्रिया की स्वच्छन्दता से उपयोग का बहिर्गमन होता है। उपयोग के बहिर्गमन में लापरवाही के कारण विकार उत्पन्न होते हैं, जिससे उपयोग में फिसलन पैदा होकर मन, वचन और काया की अशुभ क्रिया में जीव की प्रवृत्ति होती है।

विकार को ‘कषाय’ और ‘नोकषाय’ कहते हैं। असावधानी ‘प्रमाद’ है और उपयोग की अशुभयोग से अनिवृत्ति ‘अविरति’ है। इस प्रकार अशुद्ध उपयोग के 3 स्तर हुए, यथा— 1. उपयोग में पर पदार्थ का आस्वादन या बहिर्गमन 2. उपयोग के बहिर्गमन की ओर लापरवाही और 3. अशुभयोग से नहीं हटाना।

#### सुलझने का क्रम

जैसे कि धारे का उलझना उसकी स्वाभाविक दशा नहीं है। धारे की उलझन अपने आप में है, पर उसकी उलझन का निमित्त अन्य पदार्थ होता है। इसी प्रकार जीव की उलझन, उपयोग की अशुद्धि अपने आप में है, परन्तु पुद्गल के पर्याय कर्म और योग उसमें निमित्त हैं। अतः जड़ कर्म आदि पर पदार्थ हैं और उनके निमित्त से उत्पन्न वैकारिता पर-भाव है अर्थात् उपयोग जीव का निजगुण है। उपयोग की मलिनता पर-भाव है, विभाव है और योग जड़ है, पुद्गल की विभाव दशा है, जिसके द्वारा जीव की शुभाशुभ क्रिया व्यक्त होती है।

वस्त्र का मैलापन न वस्त्र से भिन्न है, न अभिन्न। यदि वस्त्र से मैलापन एकान्त रूप से भिन्न हो, तो वस्त्र की स्वच्छता तिरोहित नहीं हो सकती और एकान्त रूप से अभिन्न हो, तो वह वस्त्र से छूट नहीं सकता। इसी प्रकार उपयोग (=जीव) से विकार और योग को एकान्त रूप से भिन्न मान लेना मिथ्या है और अभिन्न (=जीव का स्वभाव) मान लेना भी मिथ्या है। अतः विकार और स्पन्दन (=आत्मप्रदेशों का कम्पन) जीव के ही हैं, किन्तु वे जीव सम्बद्ध परद्रव्य (=पुद्गल) के निमित्त से हैं। पुद्गल-द्रव्य और जीव-द्रव्य का स्वभाव बिल्कुल भिन्न है, परन्तु जीव के निमित्त से पुद्गल के भिन्नाभिन्न रूप हैं। ऐसे ही विकार और स्पन्दन भी जीव से भिन्नाभिन्न हैं। इस प्रकार की प्रतीति से जीव की उलझन अस्वाभाविक लगती है।

धागे की उलझन को धागे की उलझन और अस्वाभाविक मानने पर तथा उलझन के बाह्य कारण को पर मानने पर ही धागे को सुलझाने की प्रवृत्ति हो सकती है। इसी प्रकार उपयोग की मलिनता और योग को परभाव मानने पर ही उपयोग शुद्धि के लिए प्रवृत्ति हो सकती है। धागे को सुलझाने के लिए, धागे को उलझन के बाह्य निमित्तों से अलग करना पड़ता है और सुलझाने में अंगुलियाँ आदि अनुकूल निमित्तों की मदद लेना पड़ती है। वैसे ही जीव की उलझन को सुलझाने के लिए उपयोग को 'सावद्य योग' से हटाना पड़ता है और निरवद्य योग (=मन, वचन, काया की निष्पाप-क्रिया) का सेवन करना पड़ता है।

स्व और पर की स्वाभाविक-वैभाविक दशा की यथार्थ श्रद्धा 'सम्यक्त्व सामायिक' है। स्व-पर का वास्तविक ज्ञान 'श्रुत सामायिक' है और परभाव से स्वभाव में लौटने की क्रिया 'चारित्र सामायिक' है। सावद्य से विरति के बिना 'चारित्र सामायिक' सम्भव नहीं है। अतः सावद्य-योग-विरति को ही सामायिक कहते हैं। 'सावद्य-योग-विरति' रूप सामायिक के दो

प्रभेद हो जाते हैं। सावद्य योग (=ग्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह) का सर्वथा (=त्रिकरण-त्रियोग से) प्रत्याख्यान 'सर्वविरति अर्थात् अनगार-सामायिक' है और सावद्य-योग के अल्पाधिक प्रत्याख्यान (= 5 अणुब्रत, 3 गुणब्रत, 4 शिक्षाब्रत और 11 प्रतिमा) देशविरति अर्थात् सागर सामायिक है।

जीव का अजीव से सम्बन्ध कब से हुआ, इसका कथन सम्भव नहीं, ज्ञानी अनादि शब्द से फरमाते हैं अर्थात् उसके सम्बन्ध की आदि तो नहीं है, पर अन्त सम्भव है। बन्ध क्या है? किस तरह से बन्ध समाप्त हो सकता है? सूत्रकृताङ्गसूत्र में बन्ध का कथन कर गाथा 2 से जिन-जिन तथ्यों का उल्लेख हुआ उनका आज की भाषा में कथन करें तो मनी पावर, मसल पावर, माफिया पावर, मीडिया पावर-परिग्रह, हिंसा, माया और विपरीत मान्यता।

क्रम पर ध्यान देना अनिवार्य है। भगवान ने 3 संग्रह फरमाये-1. कर्म 2. शरीर 3. उपकरण (बाहरी सामग्री) इनमें सर्वप्रथम संग्रह कर्म का है। उसके उदय के परिणाम से स्थूल शरीर (औदारिक या वैक्रिय) प्राप्त होता है, आनुषंगिक फल के रूप में सामग्री मिलती है। तीनों ही अजीव हैं। प्रथम संग्रह कर्म का कहा, जो अनादिकाल से चल रहा है क्योंकि जीव ने संग्रह को ही अपना अस्तित्व मान लिया, इसलिये संग्रह के तुरन्त पश्चात् परिग्रह कहा। अजीव को अजीव रूप में देखें, उससे सुख की कामना नहीं करें, उसकी प्रवृत्ति में संवेगात्मक सम्बन्ध हर्ष और विषाद का, राग और द्रेष का सम्बन्ध नहीं जोड़ें तो संग्रह परिग्रह नहीं बने। परिग्रह जहाँ भी है वहाँ आरम्भ है अर्थात् हिंसा है। परिग्रह और हिंसा की बदौलत जीव गलत धारणा बना लेता है। आत्मा के अस्तित्व को नकार देता है, गलत रूप जमा लेता है। एकान्त क्षणिक, एकान्त नित्य, एकान्त बद्ध, एकान्त मुक्त आदि-आदि मिथ्या मान्यताओं से जीव पुनः-पुनः दुःख पाता है। कोई जीव को पञ्चमहाभूत

मानते हैं, कोई शरीर जीव को एक ही मानते हैं, तो कोई शरीर के (माया के) अस्तित्व को नकारते हैं, कोई पुद्रल से अचूता मान बैठते हैं। गलत धारणा विपरीत प्ररूपणा करके वे उग्र तपश्चरण करके भी इष्ट को प्राप्त नहीं कर पाते।

मासक्षण का तप, पारणे में सुई के अग्रभाग जितना आहार पुनः मासक्षण तप, पर प्ररूपण सही नहीं, प्रवृत्ति सही नहीं, परिणाम सही नहीं— इसलिये बाहर का तप प्रभाव नहीं दे सका। सम्यक् समझ पूर्वक की गई एक नवकारसी के बराबर भी फल नहीं। सम्यक् समझ यह है कि बन्ध का कारण पाप है, पापास्त्रव है। पाप रहित पुण्य; अशुभ योग मुक्त शुभ योग— केवल ज्ञान प्रकटाता है।

अजीव को एकान्त अलग मान लिया, कर्म से कर्म बँधता है, जीव अलग रहता है, सिद्ध की अवस्था आज स्वीकार कर ली, केवल पर्याय में ही अशुद्धि आती है, द्रव्य शुद्ध ही रहता है, पुण्य भी संसार बढ़ाता है—इन विपरीत प्ररूपणाओं से जीव अजीव से मुक्त हो नहीं सकता। दशवैकालिकसूत्र 4/14, 15 आदि गाथाओं में जीव अजीव की जानकारी के पश्चात् पुण्य, पाप, आस्त्रव, संवर की जानकारी की बात आई। इसलिये भूमिका में जीव के स्वरूप को जानने का प्रयास हुआ।

अनन्त बार संयम लिया, क्या हुआ? अनन्त बार सामायिक कर ली, क्या हुआ? अनन्त बार द्रव्य क्रिया पालकर नव ग्रैवेयक में जा चुके, क्या हुआ? ऐसे प्रश्न

उठाने वालों से विनप्र पृच्छा है कि इन सब प्रश्नों को उन्होंने किस ज्ञान से जाना? वे जिन ग्रन्थों के स्वाध्याय से यह बात कह रहे हैं, क्या उनके ग्रन्थ में ऐसा भी उल्लेख है कि नव ग्रैवेयक में कौन जाता है? देव के ये भेद किस आधार से किये गये? और उन्हें देना ही होगा भगवती या प्रज्ञापना, आगम या कर्म सिद्धान्त के प्रामाणिक ग्रन्थ। तो भइया जिस आधार से वे इन क्रियाओं की उत्थापना कर रहे हैं, उनसे तो यह भी सिद्ध होता है कि द्रव्य चारित्र से देवलोक में गए जीवों को पूर्वों का भी ज्ञान (श्रुत अज्ञान) था। क्या उनकी आज की चर्चा पूर्वों की चर्चा से भी ऊँची है? क्या सम्यक्त्व प्राप्ति की प्रक्रिया, समकित के लक्षण स्पष्ट वर्णित नहीं हैं? श्रीमद् जी की आत्मसिद्धि से कहें तो

कषायनी उपशान्तता मात्र मोक्ष अभिलाष

भव खेद अन्तर दया, त्यां आत्मार्थ निवास।

शम, संवेग आदि ये लक्षण तो आगमकारों ने बताए ही हैं। संवेग अर्थात् मोक्ष की अभिलाषा, मोक्ष होगा किसका? जो कथंचिद् बँधा हुआ है, कथंचिद् मुक्त है। सिद्धों की जाति का तो है, पर वर्तमान में सिद्धों की भाँति का नहीं है। कर्म के प्रभाव से प्रभावित होकर ही जीव भटकता है। कषाय की उपशान्तता कब होगी? कैसे होगी? समय के साथ चिन्तन करेंगे।

मैं कुछ नहीं, मेरा नहीं, मेरे लिए कुछ भी तो नहीं कुछ भी मुझे चाहिए नहीं, संयोग मुक्ति करनी यहीं निर्मम निसंग अहंकार भंग, समता आराधन शुद्ध यहाँ॥।

### हार्दिक श्रद्धाङ्गलि

**कोरोना की द्वितीय लहर में काल कवलित हुए विश्व के सभी लोगों के प्रति हार्दिक श्रद्धाङ्गलि। यह महामारी मनुष्य को संसार के प्रति आसक्ति के साथ अपने आन्तरिक विकारों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा करती है।**

## वाह रे वाह कोरोना

श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रबर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. के द्वारा वाचन की गई इस कविता  
का संकलन श्री गिराजजी जैन ने पीपाइसिटी में किया।

-सम्पादक

वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे।  
 कहाँ से तू चल के आया, कोई भी न समझ पाया रे।  
 वाह रे वाह कोरोना तूने, अपना डंका बजाया रे।  
 कुछ पहले तू लैब में बन्द था, वैज्ञानिक तुझे डराते थे,  
 कहते चुपचाप बैठ जा अन्दर, तुझे नाश करने का डर बताते थे।  
 न जाने कहाँ से तूने हिम्मत पाई, सब लैब तूने करवा दिये बन्द,  
 सीना तान तू बाहर आया, सबको खूब डराया रे,  
 वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले बाप-बेटा, आपस में नहीं मिल पाते थे।  
 रहते सोते एक ही छत के नीचे, पर आपस में बात नहीं कर पाते थे।  
 फुसर्त नहीं अपने कामों से, सब अपनी मर्जी से जीते थे।  
 तूने अपना रंग दिखाया, सब काम बन्द करवाया, सबको घर में मिलाया रे।

वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले घर का शुद्ध खाना छोड़, स्टार होटलों में जाकर खाते थे।  
 घर आये मेहमानों को साथ ले जाकर, अपनी शान दिखाते थे।  
 पैसा लुटाते होटलों में, शाकाहारी, मांसाहारी का ध्यान नहीं रख पाते थे।  
 तुझे यह रास नहीं आया, होटलों को बन्द करके, घर का शुद्ध खाना खाना सिखाया रे।

वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले पवित्र गंगा-युमना का पानी दूषित रहता था।  
 फैक्ट्रियों से निकला दूषित जल, उसमें मिलता था।  
 करोड़ों खर्च स्वच्छ जल अभियान में, कोई भी साफ नहीं कर पाया था।  
 तूने आकर डर दिखाकर, फैक्ट्रियाँ बन्द करवाई, अब जल कुछ स्वच्छ नज़र आया रे।

वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले शुद्ध हवा पाने, सब लोग तरसा करते थे।  
 बिना काम स्कूटर कारों में घूम, हवा में धुआँ मिलतो थे,  
 हजारों का खरचा करके, अपनी झूठी शान बताते थे।

तूने आकर, लॉक-डाउन करवाके, सबको घर में बिठाकर, हवा को शुद्ध बनाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले ठेली पर जाकर, फास्ट फूड खाकर चटकारे लगाते थे।  
खड़े-खड़े रोड़ों पर हथ में ले खा, आज का फैशन बातते थे,  
गन्दगी फैला, गन्दी चीजे खाकर, पैसा लुटाकर, बदले में बीमारी पाते थे।

जब से तू आया, फास्ट फूड बन्द करवाया, ठेले पढ़े रोड़ पर खाली, खाना बाला नज़र नहीं आया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले घर दुकान, फैक्ट्रियों में नौकर खूब हुआ करते थे।  
गाँवों में खेती कार्य पसन्द नहीं करते, शहर में छोटा काम करके शहरी कहलाया करते थे,  
गाँव की जिन्दगी पसन्द नहीं करते, शहरों में डेरा डालकर रहते थे।  
तूने उनको भी नहीं छोड़ा, सब काम बन्द करवाके, गाँव की तरफ रवाना करवाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले क्या नेता क्या अफसर, सरकारी पैसा उड़ाते थे।  
चाटण, भाषण, उद्घाटन में जा, अपने को व्यस्त बताते थे,  
बिना काम देश-विदेशमें घूम, सरकारी काम बताते थे।  
अब उनका घर से निकलना तो दूर, घर बैठे ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से सब काम करना सिखाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कुछ महीने पहले सन्त-महात्माओं के पास, लोग ज्यादा आया करते थे।  
खुद की व्यर्थ व्यथाएँ सुनाते, सन्त धर्म-ध्यान कम कर पाते थे,  
सन्तों के दर्शन का बहाना कर, पिकनिक मनाया करते थे।  
तेरे डर से लोगों का आना हुआ कम, अब धर्मध्यान के लिए सन्तों ने समय खूब पाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

एक समय वो भी था, जब अन्यमति, मुँहपत्ती की हँसी उड़ाया करते थे।  
हम जब वायुकाय जीव की रक्षा करना बताते, तो झूठा तर्क बताया करते थे,  
वाह रे कोरोना, तूने हवा में मिलकर, सबको डराकर अपना रूप दिखाया रे।  
अब सबके मुँह पर तो क्या, मुँह के साथ नाक पर मास्क लगवाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

एक समय था बच्चे स्कूल पढ़ने के लिए जल्दी तैयार हो जाते थे।  
जल्दी उठकर होमवर्क करके तैयार होकर ठीक समय स्कूल जाते थे,  
जब से तू आया, स्कूले हुई बन्द, पढ़ने का बहाना कर लेपटॉप में खेल खेलना सिखाया रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

एक समय था, जब पाश्चात्य जीवन शैली में अपनी शान बताते थे।  
मौज, शौक विलासिता में, दिन-रात बिन देखे व्यर्थ गमाते थे,  
तूने आकर सबको बाहर घूमना बन्द करवाके घर में रहकर अच्छा खाना,  
परिवार संग रहना, शान्ति से जीना, ऐसी जीवनशैली सिखाई रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

कहे 'गुणवन्त' सुन कोरोना, गुरुकृपा से अब तक तुझको सबने सहा रे।  
तूने खूब की मनमानी, अब न सहन पर पायेंगे।  
अब चला जा दुनिया से वरना फिर पछतायेगा रे,  
वाह रे वाह कोरोना, तूने खूब आतंक मचाया रे....

संकलनकर्त्ता श्री गिरर्ज जैन

## जिनवाणी पर अभिमत

(1) जिनवाणी का अप्रैल 2021 का अङ्क प्राप्त हुआ। प्रवचन-‘जानें तप का स्वरूप’ परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से ‘तप’ की महिमा और तप का विश्लेषण किया है, जिससे हर साधक में ‘तप’ के प्रति रुझान हो सकता है। पूज्यश्री द्वारा दुर्वासा ऋषि और श्रीकृष्ण का दृष्टान्त देकर तप की महिमा और गरिमा का सजीव चित्रण किया गया है।

‘अनासक्ति के पर्याय थे उपाध्यायप्रवर’ में श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा उनके गुणों का वर्णन किया गया-समता, सहजता, प्रशान्तभाव, आत्मीयता संथारा विशेषज्ञ। धन्य है महापुरुषों का जीवन। इस जीवन चरित्र में ‘उत्साह से बढ़कर क्या मुहूर्त है? बहुत बड़ा जीवनदर्शन है।

‘क्षमा की ताकत’ श्री कस्तूरचन्द जी बाफना के लेख में सत्य घटना का वर्णन सचमुच हम सभी पाठकों, श्रावकों और साधकों के लिए चिन्तन-मनन और आचरण योग्य है।

अन्त में आचार्य श्री हस्ती के श्रद्धालु भक्तों का प्रेरणादायी समर्पण एवं संघ में रीति-नीति का निर्धारण श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा बहुत ही सुन्दर तरीके से जो ऐतिहासिक बातें बतायीं बहुत हृदयस्पर्शी हैं। सभी

महानुभावों, श्रावकों का स्मरण करना भी चुनौती भरा कार्य है आदरणीय मेहताजी को बहुत-बहुत साधुवाद।

श्री अभ्य कुमार जैन  
-44, हृष्टि बंदा रोड, भवानीमण्डी (राजस्थान)

(2) जिनवाणी का अप्रैल 2021 का महावीर जयन्ती अङ्क प्राप्त हुआ। इस अङ्क में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने ‘जानें तप का स्वरूप’ के अन्तर्गत गागर में सागर भरते हुए बारह प्रकार के तप का सरल और सुबोध भाषा में दिग्दर्शन कराया है। इसके माध्यम से यह दर्शाया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन कोई न कोई तप अवश्य कर सकता है। क्योंकि तप कर्मनिर्जरा के द्वारा मुक्ति पाने का सरलतम राजमार्ग है।

‘भगवान महावीर के व्यक्तित्व में सामाजिक आयाम’ शीर्षक से डॉ. दिलीप धींग का लेख प्रभु महावीर के जन्म से लेकर समग्र जीवन के विभिन्न घटना प्रसङ्गों को उद्घाटित करता है। उनके जीवन की हर घटना व्यक्ति के लिए शिक्षाप्रद एवं सकारात्मक प्रेरणा प्रदान करती है। इसी प्रकार श्री कस्तूरचन्दजी बाफना का ‘क्षमा की ताकत’ विषयक लेख व्यक्ति के जीवन से राग-द्वेष वैमस्य को समाप्त कर आपस में प्रेम और मैत्रीभाव बढ़ाने की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

श्री हस्तीमल झेलावत  
-21, सुभाष चौक, इन्दौर-2 (मध्यप्रदेश)

## आचार्य श्री हस्ती की इतिहास दृष्टि

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना\*

अतीत की घटनाओं का आकलन, लेखन इतिहास है। इतिहास का उद्देश्य लकीर पीटना नहीं बरन् अतीत में घटित घटनाओं का विश्लेषण कर पूर्वजों के गौरव को हृदय में सञ्जोकर उनके प्रकाश में वर्तमान को सँवार कर भविष्य को सुन्दर बनाना है तो दूसरी ओर अतीत की दुर्घटनाओं, बुराइयों और दोषों से वर्तमान को बचाये रखना एवं भविष्य को सुरक्षित बनाये रखना है। इतिहास के बारे में यह पंक्ति सटीक कही जा सकती है—“हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी, आओ मिलकर विचारें सभी।”

जिस राष्ट्र, जाति एवं धर्म को अपने स्वर्णिम अतीत पर गर्व नहीं होता है, वे न तो वर्तमान को, न ही भविष्य को सुरक्षित रख पाते हैं। हमारे पूर्वजों ने स्वर्णिम इतिहास की विरासत हमारे लिये छोड़ी है, उसका संरक्षण एवं संवर्धन हमारा दायित्व है। अतीत में किन बुराइयों, निर्बलताओं तथा दोषों का घर कर जाने के कारण स्वर्णिम सभ्यताएँ नष्ट हुईं, उनसे बचाना हमारा कर्तव्य है। यही इतिहास लेखन का उद्देश्य होता है। निष्पक्ष आंकलन एवं हित शिक्षा के बोध के लिए निष्पक्ष इतिहास-संकलन और लेखन की आवश्यकता होती है। अपने मत तथा मान्यता के आग्रह और हठ बुद्धि को छोड़कर सत्य की शोध एवं प्रस्तुति ही सच्चे इतिहास लेखन का पुनीत उद्देश्य है।

काल के क्रूर प्रहार और थपेड़ों से जैनधर्म का गौरवशाली इतिहास विस्मृति में लुप्त हो गया। सत्य शोधक महापुरुषों ने अपने जीवन का अर्ध्य देकर विस्मृत सत्य की कड़ियों को शृङ्खलाबद्ध कर आने वाली पीड़ियों के समक्ष प्रस्तुत करने का महान् उपकार

किया है। इतिहास के ज्ञाता महापुरुषों के अकाल काल कवलित हो जाने, विर्धमियों के आक्रमण, स्मृति-लोप एवं अपनी मान्यताओं के हठाग्रह ने गौरवशाली इतिहास की कड़ियों को या तो छिन्न-भिन्न कर दिया था या उसे अवास्तविक रूप में प्रस्तुत किया। ऐसे घोर अन्धकार में विलुप्त कड़ियों की खोज एवं उन्हें एक माला के रूप में पिरोना कोई सामान्य कार्य नहीं। भागीरथ ही गङ्गा का अवतरण कर सकता है। जैनधर्म के मौलिक इतिहास को सत्यशोध एवं निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत करने का भागीरथ प्रयास जिस महापुरुष ने अपने साधनामय जीवन के साथ किया, वे हैं स्वनाम धन्य जैन जगत् के दिव्य दिवाकर साधना शिरोमणि परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा।। यहाँ यह निवेदन करना प्रासङ्गिक है कि परम पूज्य आचार्य भगवन्त ने जैनधर्म के इतिहास की विभिन्न कड़ियों को शृङ्खलाबद्ध करने के साथ ही अपनी शोध को वैदिक एवं अन्य धर्मों के ग्रन्थों के साथ तुलना कर इनकी सत्यता को प्रतिपादन करने का महान् कार्य किया है, यह निश्चय ही समग्र भारतीय संस्कृति के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित रहेगा। आचार्य भगवन्त ने जैन इतिहास के साथ ही तत्कालीन राजनैतिक घटनाओं पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने मात्र इतिहास संकलन और लेखन का कार्य नहीं किया वरन् जैनधर्म के हास एवं भारतीय राज्य व्यवस्था तथा भारत शब्द के गौरव के पतन के कारणों की भी समीचीन व्याख्या की है।

राष्ट्र गौरव एवं सुरक्षा के लिए इसके नागरिकों का ऐक्य, भ्रातृत्वभाव, समानता का भाव एवं पराक्रम के

\* अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बाफना साहब के द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा आयोजित वेबिनार में प्रस्तुत विचारों का स्वयं द्वारा परिष्कृत आलेखन।

साथ सतत शोध कितनी आवश्यक है, इस का दिव्यदर्शन कराने हेतु आचार्यदेव ने जिस सूत्र का उल्लेख किया है, वह है—“सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै, तेजस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।”

अर्थात् हम मिलकर साथ-साथ उठे-बैठें, साथ-साथ समान रूप से खाये-पीयें, भोगोपभोगों का उपभोग करें, हम मिलकर एक साथ पौरुषपूर्ण परिश्रम करें, हमारा सर्वांगीण अध्ययन तेजस्वितापूर्ण हो और हम परस्पर एक दूसरे से कभी द्वेष न करें।

इस पवित्र पावन सूत्र का फलितार्थ है—

1. हम सब एक सूत्र में आबद्ध रहें, हममें ऊँच-नीच नहीं, समानता, ऐक्य एवं भ्रातृत्वभाव रहे।
2. हम सब संगठित रहें, राष्ट्र की सुरक्षा एवं विकास में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करें।
3. हमारा खान-पान, आचार-विचार एक हो। साधनों का समान वितरण हो, साधन सामग्री समुचित रूप से सबको उपलब्ध रहे, न कोई वञ्चित हो, न कहाँ असन्तुलित, अमर्यादित संग्रह हो।
4. हम सब संगठित होकर परिश्रम और पुरुषार्थ करें।
5. हमारी मेधा प्रखर हो, हमारा अध्ययन तेजस्वितापूर्ण हो एवं सर्वांगीण हो, नवीन ज्ञान-विज्ञान सीखने हेतु हम सब तत्पर रहें, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हमारा राष्ट्र सबसे अग्रगण्य हो।
6. हम कभी भी परस्पर एक-दूसरे से द्वेष न करें, गुणियों के गुणों एवं उपलब्धियों पर हमें गर्व हो, द्वेष नहीं, हम गुण-दर्शन, गुण-वर्णन एवं गुण-ग्रहण के लिए सदैव तत्पर रहें।

जब तक भारत राष्ट्र इस साम्य, ऐक्य और सहआस्तित्व में एकजुट रहा, हमारा यह राष्ट्र विश्व गुरु तथा जगत् का सिरपौर रहा, हम स्वयं स्वतन्त्र रहे। जब ईर्ष्या, द्वेष एवं क्षुद्र सोच से प्रभावित हो। हम परस्पर युद्धों में उलझे, हमारा गौरव खण्डित हो गया एवं हम परतन्त्र हो गए। अगर हममें अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझने की भावना न पनपी होती तो हम परतन्त्र ही नहीं होते, कोई दूसरा हमारी ओर आँख उठाने का दुस्साहस ही नहीं कर पाता तथा क्वचित् दैवयोग से

ऐसा हो भी जाता तो हम शीघ्र ही स्वतन्त्र हो गए होते.....। जैनधर्म के मौलिक इतिहास भाग चार में परम पूज्य आचार्य भगवन्त ने कश्मीराज ललितादित्य एवं कन्नौज के महाराज यशोवर्मन के प्रसङ्ग में जो भाव लिखे हैं, वे आज भी हमारे इस राष्ट्र की सुरक्षा और विकास के लिए प्रकाश स्तम्भ कहे जा सकते हैं—“दो राज्यों के मन्त्रियों की अहमकता और दो राजाओं के अदूरदर्शितापूर्ण थोथे अहं के परिणामस्वरूप उन दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। जो शक्ति अरब आतताइयों को सदा के लिए परास्त करने में लगनी चाहिये थी, वह शक्ति एक-दूसरे को समाप्त करने में ही नष्ट-भ्रष्ट हो गई।”

राष्ट्र के पराभव की भाँति ही जन-जन के मान्य तथा उपास्य जैन संघ के छिन्न-भिन्न, सीमित एवं पराभूत हो जाने का घटनाक्रम भारतीय संस्कृति और जैनशासन के इतिहास का अवसादपूर्ण अध्याय है। परम पूज्य आचार्य भगवन्त ने इसके कारणों का समीचीन विश्लेषण करते हुए भविष्य के लिए दिशा बोध प्रदान किया है। इसका अवलोकन करें—

‘वीर निर्वाण सम्बत् 1475 से 2000 इस काल के 525 वर्ष की अवधि में जैन संघ को, अन्य सम्प्रदायों द्वारा प्रारम्भ किये गये आक्रामक अभियानों के साथ-साथ पारस्परिक कलह, आन्तरिक वैर-विरोध और प्रायः प्रत्येक गच्छ के अनुयायियों द्वारा अपने को भिन्न, सभी गच्छों को एवं उनके आचार्यों को न केवल अपने से हीन ही, अपितु जमालिवत् निह्व बताने की प्रवृत्ति के कारण भी अत्यधिक क्षति उठानी पड़ी। इस अवधि में जैन धर्म के स्वरूप और चतुर्विध संघ के आचार-विचार में अनेक प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न करने वाली परम्पराओं का भी पूर्ण वर्चस्व रहा, जिनका कि श्रमण भगवान महावीर की विशुद्ध मूल परम्परा को क्षीण-गौण और अन्तर्प्रवाहिनी बनाने में बहुत बड़ा हाथ रहा।

छोटी-मोटी इकाइयों में विभक्त हो जाने और इन छोटी-छोटी इकाइयों में भी पारस्परिक विद्वेष, कलह, एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के घर कर जाने के कारण ही जैनधर्म की बड़ी भयंकर क्षति हुई।

जैनधर्म आज व्यापार करने वाले उन वैश्यों के

हाथ में आ गया है, जो धर्म के विषय में भी अन्तर्घन से वणिकवृत्ति का अनुसरण कर रहे हैं अर्थात् अपनी वस्तु को खरी और दूसरों की वस्तु को खोटी बताने की अपनी वणिकवृत्ति को धर्म के सम्बन्ध में अक्षरशः चरितार्थ कर रहे हैं।'

श्रमणाचार में शिथिलाचार का सूत्रपात करने वाले जिन शिथिलाचारी श्रमणों एवं श्रमणियों ने न केवल स्वयं शिथिलाचार का आश्रय लिया, अपितु दुष्प्रभ आरक अथवा कलियुग की दुहाई देकर समस्त श्रमण और श्रमणीवर्ग के लिए शिथिलाचार को समयोचित एवं निर्दोष बताकर खुल्लमखुल्ला किया, शैथिल्य को प्रश्रय दे, उसका प्रबल प्रचार प्रसार किया। उन श्रमण-श्रमणियों को भी केवल उनके वेश का लिहाज़ कर उनके मात्र वेश को महत्व देकर प्रारम्भ में स्वल्प और आगे चलकर बहुसंख्यक जैन संघ ने अपना पूज्य माना, साधु के गुणों का नितान्त अभाव होने पर भी उन्हें साधु के समान आदर दिया।

मानवमात्र के लिए साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका सभी चतुर्विध तीर्थ के द्वार अनादिकाल से ही खुले रखे गये थे। प्राचीनकाल में चोल, चेर, पांड्य, गंग, होय्सल, राष्ट्रकूट, चालुक्य आदि अनेक राजवंशों ने न केवल जैनधर्म को राज्याश्रय ही दिया, अपितु अनेक राजाओं ने तो जैनधर्म के सिद्धान्तों को अपने जीवन में ढाला तथा कतिपय ऐसे राजाओं ने, जिनके शरीर रण क्षेत्र में ले शस्त्राधातों के चिह्नों से नख शिख तक मण्डित थे, अपने जीवन के अन्त में एक-एक मास की संलेखना संथारा करके स्वेच्छया पण्डितमरण का वरण किया।

वर्हीं दूसरी ओर परम पवित्र आगमों में इस प्रकार के अनेक उल्लेख अद्यावधि उपलब्ध हैं कि सुदीर्घ अतीत से लेकर श्रमण भगवान महावीर की विद्यमानता तक चाण्डाल आदि वर्तमान में निम्न कहे जाने वाले कुलों के लोगों ने श्रमण धर्म अङ्गीकार कर नर, नरेन्द्र, देव, देवेन्द्रों द्वारा नन्दीय एवं पूजनीय सर्वोच्च सम्मानार्ह पद प्राप्त किया। स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में

न केवल राजा, महाराजा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सवर्णों को ही, अपितु आज के युग में निम्न कहे जाने वाले प्रायः सभी वर्गों के प्रजाजनों को भी जैनधर्म की आराधना अथवा उपासना करने का बिना किसी भेदभाव के पूर्ण अधिकार था।

ऐसा प्रतीत होता है कि तमिलनाडु में ईस्वी सन् 610 से 630 के बीच अथवा आसपास की अवधि में प्रारम्भ हुए शैव अभियान के युग में निम्न वर्ण के नाम से अभिहित किये जाने वाले बहुजन सम्भवतः अपने प्रति उपेक्षा एवं उदासीनतापूर्ण व्यवहार के परिणामस्वरूप शनैः शनै जैन संघ से उदासीन हो गये हों एवं जैनधर्म के विरुद्ध शैव अभियान में तन-मन से सक्रिय सबल सहयोग दिया हो।

बहुसंख्यक लोगों के सक्रिय सहयोग के अतिरिक्त तमिलनाडु के जैनों को आततायियों के अत्याचारों का समुचित प्रतिकार न करने की वृत्ति ही शैवों को उनके धार्मिक अभियान में सफलता प्राप्त करवाने में सर्वाधिक प्रमुख कारण रही। जैन सिद्धान्तों में अत्याचार सहन को कायरता और कायरता को महापाप माना गया है। आततायी के अत्याचार को क्लैब्य भाव से चुपचाप सहन कर लेना वस्तुतः भीषणतम अत्याचारों को आमन्त्रित करने के समान है।

पञ्च महाब्रतधारी श्रमण-श्रमणियों के लिए तो अविचल शान्तभाव से अत्याचार एवं उपसर्ग सहन करना भूषण है, किन्तु गृहस्थ वर्ग के लिए कायरतापूर्ण अत्याचार सहन करना वस्तुतः, निकृष्टतम दूषण माना गया है।

धर्म के अस्तित्व पर, अबलाओं की अस्मत पर, अपने स्वयं के सर्वस्व, सम्मान अथवा जीवन पर और असहाय निर्बलों के ग्राणों पर आये संकट अथवा आततायियों के अत्याचारों के संक्रमण काल में हाथ पर हाथ धरे चुपचाप, अकर्मण बने रहना अहिंसा नहीं, अपितु अहिंसा भगवती के आनन-शिख स्वरूप पर कलंक कालिमा पोतने तुल्य महापाप है।

आत्मरक्षा, अपने देश, जाति, समाज, धर्म,

असहायों, आश्रितों एवं अबलाओं की प्राण प्रण के साथ रक्षा करना प्रत्येक मानव का प्राथमिक कर्तव्य है।

दक्षिणापथ से जैनधर्म के अस्तित्व तक को समाप्त कर देने के जो प्रबल प्रयास हुए, उनके सफल होने की पृष्ठ भूमि में दक्षिण के उस समय के जैनों की इस प्रकार की भीरता, क्लैब्यता, अत्याचार एवं अनाचार को भेड़-बकरी तुल्य चुपचाप सहन कर लेने, दैन्य और पलायनपरक वृत्ति की वस्तुतः सबसे बड़ा कारण रही, यह एक कटुतम सत्य है।

इसके साथ ही समाज के एक अङ्ग पर होने वाले आघात का शेष अङ्गों द्वारा प्रतिरोध न किये जाने का कटुतम प्रतिफल आज भारत के सम्पूर्ण जैन समाज को भोगना पड़ रहा है। भूत की इन निर्बलताओं एवं जैन संघ के मूल स्वरूप एवं गौरव को प्रतिष्ठापित करने हेतु परम पूज्य आचार्य भगवन्त ने आङ्कान किया है-

“अतीत में जिनेश्वर की शास्त्रों में प्रतिपादित आज्ञा के विपरीत, जिन-जिन अशास्त्रीय मान्यताओं, विधि विधानों, धार्मिक आयोजनों एवं अनुष्ठानों को धार्मिक कृत्य एवं करणीय रूप में अज्ञीकार किये जाने के कारण श्रमण भगवान का प्रबल शक्तिशाली सुदृढ़ संघ विभक्त, विघटित, अतीव अशक्त एवं क्षीण बन गया, उन सबको एक ही झटके में उखाड़ फेंकने के लिए प्रत्येक जैन, चतुर्विध संघ का प्रत्येक सदस्य दृढ़ संकल्प के साथ कटिबद्ध हो जाय।”

बिना किसी अभिनिवेश एवं साम्प्रादायिक व्यामोह के आगमोत्तर ग्रन्थों में प्रतिपादित आगम विरुद्ध तथ्यों को एकान्ततः अमान्य एवं अप्रामाणिक घोषित कर दिया जाना चाहिये। जिन विधिविधानों एवं मान्यताओं का आगमों में इंगितमात्र भी नहीं है वे सब विधिविधान, वे सभी मान्यताएँ भविष्य में चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य के लिए सर्वथा अमान्य हों, चाहे उनका प्रतिपादन करने वाला आचार्य कितना ही बड़ा प्रभावक आचार्य क्यों न हो ?

“भूतकाल की भूलों से अवगत हो जाने के अनन्तर भी यदि इस प्रकार का दृढ़ संकल्प न किया जाय

और उन बुराइयों को दूर न किया जाय तो यह इतिहास-दर्पण का दोष नहीं वरन् उसमें अपने मुखड़े को देखने वाले संघनायकों एवं राष्ट्र नायकों का ही दोष माना जायेगा।”

उपर्युक्त आलेख एवं विश्लेषण के आङ्कने में परम पूज्य भगवन्त की नीर-क्षीर निरपेक्ष इतिहास-दृष्टि स्वतः उजागर होती है। उनके साधनामय जीवन की ओर दृष्टिनिपात करें तो सुस्पष्ट है कि वे मात्र इतिहास लेखक नहीं, इतिहास निर्माता थे। उनके जीवन का एक-एक क्षण, उनके साधना सहायक शरीर का एक-एक अणु मानो उनकी दिव्यसाधना का बोलता उदाहरण है। श्रमण भगवान महावीर की उज्ज्वल आचार्य परम्परा के वे ऐसे अलौकिक महापुरुष हैं जिनके जीवन में श्रमण भगवान महावीर की शासन परम्परा के सभी आचार्यों की विशिष्टताएँ विद्यमान प्रतीत होती हैं। कुशल वंश के कुशल नायक आचार्य हस्ती मानो रत्नवंश के गौरव गाथा के वे अनमोल रत्न हैं, जिन्होंने अपने जीवन में सभी पूर्वाचार्यों एवं गुरु भगवन्तों के गुणों को समाहित कर उन्हें दिव्यतम स्वरूप प्रदान करते हुए अपने पट्ठधर आचार्यदेव प्रभृति गुरु भगवन्तों एवं अनुयायियों के लिए एक उज्ज्वल विरासत छोड़ी है, जिसमें हम प्रतिपल आज भी उनके गुणों के दर्शन कर अपने आपको भावित कर मोक्षमार्ग में अपने कदम बढ़ाकर उन महामना का अनुसरण कर उन्हें अपने स्वयं के जीवन में मूर्तिमान कर सकते हैं। उनके अनन्त गुणों का दर्शन ही शक्य नहीं तो उन्हें लेखनी में निबद्ध करना अथवा वाणी में व्यक्त करना क्या किसी के वश की बात है ? तथापि उन्हीं के द्वारा आचार्य हेमचन्द्राचार्य के बालवय में महामन्त्री उदयन द्वारा बालक चंग (आचार्य हेमचन्द्र) के लिए उनके पिता चाचिंग के समक्ष व्यक्त किये उद्गार सम्भवतः उन गुण सिन्धु के गुणों को आंशिक रूप से ही सही, व्यक्त कर पायें-

‘‘सम्माननीय धर्मबन्धु ! असाधारण, अलौकिक, आत्मशक्तिसम्पन्न, युगपरिवर्तनकारिणी विभूतियाँ, इस धरातल पर अनेक शताब्दियों ही नहीं

वरन् कतिपय सहस्राब्दियों के अन्तराल के अनन्तर एक भी कभी समष्टि के पुण्योदय से ही अवतीर्ण होती है।”

“यह बालक सहस्राब्दियों से जन-जन के प्रबल पुण्योदय के फलस्वरूप अवनितल पर अवतीर्ण होने वाली महान् विभूतियों में से एक महामहिमामयी महर्घ्य विभूति है।”

‘करोड़ों लोगों में से असाधारण उच्च कोटि के शिल्पी, विद्वान्, योद्धा, व्यवसायी अथवा प्रशासक गिने चुने होते हैं, किन्तु जन-जन को विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाकर उभय लोकों में परम कल्याणकारिणी सच्ची मानवता के ढाँचे में ढालने वाले नर को नारायण अथवा सत्यं शिवं सुन्दरं, स्वरूप प्रदान करने वाले समष्टि के सच्चे मित्र युग प्रवर्तक महापुरुष तो युग-युगान्तरों में सहस्रों वर्षों के अन्तराल से कभी कदाचित् ही होते हैं।”

गर्भकाल से ही ब्रह्मचर्य के साधक, जन्म से ही माँ रूप के वैराग्य में रहे, अबोधवय में ही जीवन की क्षणभंगुरता का अनुभव करने वाले, अबोधवय में दादी नौज्यांबाई के संथारे के साथी, छह वर्ष की वय में चौविहार त्याग करने वाले, साध्वीरत्ना महासती धनकंवरजी म.सा. एवं प्रशान्तमना सरल विभूति स्वामी जी श्री हरखचन्दजी म.सा. से धर्म का प्रारम्भिक पाठ पढ़ने वाले, दस वर्ष की लघुवय में गुरु शोभा से संयम धन पाने वाले, जिन्हें पूज्यपाद शोभाचार्य ने 15 वर्ष की वय में पट्ठधर नामाङ्कित कर दिया, मात्र 15 वर्ष की वय में यशस्वी रत्नसंघ परम्परा के महिमामयी आचार्य पद पर विराजित होने वाले, 23 वर्ष की वय में दिग्गज पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराभूत कर स्थानकवासी जैन परम्परा का यशवर्द्धन करने वाले, अपने जीवन में नवकार महामन्त्र के तीन पदों को मुशोभित करने वाले उन महापुरुष ने जिनशासन के अनेक महान् आचार्यों एवं महापुरुषों का स्नेह, आशीर्वाद एवं समादर प्राप्त किया। उनमें से कुछ का उल्लेख करना प्रासङ्गिक समझता हूँ।

- \* इस सम्मेलन में आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. सबसे छोटी वय के हैं, पर उन्हें मैं सलाह-सूचन में अपने से भी आगे देखा रहा हूँ। इस सम्मेलन में वही प्रस्ताव मान्य होगा जिस पर आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. सहमत होंगे।” -जैन जवाहर पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.
  - \* “नमो पुरिसवरगं धृत्थीणं” -आगम महोदधिपूज्य आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा.
  - \* “सुना करता था कि मारवाड़ में ऐसा तेजस्वी साधु है। इन्हें मैंने आज ही देखा। इन्हें मैं जोधपुर का राजा कहूँ या नवकोटि मारवाड़ का सरताज।” -शास्त्रों के टीकाकार पूज्य श्री घासीलालजी म.सा.
  - \* “आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. निष्ठावान ब्रह्मचारी हैं, उनके द्वारा कही गई कोई बात असत्य हो ही नहीं सकती है।” -श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ के यशस्वी आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
  - \* “पूर्ण गुणों से पूर्ण, गर्भ से वैरागी।” -वीरपुत्र श्री घेरवरचन्दजी म.सा.
  - \* “पाँच महाब्रत, तीन गुप्ति, पाँच समिति, छत्तीस गुणों से सम्पन्न सन्तरत्न, आचार्य पद हेतु सक्षम।” -पूज्य उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.
  - \* “ये कर्मयोगी हैं, ये उनसे भी महान् हैं।” -लोकमान्य साध्वी बालासती रूपकंवरजी म.सा.
- पूर्व के अनेक भवों के साधक इन योगी की आत्मा की महानता, उत्कट गुरुभक्ति, उज्ज्वल विमल संस्कार, उत्कृष्ट वैराग्य, संयम की मस्ती, अखण्ड शील एवं अप्रमत्तता के संस्कार, बाल वय में ही कितने सुदृढ़ थे, इसकी एक झाँकी उनकी दैनन्दिनी से-“गुरुदेव की छत्रच्छाया में इतना मस्त था कि कौन आया और कौन गया, इसका पता नहीं। किसी से बात करने का मन ही नहीं होता, भगिनी मण्डल से तो

बात ही नहीं करता। अपनी दीक्षिता माँ और साध्वीरत्ना श्री धनकंवरजी आदि से भी बात नहीं की। हम बच्चों के साथ बैठकर कभी गपशप नहीं करते। दो-चार बूढ़े लोग-सन्त या पण्डितजी यही हमारे बात का परिवार था।”

ज्ञातव्य है कि गुरुदेव के स्मेहिल सानिध्य का साहचर्य उन्हें मात्र 5 वर्ष (वय 15 वर्ष लगभग तक) के लिए ही मिला। ऐसी अल्पवय अवस्था एवं अल्प शिक्षा

पर्याय में जिनका संयम इतना निर्मल-विमल हो, वह साधक 71 वर्ष की संयम-साधना में संयम की ऊँचाइयों को छूकर युग-युगान्तर तक अपनी छाप अंकित करे तो क्या आश्चर्य। लाखों भक्तों के आराध्य भगवन्त गुरु हस्ती के लिए तो मुँह से बरबस ये ही शब्द निकलते हैं—“पाप विनाशक सत्य उपासक, सर्व गुणों के धारी हैं। नर श्रेष्ठ हुए जिस पुण्य गोद से, धन्य-धन्य महतारी हैं।”

—सरी 55, शतस्त्री नगर, जोधपुर (राज.)

## संयम वही सार्थक जो आत्मलक्ष्य से जुड़ा हो

व्याख्यात्री महासत्ती श्री पद्मप्रभाजी म.सर.

सूकृताङ्ग सूत्र में साधना के क्रम के संग में साधना के चार सोपानों की चर्चा मिलती है—आयगुत्ते, सया दंते, छिन्नसोए, निरासवे। ये चार सोपान अग्ररोम आहार की तरह किसी की साधना के अभिन्न रोम बन चुके थे, तो वे थे हमारे उपाध्याय भगवन्त। ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ..... ज्ञान होने पर भी मौन और शक्ति होने पर भी क्षमा ये दोनों विरोधी गुण भी सहोदर की भाँति जिनका आश्रय पाकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे तो वे थे हमारे उपाध्याय भगवन्त।

जीवन वही सार्थक है जो संयम से जुड़ा हो और संयम वही सार्थक है जो आत्मलक्ष्य से जुड़ा हो। जिनका जीवन संयम से जुड़ा था और जिनका संयम आत्मलक्ष्य से जुड़ा था। संयम, साधना और तपस्या का ऐसा दुर्लभतम संयोग अगर कोई था तो वे थे हमारे उपाध्याय भगवन्त।

प्रासाद की छत यदि विस्तृत और अखण्ड है और दीवारें यदि अभेद्य हैं तो प्रासाद में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति निर्भयता, निश्चिन्तता, सुरक्षितता का अनुभव करता है। ठीक इसी तरह रत्नसंघ के इस भव्य विशाल भवन में आचार्य भगवन्त विस्तृत और अखण्ड छत की भाँति मेढ़ीभूत हैं और उपाध्याय भगवन्त मजबूत दीवार की भाँति आलम्बनभूत थे।

पाट पर विराजमान उपाध्यायप्रवर जब मौन रहते थे तब उनकी शान्त मुद्रा देखकर संयमी साधक को संयम में स्थिरता के लिए एक मूक प्रेरणा मिलती थी, ताकि उसके क़दम अनुस्रोतगमी न बने और जब वे कुछ फरमाते थे तब उनके अन्तःस्थल से निकले हुए ओजस्वी वचन संयम में निरन्तर गतिशीलता की प्रेरणा देते थे ताकि वह प्रतिस्रोतगमी बना रहे।

2 जनवरी 2020 की शाम को जब उपाध्याय भगवन्त के देवलोक गमन के समाचार ज्ञात हुए तब सर्वप्रथम इस बात की अनुभूति हमें हुई कि आज जीवन का, सकल श्रीसंघ का एक मजबूत आधार हमसे सदा-सदा के लिए..... विदा हो गया।

उनका सुदीर्घ संयम पर्याय, तेजस्वी तपःपूर्व जीवन रत्नसंघ के प्रत्येक साधक के लिए, सम्पूर्ण संघ के लिए, स्थानकवासी परम्परा के लिए और समूचे जैन समाज के लिए महान् अपूरणीय क्षति है। यद्यपि संयमी साधक को संयोग-वियोग में निर्लिप्त रहने की ही प्रभु आज्ञा है तथापि कुछ प्रसङ्ग ऐसे होते हैं जो नहीं चाहते हुए भी हृदय को व्यथित कर देते हैं और जिनमें सहज रहने के लिए किया गया प्रत्येक पुरुषार्थ आखिर विफल ही होता है।

वे कर्मवीर कर्म करते-करते कृतकाम हो गए। समय के स्थाह पन्नों पर उनके कर्तृत्व के स्वर्णिम आलोख हमें युगों-युगों तक आलोकित और आनन्दित करते रहेंगे।

—प्रेषक-निकृत्तरा जेलझर

## लॉकडाउन के सकारात्मक पहलू

श्री यारसमल चण्डालिया

**जीवन की नकारात्मकता** ने हमें प्राकृतिक और मनुष्य जनित आपदाएँ दिखाई हैं तो वर्तमान आपदा अब हमें प्रकृति का सकारात्मक पक्ष दिखा रही है। कोरोना वायरस ने समूची मानव जाति को हिला दिया। कोरोना ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि लगभग हर क्षेत्र में उथल-पुथल मचा कर रख दी है। कोरोना संक्रमण के कारण घोषित लॉकडाउन ने जीवन जीने के सलीके को नई परिभाषा दी है। जीवन में कुछ ऐसे परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं जिनको स्थायित्व प्रदान किया जाए। विकसित हुई अच्छी आदतों को हमेशा के लिए जीवन में अपनाया जाय तो भविष्य के लिए भी अपने जीवन को सुखी और सुरक्षित बनाया जा सकता है। इसके लिए हमें कोरोना लॉकडाउन के नकारात्मक पहलुओं को छोड़कर निम्न सकारात्मक पहलुओं को अपनाना होगा-

(1) **दिनचर्या की व्यवस्थितता**-लॉकडाउन के कारण घर में ही रहने से लोगों के सामने दो विकल्प थे-(1) या तो हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाओ और समय बीतने का इन्तजार करो या फिर (2) जो हो रहा है उसमें अपना बेस्ट कर दो, कुछ नई चीज सीखने की कोशिश करो। जिन लोगों ने दूसरा विकल्प चुना, उन्होंने समय का सदुपयोग किया और खुद को अपडेट किया। उनके लिए लॉकडाउन वार्कइ में वरदान सिद्ध हुआ और उन्होंने समय का सदुपयोग अपने कौशल को निखारने में किया। जिन्दगी हमेशा कुछ सीखते रहने का ही नाम है। व्यक्ति को हर तरह का काम आना चाहिए, यह बात लॉकडाउन में समझ में आ गई। समय पर भोजन, समय पर नींद, स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित है। व्यवस्थित दिनचर्या अपनाने से स्वास्थ्य लाभ हुआ।

लॉकडाउन के दौरान दैनिक-चर्चा में आमूल-चूल परिवर्तन हुए। खाने-पीने-सोने के प्राकृतिक नियम लागू हो गए। हर क्षेत्र में मर्यादा बढ़ी। घर के कार्यों में छोटे-बड़े सब की भागीदारी बढ़ी। बिना किसी प्रशिक्षण के सभी कार्य घरों में ही सञ्चालित होने लगे। पहली बार देश में अनावश्यक वस्तुओं की खरीद पर अंकुश लगा। अनुत्पादक खर्चों की कमी से बचत में वृद्धि हुई। बढ़ते विज्ञापनों के कारण कई दिनों से पेकड़ पुराने खाने, पिज्जा बर्गर आदि जंक फूड, बोतल का पानी, टमाटर सॉस, कोल्डफ्रिंग आदि बाहर के खाद्य और पेय पदार्थों-होटल में खाने-पीने की आदत बढ़ती जा रही थी। लॉकडाउन में सबको समझ में आ गया कि फास्टफूड, जंकफूड की संस्कृति स्वास्थ्य को खराब-बर्बाद करने वाली है। बाहर के खाने के बिना भी जीवन बेहतर ढंग से चल सकता है। लागें को बाहर के अशुद्ध भोजन की अपेक्षा घर की रसोई-घर के स्वास्थ्यकारी भोजन की कीमत समझ में आई। जीवनशैली सतर्कता पर केन्द्रित हुई। नशीली और सेहत के लिए नुकसानदेह वस्तुओं के सेवन पर नियन्त्रण हुआ। भारतीय खान-पान से लोग दूर हो रहे थे। कुछ युवाओं को तो पारम्परिक खाने का स्वाद ही पता नहीं था। लॉकडाउन में उसका स्वाद आने लगा। बाजार में खान-पान से जुड़ी बीमारियाँ घटी। पहले की तरह लोग किचन में जूते-चप्पल पहनकर जाने से परहेज करने लगे।

(2) **रिश्तों को नया आयाम**-लॉकडाउन के समय का इस्तेमाल लोगों ने खाने-पीने की आदतों को सुधारने, योग प्राणायाम करने, नई चीजों को सीखने, परिवार के साथ बैठता बिताने में और रिश्ते मधुर बनाने में किया। जब घर में सभी सदस्य एक साथ बैठे तो समय

की भागदौड़ से थक चुके इन रिश्तों को नया आयाम मिला। परिवार के सभी सदस्यों के साथ में सफाई करना, खाना बनाना भार नहीं मनोरञ्जन का एक स्रोत बना।

(3) अध्यात्म में व्यस्तता-लॉकडाउन में मन की शान्ति के लिए अध्यात्म से जुड़ाव हुआ, धार्मिक कार्यों में मन लगा, सामाजिक-स्वाध्याय के माध्यम से बच्चों को धर्मसंस्कार देने में समय बीता। दादा-दादी, नाना-नानी ने किस्से-कहानियों के पुराने दौर को पुनः ज़िन्दा कर दिया। बुजुर्गों ने अपने अनुभवों से नई पीढ़ी को रूबरू करवाया। बातों की खिड़की न जाने कब बक्त की देहली लाँघकर यादों के उस खुशनुमा दौर में पहुँच जाती, जहाँ बच्चों को पता चला कि दादा-दादी का इतिहास क्या रहा? बच्चों के लिए ये रोचक कहानियाँ धरोहर की तरह थीं। बच्चे भी यह समझ पाये कि दोस्तों की पार्टी से कहीं अच्छी होती हैं वे शार्मे, जब दादा-दादी, नाना-नानी अपने यादों की पोटली से तरह-तरह के किस्से निकाल कर सुनाते थे।

(4) पर्यावरण शुद्धि-लॉकडाउन के दौरान आर्थिक नुकसान तो हुए, लेकिन जल और वायु की शुद्धि से आम लोगों को काफी राहत मिली। लॉकडाउन ने नदियाँ, जल और वातावरण को साफ करने में मदद की। लोग धरती माँ के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने लगे। यह कॉर्बन रहित राष्ट्र बनाने के लिए सकारात्मक कदम माना जा रहा है। वरिष्ठ वकील सुधांशु कासलीवाल जयपुर ने तो धरती माँ को बचाने के लिए हर साल एक महीने के लॉकडाउन को जरूरी बता दिया।

(5) जैनधर्म की महानता-लॉकडाउन के दौरान दुनिया को समझ में आया कि जैनधर्म के सिद्धान्त सही हैं। भगवान महावीर की वाणी उत्तम है। हर प्राणी जीना चाहता है अतः सभी को जीने दो। इतनी शक्तिशाली मानव जाति और उसका समूचा वैज्ञानिक विकास इस समय एक छोटे से कोरोना वायरस के सामने लाचार हो गया, परन्तु लोगों को समझ में आ गया कि

इस महामारी से जैनधर्म के सिद्धान्तों को आचरण में लाकर बचा जा सकता है। तप संयमपूर्ण जैन जीवनशैली, कोरोना का रामबाण इलाज है। हमारे प्रणाम-नमस्कार को पूरी दुनिया ने संक्रमण घटाने में मददगार माना है। जैनधर्म हर गतिविधि को अहिंसा, संयम से अनुप्राणित करने का सन्देश देता है। कोरोना महामारी के दौर में शाकाहार पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है। जैनधर्म में शाकाहार, वैयक्तिक, सामाजिक और व्यावसायिक सभी स्तरों पर प्रतिष्ठित है। जैनधर्म में सदैव जीव-यतना के लिए मुखवस्त्रिका का उपयोग करने को कहा है। भगवान महावीर ने सत्य अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे सिद्धान्त दिये जो आज के परिप्रेक्ष्य में अति आवश्यक हैं। आज कोरोना से बचाव के लिए पूरी दुनिया जैनधर्म के आदर्शों पर चल रही है। मुँहपत्ति (Mask), अहिंसा शाकाहार (Veg. Food) अवग्रह-संघट्ठा (Social Distance) अलगाव (Ourarantine) एकान्त (Isolation) जैनधर्म में पहले से ही किसी न किसी रूप में प्रचलित हैं। आज जैन धर्म को अपनाने की आवश्यकता है। जैसा कि कहा है-

सुख चाहते हो तो रात में खाना नहीं।  
शान्ति चाहते हो तो दिन में सोना नहीं।  
सम्मान चाहते हो तो व्यर्थ में बोलना नहीं।  
मुक्ति चाहते हो तो जैनधर्म छोड़ना नहीं॥

(6) मानसिक स्वास्थ्य में सुधार-हमारे पास जो भी है उसे जिस रूप में हम स्वीकार करना चाहते हैं वैसा ही उपयोग कर सकते हैं। जीवन को बदलने की क्षमता हम में है, हम जैसा चाहें अपने जीवन को वैसा बना सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर न पड़े इसके लिए हमेशा खुद को ऐसी चीजों में व्यस्त किया जाय, जो खुशियाँ दें। सीमित संसाधनों की शिकायत करने वाले लोग अब कम चीजों के साथ भी जीवन का महत्व समझने लगे हैं। लॉकडाउन में कमी का रोना

छोड़कर उपलब्ध संसाधनों का सम्यक् इस्तेमाल किया गया। कहावत है कि- ‘किस्मत ने आपको नींबू दिया है तो उसके खट्टेपन की शिकायत करते रहने के बजाय उसका शर्बत बना कर पी जाइये, इससे पहले कि वह सड़ जाये अपने पास उपलब्ध हर तरह के साधन-संसाधनों के लिए हमेशा ही शिकायती रखैया रखने से जो हताशा जन्मती थी वह अपने पास उपलब्ध संसाधनों के आभारी होने से पहले बेहतर बनाने के प्रयासों से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर परेशान होने वाली युवा पीढ़ी को मानसिक मजबूती मिली है। वर्तमान को सब कुछ मानने वाले युवाओं को समझ में आ गया है कि भविष्य को भी ध्यान में रखना जरूरी है। इसमें घर के बड़े बुजुर्गों का साथ और सलाह भी काफी मददगार रही।

(7) अन्य बीमारियों से राहत-लोगों को परिवार के सभी सदस्यों के साथ बैठकर खाने के कई लाभ दिखे। समस्याओं को साझा कर तनाव रहित मन से भोजन करने से पाचन एवं हार्मोन से जुड़े रोगों से बचाव हुआ। भागदौङ कम होने, पर्याप्त नींद लेने, परिवार के साथ रहने, बाहर की रेडीमेड तली-भुनी चीजे नहीं खाने से लॉकडाउन के दौरान अन्य बीमारियों में कमी आई। परिवार हेल्थ फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया का कहना है कि पिछले दिनों हार्ट अटेक, ब्रेन स्टॉक और दूसरी बीमारियों के मामले कम हुए। अर्थलाभ के चक्कर में भागमभाग के कारण लोग अपनी सेहत पर भी कम ध्यान देने लगे थे। लॉकडाउन में पर्याप्त समय होने के कारण स्वस्थ रहने के लिए लोगों ने योग, व्यायाम को अपनाया। दिनचर्या नियमित हुई। भविष्य में लोगों को अपनी सेहत और इम्यूनिटी में सुधार दिखा। इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए दादी नानी के नुस्खे कारगर साबित हुए। नशे की लत छूट गयी।

(8) आत्म निर्भरता बढ़ी-अपने कौशल को

विकसित करने के कारण लोगों की बहुत सारी चीजों पर एक-दूसरे पर हो रही निर्भरता समाप्त हुई। लोगों को समझ में आया कि-अकेले नहीं है आप, खुद है अपने साथ। खुद को टूटने न दें। अपना सहारा खुद बनें। स्वावलम्बी रहें। लॉकडाउन बहुत लोगों को जमीनी हकीकत पर ले आया। मेकअप पर फोकस कम हुआ। लोग घर में रहे तो मेकअप नहीं के बराबर हुआ। लोगों ने सादगी को अपनाया। सेलून, ब्यूटीपार्लर नहीं जाने के कारण समय, श्रम और पैसे की बचत हुई। रियल लुक इज परफेक्ट लुक बन गया। इस लॉकडाउन ने मेकअप की परतों में कैद लोगों को राहत देने में मदद की।

विदेशी सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग के स्थान पर दादी माँ के नुस्खे आजमाए गये, ताकि त्वचा की मरम्मत खुद-ब-खुद होने में आसानी हो। खुद की खूबसूरती को छिपाया न जाए।

हम महात्मा गाँधी की शिक्षाओं को त्यागकर आधुनिकीकरण की ओर चल पड़े थे। कोरोना महामारी के समय में महात्मा गाँधी की विचारधारा की स्वीकार्यता बढ़ी। वे स्वावलम्बन पर बल दिया करते थे। लॉकडाउन के दौरान स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की बात बढ़ी ताकि देश आत्म निर्भर बन सके, देश में उत्पादित और निर्मित वस्तुओं के उपभोग की आदत बन जाए। अब लॉकडाउन के बाद वर्तमान सरकार भी स्वदेशी, स्वावलम्बन एवं आत्म-निर्भरता की ओर वापस लौटने की बात कर रही है।

(9) पुरानी यादें तरोताजा हो गई-लॉकडाउन में लोगों ने पुरानी एलबम की तरह पुरानी डायरियाँ भी निकालीं। बहुत सी ऐसी बातें सामने आई जिन्हें इस तेज रफ्तार से भागती हुई ज़िन्दगी ने भुला दिया था। दादा-दादी, नाना-नानी ने पुरानी घटनाओं-बातों को सुनाकर जीवन जीने की कला सिखाई। सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत की दुर्दशा होने के जो कारण इतिहासकारों ने बताए उनमें प्रमुख हैं-ऋषियों की मन्त्र

तुल्य शिक्षाओं का विस्परण अर्थात् हम मिलकर साथ-साथ उठे बैठें, साथ-साथ समान रूप से खाएँ-पीएँ, एक साथ मिलकर पौरुष पूर्ण परिश्रम करें, हमारा सर्वांगीण अध्ययन तेजस्विता पूर्ण अर्थात् उत्कृष्ट कोटि का हो और हम परस्पर कभी एक दूसरे से द्वेष न करें-इस मूल मन्त्र को भारतवासियों ने भुला दिया था, पर कोरोना के लॉकडाउन ने इसे पुनर्जीवित कर दिया।

**(10) सहानुभूति ही नहीं समानुभूति भी बढ़ी-सहानुभूति (सिम्पैथी)** जिस किसी के साथ दर्शाई जाए तो वह ऊपरी तौर पर साता पहुँचाती है, जबकि समानुभूति (एम्पैथी) प्रकट करने वाला स्वयं उस दर्द की अनुभूति करता है। हम सहानुभूति से तो परिचित थे, पर कोरोना ने सहानुभूति को समानुभूति तक पहुँचाया। ‘जिसके पैर न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई’ पर की पीड़ा को जान कर उसे मिटाने का काम विरले ही करते हैं। संक्रमण काल में अपनी जान की परवाह किये बिना पुलिसकर्मियों, स्वच्छ ताकर्मियों, चिकित्साकर्मियों एवं शिक्षाकर्मियों ने-दिन-रात जुटकर मुस्तैदी के साथ कोरोना फाईटर-कर्मवीर योद्धाओं के रूप में सेवाएँ दी हैं-यह सब सहानुभूति के साथ समानुभूति से ही सम्भव हुआ।

**(11) पुण्योपार्जन की भावना-इंसान होकर इंसान की सहायता न करे तो भगवान किसी की सहायता क्यों करेगा ? आप किसी का दुःख न मिटा सको तो कम से कम आपके कारण से तो किसी को दुःख न पहुँचे-** ऐसे शुभभावों में भी वृद्धि हुई। ‘हमने पुण्य से पैसा कमाया तो अब पैसों से पुण्योपार्जन करें। पुण्य से कमाया पैसा यहीं रह जायेगा, पर पैसे से कमाया पुण्य साथ जायेगा’-ऐसा सोच कर तन, मन, धन से लोगों ने पुण्य कार्यों में सहायता दी। रोगियों को राहत पहुँचाने के साथ-साथ उदारता पूर्वक प्रधानमन्त्री सहायता कोष में दान दिया। भवानीप्रसाद मिश्र की इन पंक्तियों को आत्मसात् कर-‘मुझे कोई हवा पुकार रही है कि घर के

बाहर निकलो तुम्हारे बाहर आए बिना एक समूची जाति एक समूची संस्कृति हार रही है’ न केवल भारत में ही, अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय भी पुण्योपार्जन में पीछे नहीं रहे।

कोरोना संकट और लम्बे लॉकडाउन के कारण जब प्रवासी श्रमिकों की रोजी रोटी खतरे में पड़ने लगी तो गाँवों की आबोहवा, सामज्जस्य के साथ मुसीबत के समय मिलने वाला भरोसा, उन्हें पुनः गाँवों की ओर खींच लाया तो स्थानीय लोगों ने उनको साता पहुँचाने, सहयोग देने में कोई कसर नहीं रखी।

**(12) इच्छाओं पर नियन्त्रण-इच्छा निरोधस्तपः-**इच्छाओं का निरोध ही तप कहा है। संकल्प और संयम से इच्छाओं पर अंकुश लाया जा सकता है। इच्छाओं पर नियन्त्रण अपने हाथ में है। लोगों ने आवश्यकता और इच्छा में अन्तर महसूस किया। लॉकडाउन ने इच्छाओं पर नियन्त्रण करना सिखाया। सादगी पूर्ण संयमित जीवन जीने के आनन्द को लोगों ने अनुभव किया। शरीर रूपी गाड़ी चलाने के लिए कैसा भोजन, कब और कैसे करें, अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या जरूरी है, यह भी समझा। लॉकडाउन के दौरान कई परिवारों ने सादगी पूर्ण तरीके से बिना बैण्ड-बाजे, बारात और दावत के शादियाँ सम्पन्न की और भारी भरकम खर्चों के बिना, बिना भीड़भाड़ एकत्रित किये भी वैवाहिक कार्यक्रम कैसे सम्पन्न हो, यह आदर्श उपस्थित किया।

इस तरह कोरोना संक्रमण ने हमारी बुरी आदतों को बदल कर अच्छी आदतें अपनाने का अवसर प्रदान किया है। उपरोक्तानुसार आए जीवन में परिवर्तन को हम स्थायित्व प्रदान करें और जीवन में सकारात्मक सोच बना कर, सजग और सावधान रहकर अनलॉक में भी मस्त रहें, स्वस्थ रहें।

## मेरी व्यसनमुक्ति.... शाश्वत भी.... और अक्षय भी

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

4 अप्रैल 2021 के स्वर्णिम दिवस को ...तप त्याग के साथ मनाते हुए ...भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक और सोने में सुहागे के समान ...पूज्य आचार्य हीरा का जन्म दिवस ...मन है हर्षित और उत्साहित भी ...कर रहा चिंतन कि क्या उपहार कर्त्ता अर्पित ...सोचा ...गुरुदेव अक्सर फरमाते हैं व्यसनमुक्त होने की बात ...तो विचार किया कि ...मैं व्यसनों के त्याग का उपहार कर देता हूँ अर्पित ...गुरुदेव के पावन चरणों में ...लेकिन ... तब तक आया ध्यान कि मैं तो पहले ही सारे व्यसनों का कर चुका हूँ त्याग ...फिर इस बार कैसा हो उपहार ? अब किससे पाँऊ समाधान ?

...मन कुछ उदास-सा हो गया ...आँखों से आँसू बह निकले हैं ...पर आश्चर्य ...ये वेदना के आँसू ...हर्ष के आँसू में कैसे हो गए परिवर्तित ? रोते हुए चेहरे पर जो आई मुस्कान ...तो मिट गया उदासी का नामोनिशान...हुआ यूँ कि मन ने कर दिया संकेत तो ...रे दीवाने ...अपने हृदय मन्दिर में प्रतिष्ठित प्रभु महावीर से ...अभी ही क्यूँ नहीं कर लेता सँवाद ...क्यूँ नहीं पा लेता सम्यक समाधान ?

अब मन प्रफुल्लित-सा हो गया ...जाकर भीतर ... करके करुणासागर प्रभु महावीर के दर्शन... झूम उठा है मन मयूर ...शब्दातीत अनुभूति ...अव्यक्त-सी अभिव्यक्ति.....

पूछा प्रभु वीर से ....भगवन् ...आप तो मेरे परम हितैषी हो ...आप ही बताओ कि मैं परम उपकारी गुरुदेव को उनके जन्मदिवस पर कौनसा उपहार कर्त्ता अर्पित ? ... व्यसनों के त्याग का उपहार तो मैं पहले ही समर्पित कर चुका हूँ ...यानी जीवन पर्यन्त के लिए गुटखा, सिगरेट, अफीम, भाङ्ग, शराब आदि सभी नशीले पदार्थों का त्याग तो कर चुका हूँ ...यानी

व्यसनमुक्त तो मैं पहले से हूँ ही ...हे मेरे नाथ ...अब आप ही बताओ ...कि ऐसा क्या है मेरे पास ...जिसके त्याग से मैं कर सकूँ गुरुदेव को सन्तुष्ट ?

प्रभु महावीर के अलौकिक चेहरे पर बोही ...अनमोल मुस्कान ....आँखों में बो ही बो प्रेम के वरदान ... उनके रोम रोम से बरसती कृपा ...और कानों में अमृत घोलते उनके मधुरतम शब्द ...

हे देवानुप्रिय तीर्थ ! ...क्या तुम सभी व्यसनों का त्याग कर चुके हो ?

हाँ त्रिलोकीनाथ ...आप तो अन्तर्यामी हो ...सब जानते ही हो प्रभु ...

सुनो तीर्थ ...बाहर के इन व्यसनों से तो तुम मुक्त हो ....किन्तु भीतर के व्यसनों से मुक्त हो क्या ? शरीर से जुड़े इन व्यसनों का तो तुमने त्याग कर दिया ...पर क्या तुम्हारी आत्मा से जुड़े व्यसनों का त्याग कर पाए क्या ?

क्या भगवन् .....आत्मा से जुड़े व्यसन ?

हाँ तीर्थ ....तुम गुटखा, सिगरेट, अफीम, भाङ्ग, शराब आदि सभी नशीले पदार्थों का त्याग करके प्रत्यक्ष व्यसनमुक्त तो हो चुके ...लेकिन तुम्हारी आत्मा तो अभी भी क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह ...इन सभी व्यसनों में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से लिप्त ही तो है ...तुम्हारी आत्मा इनके नशे की गुलाम बनी हुई तो है ...

तुमने गुटखे का त्याग तो कर दिया ...पर चिन्तन करो ...क्या तुम्हारी आत्मा क्रोध रूपी गुटखे का सेवन तो नहीं कर रही ? ...जिस तरह गुटखे का नशा इंसान को बेचैन कर देता है ...और धीरे-धीरे इंसान को अपने चंगुल में जकड़ कर ...कैसर जैसे भयानक रोगों के द्वार

पे पटक देता है ... वैसे ही तुम्हारे क्रोध के व्यसन ने तुम्हारी आत्मा को अनेक बार बेचैन करके भयानक दुर्गतियों के द्वार पर ले जा छोड़ा है ...

तुमने सिगरेट-बीड़ी यानी धूम्रपान का त्याग तो कर दिया ... पर क्या तुम्हारी आत्मा आज भी मान के विषैले धूम्रपान में तड़प नहीं रही है ? इस अहंकार के व्यसन ने ... इसके घनघोर काले धुएँ ने तुम्हारी आत्मदृष्टि को ही बन्द कर दिया ... जिससे तुमने दूसरों को कभी कुछ समझा ही नहीं ... धूम्रपान तो स्वास्थ्य और पैसों को ही राख करता है ... किन्तु इस मान के नशे ने तुम्हारे अनेक भवों की पुण्यवानी को ही राख कर दिया...

तुम्हें लगता है कि तुमने अफीम-गांजा का त्याग कर दिया है ... पर सोचो क्या आज भी तुम्हारी आत्मा माया के नशे में बेभान तो नहीं है ? अफीम-गांजे का नशा तो कुछ समय में उतर सकता है ... लेकिन तुम्हारी आत्मा पर से इस माया का नशा तो ... अनन्त भवों से चढ़ा हुआ ही है ... यदि माया नहीं की होती तो अनन्त काल ... तिर्यज्ज्व गति में जन्म-मरण नहीं करना पड़ता...

भाङ्ग की आदत इंसान के सोचने की शक्ति को प्रभावित कर देती है ... तुम कहते हो कि तुम भाङ्ग का सेवन नहीं करते ... पर क्या तुम जानते हो कि लोभ की भाङ्ग ने ... तुम्हारी आत्मा की चिन्तन शक्ति को किस हद तक प्रभावित कर दिया है ? ... भाङ्ग का नशा तो कुछ घण्टों में भी उतारा जा सकता है, किन्तु ... अनन्त भवों के बाद भी तुम्हारी आत्मा से लोभ का नशा उतरा नहीं है ... और यदि तुम्हारा लोभ छूट गया होता ... तो तुम्हारा संसार भी छूट गया होता ... क्योंकि लोभ ही संसार है ...

हे तीर्थ ... तुम कहते हो कि तुम शराब का नशा नहीं करते ... पर तुम्हारी आत्मा इस मोह की शराब से ... इस मादक मदिरा से ग्रसित क्यों ? इस व्यसन से तुम्हारी आत्मा ... अनादि काल से हित अहित का सही

निर्णय ही नहीं कर पाई ... वो इस मोह में मदहोश होकर स्वयं के अस्तित्व को ही भुला बैठी है ... और जब तक इस मोह का नशा नहीं छूटेगा ... तब तक तुम शाश्वत घर को पा नहीं सकते ... मोह छूटेगा ... तो ही मोक्ष मिलेगा।

हे पुरुषोत्तम ! ... आपका कहना यथार्थ है ... मेरा संसार में होना ही यह सबूत है ... कि मेरी आत्मा इन व्यसनों की गुलाम बनी हुई है ... पर जब अनन्त भवों में अनन्त बार प्रयास करके भी ... मेरी आत्मा इन व्यसनों से छूट नहीं पाई .. तो इस बार कैसे सम्भव है ?

सुनो तीर्थ ... सिर्फ तुम्हारी ही नहीं बल्कि संसार में रही प्रत्येक आत्मा इन व्यसनों के बन्धन में है ... कोई कम तो कोई अधिक ... इन आत्मघाती व्यसनों के जाल से छूटना मुश्किल अवश्य है ... पर असम्भव कदापि नहीं ... मुश्किल है इसीलिए अनन्त आत्माएँ अभी भी संसार में लिप्त हैं ... और सम्भव है तभी तो अनन्त आत्माएँ संसार से मुक्त हैं।

हे कृपासिंह ! ... आपने अनन्त कृपा करके मुझे मेरे व्यसन रूपी बन्धनों का बोध कराया है ... अब और कृपा करके मुझे इन बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग भी बताइये ... मैं आपके बताये मार्ग पर चलने का इच्छुक भी हूँ ... और उस पर चलकर ... मुक्ति मञ्जिल को पाने का उत्सुक भी हूँ।

सुनो तीर्थ... क्रोध का व्यसन तुम्हें चण्डकौशिक बना देता है और क्षमा तुम्हें गजसुकुमाल मुनि जैसा पावन बना देगी... अतः तुम क्रोध से मुक्त होने के लिए क्षमा की औषधि का सेवन करो ...

पूर्वकृत पुण्योदय से तुम भले ही बाहुबली बन जाओ ... लेकिन यह मान का व्यसन तुम्हे आत्मबली बनने नहीं देगा ... अतः आत्मबली बनने के लिए तुम विनय गुण को धारण करो ...

यह माया का व्यसन ही तुम्हारी काया का कारण है ... माया छूट जायेगी तो काया भी छूट जायेगी ... यदि भगवती मल्ली जैसी सरलता को धारण कर लोगे ... तो कभी महाबल जैसी माया करनी ही नहीं पड़ेगी ...

यह लोभ की भाङ्ग तुम्हे मम्मण बनाकर ...तुम्हें दुर्गतियों की कैदी बना रही है ...जब कपिल जैसा सन्तोष का सुरक्षा चक्र अपना लोगे ...तो लोभ का व्यसन भी ...तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा ...

और यह मोह की मदिरा ...तुम्हारी धर्म साधना पर पानी फेर रही है ...इस मोह के व्यसन से मुक्ति के लिए तुम अन्तर्मुखी बन जाओ ...तो तुम्हें निर्मोह निधान की प्राप्ति होगी और निर्मोह दृष्टिकोण से ...तुम्हें भी गौतम से महावीर बनने में देर नहीं लगेगा।

लेकिन हे तारणहार ...यह एक एक व्यसन ही जब इतना धातक है ...तो क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह ...इन पाँच-पाँच व्यसनों के जाल से मैं कैसे छूट पाऊँगा? कैसे स्वतन्त्र होगी मेरी आत्मा?

मुझे वत्स ...इन व्यसनों के जाल से छूटने की इच्छा का उत्पन्न होना ही ...आत्मा की स्वतन्त्रता की दिशा में पहला कदम है ...फिर इस इच्छा को दृढ़ संकल्प में बदलना होगा और ...तुम्हारा वह दृढ़ संकल्प पूरा होगा भावों की पवित्रता एवं सम्यक् पुरुषार्थ के साथ। ...और रही बात पाँच व्यसनों की ...तो इन पाँचों के लिए एक महाऔषधि ही पर्याप्त भी है और अचूक भी ...वो है जिनवाणी का पञ्चामृत...जो कि क्षमा, विनय, सरलता, निर्लोभता और निर्मोहता...इन पाँच

तरह के अमृत और अनन्त सद्गुणों से युक्त है ... ...जिसमें अहिंसा की शाश्वत खुशबू और सत्य का अलौकिक स्वाद निहित है ...जो अवतरित है जिनशासन के स्वर्णिम कलश में ...हे तीर्थ! ...तुम इस पञ्चामृत को ग्रहण करके ... आत्मघातक व्यसनों से मुक्त होने का पुरुषार्थ करो ...यहीं गुरुचरणों में समर्पित तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ उपहार होगा।

तहति प्रभो ...चरणों में झुक कर उठा ...लेकिन अहो! आश्चर्य ...प्रभु तो दिख नहीं रहे ...उनके स्थान पर गुरुदेव की झलक अवश्य दृश्यमान हो रही है ....धन्य हुआ मैं ...परमात्मा और महात्मा के दर्शन ...वीरा और हीरा का सानिध्य ...कहाँ मैं उपहार देने का सोच रहा था ...और यहाँ ऐसे पावन उपहार प्राप्त हो गए ... गुरुदेव की वो मनमोहक मुस्कान और आँखों से बरसती असीम कृपा ...जैसे प्रबल प्रेरणा दे रही है ...इस अक्षय तृतीया पर जिनशासन कलश ...से जिनवाणी पञ्चामृत का पान करके ...क्रोध आदि व्यसनों से शाश्वत मुक्ति के दृढ़ संकल्प के साथ ...अक्षय सिद्धि के लिए ... वीर से महावीर ...और तीर्थ से तीर्थदूकर बनने के लिए।

- 'जिनशासन' श्री 102, वीतराणस्टीटी, जैसलमेर  
बाईपास रोड, जोधपुर-342008 (राज.)

## सबको नमस्कार है

डॉ. रमेश 'मर्यंक'

आज जो भी लड़ रहे हैं कोरोना की वैश्विक महामारी से काली-सफेद-पीली फूँद की बीमारी से और जो जुटे हैं बचाने के लिए संक्रमण की शृङ्खलाओं को तोड़ने हेतु जो भी जुटा रहे हैं राहत सहयोग पीड़ितों को बचाने के लिए वे सभी योद्धा हैं, सबको नमस्कार है।

## झील का पानी

मैं रहा लॉकडाउन में  
मेरी तरह कई रहे घरों के भीतर,  
इसी बीच आवाजाही रुकने से  
कुछ तो अच्छा हुआ  
अन्य स्थानों के साथ-साथ  
आनासागर अजमेर,  
झीलों की नगरी उदयपुर में  
पिछोला झील का पानी साफ हुआ।

- श्री 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

## पर्यावरण-प्रदूषण एवं जैनधर्म में उसका निवारण

सुश्री डिम्पल जैन एवं प्रो. बीना अग्रवाल

**आज** के युग में पर्यावरण केवल विज्ञान का नहीं बल्कि आम जनता की चर्चा का विषय बन गया है। आज का मानव कम्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल की चमचमाती दुनिया में तेज़ी से बढ़ रहा है। एक तरफ वह विकास की श्रेणी चढ़ रहा है तो दूसरी तरफ विनाश की घंटी बज रही है। जिस प्रकृति ने मानव को सारी आवश्यकताएँ प्रदत्त की है उसी पर वह प्रहार कर रहा है। वह पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है और समस्याओं को आमंत्रण दे रहा है। इन समस्याओं से निपटने के लिए तथा इनके कार्यक्षेत्र को कम करने के लिए सुधार नीतियाँ व कार्यक्रम आवश्यक होते हैं।<sup>1</sup>

प्रकृति और मनुष्य का बहुत गहरा सम्बन्ध है। आदिकाल से ही मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यावरण द्वारा करता आ रहा है, लेकिन औद्योगिक क्रान्ति के बाद प्राकृतिक संसाधनों का जिस गति से दोहन किया गया है मानव के सामने समाप्त हुए संसाधनों की भरपाई करना असम्भव हो गया है। इसलिए जीव-जन्तुओं एवं मानव स्वयं को बचाने के लिए पर्यावरण के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अति आवश्यक हो गया है।<sup>2</sup> यदि इनके बीच में सन्तुलन रहे तो मनुष्य का जीवन सुरक्षित हो जाए। सन्तुलित पर्यावरण मानव को दीर्घ जीवन प्राप्त कराता है। प्रकृति ने मनुष्य को जीने की कला सिखाई। पर मनुष्य इसके साथ अन्याय कर रहा है और इसे इतना दूषित कर रहा है कि साँस लेना भी दुर्लभ हो रहा है। आज हम देख रहे हैं कि मनुष्य ने अपनी लाइफ स्टाइल बदल ली, वह अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रकृति के संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। इन आकांक्षाओं पर अंकुश न लगने से मनुष्य की

मानसिकता दूषित हो रही है। व्यसन और फैशन के नाम पर मनुष्य ने अपनी वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीकों से पूरे पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है।

पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली निम्नलिखित स्थितियों को जानना आवश्यक है।

### पर्यावरण प्रदूषण के कारण

1. पर्यावरण प्रदूषण फैलाने में जनसंख्या सबसे बड़ा कारण है। जनसंख्या अधिक होगी तो पर्यावरण शोषण अधिक होगा। जनसंख्या वृद्धि अब जनसंख्या विस्फोट का रूप ले चुकी है। इसे नियन्त्रित करने की नितान्त आवश्यकता है जिससे पर्यावरण गुणवत्ता रखी जा सके तथा मनुष्य की गुणवत्ता भी रह सके।<sup>3</sup>
2. पेड़-पौधों तथा जंगलों को काटकर वनस्पति की हिंसा की जा रही है, तो ऑक्सीजन मिलने का सवाल ही नहीं रह जाता। यदि जंगलों को नहीं काटा जाए तो बहुत सारी जमीन को मरुस्थल होने से बचाया जा सकता है। यह सामान्य रूप से स्वीकार कर लिया गया है कि प्रत्येक देश का 33 प्रतिशत स्थल भाग जंगल रहना चाहिए। यह पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है। लेकिन जनसंख्या के दबाव में जंगल काटकर खेत बनाए जा रहे हैं। इस प्रकार अब हमारे देश का 19.47 प्रतिशत भाग ही जंगल रह गया है। इसके कारण भू-अपरदन, सूखा, रेगिस्तान का विस्तार व कई अन्य प्राकृतिक आपदाएँ हमें झेलनी होती हैं।<sup>4</sup>
3. वनस्पति तथा उसके आधार पर पलने वाले पक्षी, कीड़ों की हिंसा होने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। कीड़े खेती को खराब कर देते हैं तो कीटनाशक

- दवाइयों का प्रयोग भी पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा है। वैज्ञानिकों ने भी यह खोज लिया है कि कीटनाशक से बहुत सारी बीमारियाँ फैल रही हैं और पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डाल रही हैं। केंचुआ आदि जीव नष्ट हो गए, जो भूमि को उपजाऊ बनाते थे।
4. कारखानों, वाहनों, शस्त्रों के प्रयोग-प्रशिक्षण से बहुत सारा कचरा अंतरिक्ष में फैल रहा है। सुविधावाद-विलासिता के कारण ओजोन लेयर का छेद बढ़ने से खतरा पैदा हो रहा है। आज जो वायवीय प्रदूषण बढ़ा है उससे कहीं कहीं तो वर्षा भी तेजाब जैसे जहरीले पदार्थों की होने लगी है। अशुद्ध वायु का घातक प्रभाव जीवों पर होता है, क्योंकि अनेक अवांछित तत्त्व शरीर में वायु के साथ प्रवेश कर जाते हैं, जिनका प्रभाव स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है।<sup>5</sup> नए-नए अनुसंधानों के फलस्वरूप कई जीव बेघर हो जाते हैं और मानव अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। वायु सभी जीवों एवं पेड़-पौधों की प्राण है। यदि वायु प्रदूषित होगी तो वर्षा एवं मौसम का संतुलन भी और बिगड़ा जाएगा।
  5. पुराने लोगों की अपेक्षा नए युग का मानव प्रकृति के साथ नहीं जी रहा है। अतः पर्यावरण प्रदूषण का एक मुख्य कारण 'कृत्रिम साधन' बन गया है। गर्मियों में ए. सी.आदि का प्रयोग करने से उसकी सहनशीलता कमजोर हो गयी है और अनेक बीमारियों से ग्रसित हो गया है। दूसरी ओर ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है। वातानुकूलित कार, मॉल, वातानुकूलित घर आदि का प्रचलन जरूरत से ज्यादा हो गया है। व्यक्ति यह महसूस ही नहीं करना चाहता कि गर्मी का ताप क्या है?
  6. नदी, समुद्र, तालाब, वर्षा इत्यादि सब प्रकृति की देन है, जिन पर सबका अधिकार समान है। नदी का पानी मानव के लिए बहुत उपयोगी है लेकिन आज हम इनका क्या हाल कर रहे हैं? सारा कूड़ा-कचरा नदियों में बहा डालते हैं। मूर्तियों का विसर्जन करते हैं। क्या हमने कभी इस बात पर ध्यान दिया कि मूर्तियों का केमिकल पानी में मिल कर उसे कितना अशुद्ध बनाता होगा। अनेक कारखानों का कचरा नदियों में छोड़ा जाता है। इस तरह हम स्वयं पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। मरुभूमि के निवासी जल की बूंद-बूंद को संचित करते हैं। आज यह स्थापित हो चुका है कि हमारे प्राचीनकाल के ऋषि मुनि तथा धर्मग्रन्थ कितना वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते थे। उनके द्वारा जल का औषधीय महत्व बतलाते हुए 'अमृत' कहना कितना प्रासंगिक था।'
  7. वायुमण्डल में ओजोन का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि यह एक रक्षा आवरण का कार्य करती है। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे लिए सूर्य-रश्मियाँ प्राणदायिनी हैं, किन्तु उसकी अतिशय ऊर्जा वाली किरणें घातक भी हैं जिन्हें हम अल्ट्रावायलेट रेडियेशन्स कहते हैं। यदि ये किरणें धरातल तक पहुँच जाती हैं तो तापमान इतना अधिक हो जाता है कि किसी भी प्रकार का जीव भूतल पर संभव नहीं हो पाए।<sup>7</sup> पृथ्वी के लगभग 25 किमी ऊपर ओजोन परत है जो हमें सूर्य की घातक किरणों से बचाती है, किन्तु ओजोन परत पर अब छेद हो गया है। यदि ये सीधी धरती पर आयेंगी तो प्राणिमात्र के लिए बहुत बड़ा संकट हो सकता है।
- अनु परीक्षण-विस्फोट, कल-कारखानों, वाहनों आदि की विकाराल ध्वनि में पर्यावरण की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। पेड़ों को काटकर, वायुमण्डल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ाकर, ग्लोबल वार्मिंग ने चेतावनी दे दी है। यही नहीं मनुष्यों पर घातक बीमारियों ने हमला बोल दिया है। हम मानवीय क्रियाओं के साथ प्राकृतिक नियमों का सामंजस्य करने तथा क्रियाविधि को उन्नत बनाने की क्षमता रखते हैं। इन स्थितियों में हमारी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर ही हमारे आर्थिक लाभ एवं

जीवाधिकार को सम्बल प्रदान कर सकती है।<sup>8</sup> मनुष्य जीवन बहुत पुण्यवानी से प्राप्त हुआ है। सहानुभूति एवं संयम के महत्व को समझकर यदि हम कार्य करें तो निश्चित ही पर्यावरण के साथ प्रेम का इज़्जहार हो सकता है। जैन धर्म-दर्शन में प्राणी जगत व पौदलिक जगत का सम्भवतः सर्वाधिक चिन्तन हुआ है, इसलिए इसे विश्व दर्शन भी कहा जा सकता है। जैन जीवन दर्शन व जीवन शैली में पर्यावरण चेतना इस तरह मिश्रित है, अन्तर्निहित है कि इसके बारे में अलग से चिंतन करने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए जैन धर्म संसार का वह धर्म है, जिसमें पर्यावरण सुरक्षा अपने सर्वोत्कृष्ट रूप में प्रतिष्ठित हुई है।<sup>9</sup>

#### जैन धर्म में निवारण-उपाय

जैन धर्म के जो भी सिद्धान्त है, उन्हें अपनाकर हम वास्तव में इस प्रकृति के रौद्र रूप को कम कर सकते हैं। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त के द्वारा अपनी मनोवृत्ति को वश में रख सकते हैं। जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर महावीर ने संयम जीवन को बहुत महत्व दिया है। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन में कहा भी है-

धर्मो मंगलमुक्तिकृद्धं, अहिंसा संजमो तवो।

देवा वि तं नमसंति, जस्स धर्मे सया मणो॥<sup>10</sup>

दशवैकालिक सूत्र में शिष्य जिज्ञासापूर्वक पूछता है-

“कहं चरे, कहं चिट्ठे, कहमासे, कहं सए?

कहं भुंजतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ॥”<sup>11</sup>

समाधान में कहा है-

“जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए,

जयं भुंजतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ॥”<sup>12</sup>

जिस धर्म में चलने, खड़े रहने, बैठने, सोने, भोजन करने, बोलने आदि कार्य सावधानी या यतनापूर्वक करने के निर्देश हैं, उस धर्म का पालन करने से पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः ही सम्भव है। जैन धर्म में चौदह नियमों व बारह ब्रतों पर विशेष रूप से बल दिया

गया है। तीर्थकर महावीर स्वामी ने मनुष्य को पौदलिक लालसा हटाकर नियमों, ब्रतों की आवश्यकता बताई है जिससे जीवन मर्यादित हो जाता है। जब तक त्याग, प्रत्याख्यान नहीं करते तब तक संसार की सारी आरम्भ-समारम्भ की क्रियाएं लगती हैं। उपमा देते हुए कहा है कि जब ब्रत धारण कर लेते हैं तो समुद्र जितना पाप, बूद्ध जितना रह जाता है। उदलों के प्रति आसक्ति, मूच्छर्छ कम होती जाती है। यदि कोई पर्यावरण की चिंता करता है तो उसे चौदह नियमों, बारह ब्रतों पर ध्यान देना ही चाहिए। प्रकृति के साथ विकास के तात्पर्यको भी बदलना होगा। पाप के प्रवाह को वेग देने वाले आस्रव के द्वारों को बन्द करना नितान्त आवश्यक होता है। इन आस्रव द्वारों को बन्द करने के लिए जो उपाय किये जाते हैं, वे विरति रूप होने के कारण ब्रत कहे जाते हैं।<sup>13</sup>

महावीर स्वामी ने कहा-‘इच्छाओं का परिमाण करो।’ पर्यावरण की समस्याओं को पैदा करने में सबसे बड़ा हेतु है मनुष्य की इच्छाओं का विस्तार। इच्छा और भोग ने हिंसा को बढ़ावा दिया। उसकी जीवन शैली ने महाप्रलय की ओर धकेला और आज वह शुद्ध प्राणवायु व शुद्ध पानी के लिए तरस रहा है तथा अनेक बीमारियों का शिकार बन गया है। इच्छाएँ आकाश को छू रही हैं और पर्यावरण को विनष्ट कर रही हैं।

भगवान महावीर ने प्रदूषण के बचाव का जितना प्रबन्ध किया है उतना शायद कोई नहीं कर पाया है। उन्होंने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति और छोटे से लेकर बड़े चलने-फिरने वाले सभी त्रस जीवों की हिंसा से विरत होने का उपदेश दिया। सचमुच जीवन की इतनी सूक्ष्मता तक कोई भी धर्म नहीं जा सका है। हिंसा का त्याग करने के लिए साधक को मनन करने का उपदेश है। अर्थात् वनस्पति आदि में जीव है उनको भी अपने ही समान पीड़ा होती है इस विषय पर मनन-चिंतन करना चाहिए।<sup>14</sup>

प्रभु महावीर ने सूक्ष्म से सूक्ष्म हिंसा का भी

निषेध किया है जो पर्यावरण संतुलन की जबरदस्त वकालत है। मिट्टी को क्षति-विक्षत नहीं करना, पानी की एक-एक बूँद में असंख्य जीव बताकर उसे व्यर्थ बर्बाद नहीं करना, अग्नि का व्यर्थ में आरम्भ-समारम्भ नहीं करना, वायुकाय जीवों के प्रति दयाभाव रखना, व्यर्थ में कूलर पंखे, ए.सी. आदि का उपयोग नहीं करना, लाइट का अनावश्यक उपयोग न कर सूर्य की रोशनी का सदुपयोग करना, पत्ते, फूल, फल, साग-सब्जी इत्यादि में असंख्य जीव होने के कारण इन सबका विवेकपूर्वक कम से कम आरम्भ करना सचमुच पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण साधन है।

आचारांग सूत्र में कहा गया है-'एयावंतं सञ्चावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवति' अर्थात् लोक में सब कर्म समारंभ जानने योग्य और त्यागने योग्य है। अनर्थ दण्ड-विरमण तथा भोगोपभोग विरमण व्रत की अपनी एक विशिष्ट भूमिका है। यदि महावीर की इस दृष्टि को समझ लिया जाये तो मनुष्य का जीवन अनुशासित हो जाएगा और समस्याओं के समाधान के रूप में उभरेगा।

जैन धर्म के आदि तीर्थकर ऋषभदेव से लेकर अन्तिम तीर्थकर भगवान महावीर तक सबने प्रकृति के साथ संतुलन रखने हेतु तथा पृथ्वीकायिक आदि समस्त जीवों के साथ परस्पर उपकार करने हेतु संयम का उपदेश दिया। उन्होंने जैसे जीव के प्रति संयम रखने की प्रेरणा दी है, वैसे अजीव (जड़ प्रकृतिजन्य वस्तुओं या पुद्गलों) के प्रति भी संयम रखने की खास प्रेरणा दी है।

जैन धर्म में निरूपित 17 प्रकार का संयम पर्यावरण संतुलन बनाने में समर्थ है। भगवान महावीर ने जीव और अजीव दोनों प्रकार के पदार्थों के प्रति 17 प्रकार के संयम बताए हैं-

- |                     |                      |
|---------------------|----------------------|
| 1. पृथ्वीकाय संयम   | 2. अप्काय संयम       |
| 3. तेजस्काय संयम    | 4. वायुकाय संयम      |
| 5. वनस्पतिकाय संयम  | 6. द्वीन्द्रिय संयम  |
| 7. त्रीन्द्रिय संयम | 8. चतुरिन्द्रिय संयम |

- |                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| 9. पंचेन्द्रिय संयम | 10. अजीवकाय संयम    |
| 11. प्रेक्षा संयम   | 12. उपेक्षा संयम    |
| 13. अपहृत्य संयम    | 14. प्रमार्जना संयम |
| 15. मन संयम         | 16. वचन संयम        |
| 17. काय संयम        |                     |

सभी तीर्थकरों ने पृथ्वीकाय आदि 9 प्रकार के जीवों के प्रति संयम रखने की, उन जीवों को कष्ट न हो, त्रास न हो, ऐसी प्रवृत्ति करने की प्रेरणा दी है। अजीव काय संयम में प्रकृतिजन्य सभी निर्जीव पदार्थों के प्रति संयम की प्रेरणा दी है। प्रेक्षा, उपेक्षा, अपहृत्य एवं प्रमार्जनारूप संयम में प्रत्येक प्रवृत्ति करते समय देखें, उसके परिणाम का विचार करें, जिस प्रवृत्ति में अधिक जीव हिंसा हो, जिससे अपने स्वास्थ्य, परिवार, संघ, राष्ट्र, समाज को हानि हो, वैसी प्रवृत्ति की उपेक्षा करें। मन में दूसरों को सताने, उत्पीड़न करने का विचार न करने, वचन से क्रोधादिपूर्वक आघातजनक वचन न बोलने, काया से हिंसाजनक कार्य नहीं करने का उपदेश दिया गया है।

इस प्रकार यदि हमारे विचार, व्यवहार और आचार में सरलता हो एवं हम अनुशासन को स्वीकार करें तो निश्चित ही आने वाला कल हम सबके लिए सुन्दर, स्वच्छ व प्रदूषण रहित होगा।

पर्यावरण की सुरक्षा ही हमारी सुरक्षा है।

जैन धर्म की सुरक्षा ही हमारी सुरक्षा है॥

हमें व्यक्ति सुधार से समाज सुधार का प्रयत्न करना होगा। छोटे से छोटे क्रियाकलापों से पर्यावरण संतुलन की शुरूआत करनी होती। जैन धर्म के मार्ग पर चलकर प्रकृति के साथ-साथ सम्पूर्ण जगत् को बचाया जा सकता है।

**पर्यावरण शुद्ध करने का दायित्व हमारा  
मौसम पहले जैसा आए बदले लक्ष्य नज़ारा॥**

#### संदर्भ ग्रन्थ

- जी.आर.मदन, भारतीय सामाजिक समस्याएँ, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2000, पृ. 3

2. मीणा, वेद प्रकाश, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन, ज्योति प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ. 96
3. गुप्ता, चाँदमल (डॉ.), शर्मा, रेनु (डॉ.), पर्यावरण शिक्षा, आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2014, पृ. 65
4. गुप्ता, चाँदमल (डॉ.), शर्मा, रेनु (डॉ.), पर्यावरण शिक्षा, आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2014, पृ. 61
5. शर्मा, दीपि (डॉ.), कुमार, महेन्द्र (डॉ.), पर्यावरण संरक्षण विधि एवं न्यायिक प्रक्रिया, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009, पृ. 60
6. शर्मा, ओम प्रकाश, पानी, पर्यावरण एवं पेड़ पौधे, ज्योति पब्लिकेशन्स, बीकानेर, 2010, पृ. 22
7. के.के. पांचाल (डॉ.), जलवायु विज्ञान, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007, पृ. 4
8. शर्मा, मालती (डॉ.), पर्यावरण मानव संसाधन और विकास, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 1
9. जैन, पी.सी. (डॉ.), जैन धर्म एवं संस्कृति का भारतीय संस्कृति को योगदान, जैन अनुशीलन केन्द्र, जयपुर,
- 2005, पृ. 119
10. बांठिया, श्री घेरचन्दजी (अनुवादक), दशवैकालिक सूत्र, श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर, 2003, पृ. 1
11. बांठिया, श्री घेरचन्दजी (अनुवादक), दशवैकालिक सूत्र, श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर, 2003, पृ. 55
12. बांठिया, श्री घेरचन्दजी (अनुवादक), दशवैकालिक सूत्र, श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर, 2003, पृ. 56
13. आचार्य नानेश, जिणधम्मो, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर, 2004, पृ. 555
14. अमर मुनि, आचारांग सूत्र, पद्म प्रकाशन, पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली, 2010, पृ. 52  
-डिम्पल जैन, जैन अनुशीलन केन्द्र,  
- प्रो. बीना अग्रवाल, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

## जीवन का अर्थ समझ में आया

डॉ. रेनू सिरोट्टर कुमुदिनी

शिक्षक बनकर आया

कोरोना, जीवन सार सिखाने को

उड़ रहे थे जो अम्बर पर,

उन्हें जमी पर लाने को

जीवन अर्थ समझ में आया, चन्द दिनों की जिन्दगानी नाम प्रसिद्धि धन और दौलत, छूटेगी सारी निशानी नहीं रहा अमर कोई भी, आये हैं सब जाने को॥1॥  
कोरोना है अजब पहली, सबको घर में बिठा दिया राजा हो या रंक सभी को, जीवन का सच दिखा दिया कुदरत ने भी खेल रखाया, सबको संग मिलाने को॥2॥  
पवन सुगन्धित निर्मल है जल, पथ शहर के शान्त हुए घर में कैद सभी मानव औ, पंछी सब आज्ञाद हुए इच्छाएँ सब मन में समाई, चाह नहीं कुछ पाने को॥3॥

परिवार के संग सभी है,

मतलब समझा प्यार का

प्रेम स्नेह से करे सामना,  
कोरोना के बार का  
सात्त्विक भोजन, सरल हुए मन,  
भूले बाहर जाने को॥4॥

घर में रहे सुरक्षित सब जन,  
स्वस्थ और खुशहाल रहे  
लॉकडाउन के नियम पाले,  
हाथ स्वच्छ हो ख्याल रहे  
मुख पे मास्क, हरे कोरोना,  
संकल्प है इसे मिटाने को॥5॥

महावीर के सिद्धान्तों पर दुनिया,  
अब ये अमल करें  
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह  
और ब्रह्मचर्य पर मनन करे  
लिखा कलम ने गीत कुमुदी,  
राह नई दिखलाने को॥6॥

उदयपुर (राजस्थान)

## Hindu Marriage : A socio-religious cum ethical Institution

*Dr. I. M. Khicha*

The arrangement of marriage in a social frame work is one of the basic need of mankind in our society. Before marriage, an individual (man or woman) lives free in his or her day to day conducts known as 'Bachelor' but after getting married, both man and woman have to be responsible and co-operative with each other honouring the inner wishes regarding their family matters. Both carry the intimate and regardful attitude towards each other in their worldly livings. One meaning of the word marriage is to "Carry". It means the man (husband) carries the woman (wife) and the wife carries the husband. It is permanent process of carrying each other through out their relations.

The social Hindu Pandits having expert views on Hindu marriages consider the provision of marriage in a Hindu society as a socio-religious cum ethical bondage to share sincerely the duties and responsibilities of their family. This way the institution of marriage unites both man and woman known as husband and wife since time immemorial.

On the other hand, modern experts in marriages are of the views that the core reason of marriage is sexual gratification which gets elaborated by exotic tendency (प्रणय इच्छा) generally visible on normal human beings. There may exceptionally be a very few people in the society who don't like to be interested in inviting family bondage for their own life affairs and want to remain unmarried (single) either to lead sanity-life or may live to serve the society or nation as a Life-Donor or may choose to remain unmarried for high academic pursuits to achieve exceptional expertise in the wide field of science, technology or space

discoveries like Late Shri APJ Abdul Kalam. This denotes that marriage is not compulsion for any man or woman. It is a matter of free choice before them. As per these modern experts, the profound reason of marriage is sexual desire prevailing in both souls (man & woman). In Hindu social frame work the contact (or contract) of marriage is treated basically to be permanent bondage which should last till life or till death. This is more correct in Indian context.

### Socio-religious cum ethical bondage

Why we call it such a bondage in our Hindu social framework? The provision of marriage is treated as an effective and necessary mean of the propagation of ideal moral conduct in between man and woman in the civilized society which totally prohibits and discourage ugly conduct of mankind and roots out all sorts of barbarism in the society. Here Hindu marriages encourage, sacrifice, renunciation and real inner love and affection among the people living in a society. To produce children and to encourage or nurture lineage (सन्तति क्रम) are also the purpose and marriages but this may be secondary purpose and may be called the outcome of marriages.

### Present day tendency

In both higher and lower classes and in rich and poor persons the socio-religious cum ethical bondages are getting loose and weak on account of lack of strong faith and absence of deep and foresighted thinking about the moral values. Mostly the people lack in social maturity and social responsibility. Again bitterness and failures of marriages are being witnessed in mutual relations between the married couples. Dissimilarities relating to age, education, nature, temperament, physical and

mental health, wealth and weak moral convictions, play negative and adverse role. Again anxiety, suffering, intolerance, despair, apathy, negative thinking and shallow taste also play their own role in weakening the marriage bondage. All these undesirable factors result in breakdown and separation of the marriage relations which results in putting their children and family prestige in despair, distress and grave stress. But this is not very common. It happens in exceptional cases only.

#### **Marital disorder**

In present days, the Hindu marriages have become a difficulty preposition and are taking the shape of confusion and complication. The undesired and unnecessary rituals, traditions, customs, etc. are being

followed for the sake of false honour and prestige resulting in unfair competition. The parents spend money on weddings beyond their financial capacity which brings heavy burden of indebtedness especially on people belonging to middle and lower classes who hardly manage both meals. This requires to be controlled. This would help and enhance the wedding bliss and would protect the real interest in wedding in totality. The young boy and girls desirous to marry and wish to progress and to make their future in 21st century must dare to come forward and honour the ideal values of Hindu marriages. Their valued education and sincerity towards basic socio-cultural and moral norms can bring such a required change in reality..

-Beawar, Ajmer (Rajasthan)

### **कहती है हमको महावीर वाणी**

**श्री मोहन कोठारी 'विन्द्र'**

कहती है हमको महावीर वाणी,  
कर्मों की सत्ता होती है भारी,  
समझ गये तो, सम्भल जाओगे,  
आई है देखो विपदा भारी।

कहती है हमको, महावीर वाणी.....॥टेर॥

विपदाओं की, इन घड़ियों में,  
सूझबूझ से, काम है लेना,  
संकट गहरा जाये भी तो,  
धैर्य अपना तुम मत खोना।

धर्म हमारा है रखवाला,  
खिलती रहे बस धर्म की क्यारी,

कहती है हमको, महावीर वाणी.....॥1॥

बरसों, बरसों के बाद में, ऐसा संकट भी आता है,  
अस्त-व्यस्त कर देता जीवन, नया सबक दे जाता है।  
वीर बनकर सब सहना है, टल जायेगी आफत सारी,

कहती है हमको, महावीर वाणी.....॥2॥

घबराने से है नहीं फ़ायदा,  
चिन्ताओं का बोझ बढ़ेगा,  
समझावों से गर जीना आया,  
अपने मन में शौर्य जगेगा।

अपने घरों में, कैद हुए सब,  
कुदरत की है लीला न्यारी,  
कहती है हमको, महावीर वाणी.....॥3॥

जब जब पाप बढ़ा धरती पर,  
महामारी तब तब आई है,  
हाहाकार मचा दुनिया में,  
जनता सारी घबराई है।

बहुत सहा है इस धरती ने,  
पड़ गई है अब कुदरत भारी,  
कहती है हमको, महावीर वाणी.....॥4॥

-जनता सराई सेन्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,  
स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

## साहित्यकार, संघ हितैषी श्री सम्पतराजजी चौधरी

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

विचार एवं आचार की सम्पत्ति से सम्पन्न, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष, परामर्शदाता, संघ के परम हितैषी, साहित्य-रचना के प्रति सन्नद्ध आदरणीय श्री सम्पतराजजी चौधरी का 23 मई, 2021 को देवलोक गमन होने से संघ की अपूरणीय क्षति हुई है। बचपन से ही अपने पिता श्री भैरुलालजी चौधरी के साथ वे पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दर्शनों के लिए जाया करते थे। उन्होंने धर्मनिष्ठा एवं संघनिष्ठा के संस्कार उसी समय अर्जित कर लिए थे। मूलतः पीपाड़ निवासी श्री चौधरी साहब चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट बनकर प्रतिष्ठित कम्पनी में कार्य करने हेतु दिल्ली आकर निवास करने लगे और यहाँ पर पटपड़गंज के वरदान अपार्टमेंट में रहने लगे। कम्पनी को उन्होंने पूर्णिष्ठा और लगन के साथ अपनी सेवाएँ प्रदान की। यही कारण है कि उन्हें सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी कम्पनी की ओर से पूर्ण बहुमान मिलता रहा।

विगत दो दशकों से आपने अपने जीवन का लक्ष्य स्वाध्याय एवं लेखन को बनाया। फलस्वरूप वे एक श्रेष्ठ कवि, लेखक, चिन्तक एवं समीक्षक बन गए।

स्वभाव से शान्त, सौम्य, उदार, सहदय श्री सम्पतराजजी चौधरी गुणग्राहक और सकारात्मक दृष्टि से सम्पन्न थे। वे पेचीदा समस्याओं का भी समाधान खोजने में सिद्धहस्त थे। परिवारजन इसका अनुभव करते थे। वे अच्छे विचारक और उदार सोच के धनी थे।

अपनी साहित्यिक यात्रा में श्री चौधरी साहब ने सर्वप्रथम 'मुक्ति का राही' काव्यकृति का प्रणयन किया, जिसमें अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का जीवन चरित्र गेय पदों में उकेरा गया है। उन्होंने इस कृति का आधार 'नमो पुरिस्वरगंधहत्थीण' कृति को बनाया।

'मुक्ति का राही' पुस्तक में दोहा छन्द मुख्य रूप से प्रयुक्त हुआ है। वे पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती के 13 दिवसीय संथारे के पश्चात् हुए विरह का अनुभव करते हुए लिखते हैं-

काल योग से वृक्ष भी गिर गया आज ज़मीन।

पक्षी सब क्रन्दन करे होकर आश्रय हीन॥

आस्था का आराध्य ढला, हुआ तीर्थ वीरान।

वरद हस्त से कौन हमें, देगा अब वरदान॥

नील गगन ही रो पड़ा, पवन गति भी बन्द।

धरती से जब चल पड़ा रूपकँवर का नन्द॥

इसके अनन्तर 'अहो भाव के आसुँ' भी आचार्यश्री हस्ती की गुण प्रशस्ति में लिखी गई काव्य रचना है, जिसमें उन्होंने आचार्यश्री हस्ती के दिव्य गुणों की मार्मिक अभिव्यञ्जना की है। 'गंध हस्ती' विशेषण के सम्बन्ध में वे लिखते हैं-

हे पुरुषों में गंध हस्ती !

तुम साधना के एक ऐसे महावृक्ष थे

जिसका मूल वैराग्य था,

जिसका स्तम्भ श्रद्धा थी,

तुम ज्ञान के जल से उसका सिज्जन करते थे

जिसमें चारित्र की शाखाएँ फैलती थीं,

प्रेम के पात लगते थे और

शुभ भावों के फूल खिलते थे।

भक्तजन ऐसे वृक्ष की छाया में

शीतलता प्राप्त कर

शुभ भावों की गन्ध लेते थे और

बोधि के फल खाते थे।

कवि की ऐसी अद्भुत रचनाएँ निश्चित ही उनके एक श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित करती हैं। पूज्य

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का भी उनके जीवन पर प्रभाव रहा। जिसके कारण वे अत्यन्त श्रद्धासिक्त रहे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने कृपा कर उन्हें समय-समय पर अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की अप्रकाशित काव्य रचनाएँ सौंपी। श्री सम्पत्तराजजी चौधरी ने उन रचनाओं को गुरु का प्रसाद समझ कर सम्पादन एवं विवेचन हेतु सहर्ष स्वीकार किया। पूर्ण दत्तचित्त होकर उन रचनाओं से सम्बद्ध साहित्य का अध्ययन किया एवं फिर एक-एक कृति पर जो विवेचन लिखा वह उन कृतियों की मूल्यवत्ता एवं उपादेयता का सम्वर्द्धन करता है। इन्हें पढ़कर पाठक को एक अद्भुत आनन्द की प्राप्ति होती है, इनमें उल्लेखनीय है—‘वीर गुण गौरव गाथा।’ जिसमें पूज्य आचार्य श्री हस्ती के द्वारा प्रभु महावीर के सम्पूर्ण जीवन को काव्य में 578 पदों में निबद्ध किया गया है। श्री चौधरी साहब ने जैनधर्म का मौलिक इतिहास भाग-1 एवं कतिपय अन्य ग्रन्थों को आधार बनाकर इस काव्यकृति में रंग भर दिया। हर पद के कथानक को उन्होंने अपने विवेचन में सरस ढंग से प्रस्तुत करते हुए भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को निबद्ध कर दिया। पूज्य आचार्य श्री हस्ती के द्वारा गहन शोध और अध्ययन के पश्चात् जिस वीर गुण गौरव गाथा को काव्यबद्ध किया गया था वह चौधरी साहब के द्वारा सुन्दर विवेचन के साथ जन-जन के लिए सुलभ कराया गया है।

इसी प्रकार ‘महामुनि स्थूलभद्र’ के कथानक को पूज्य आचार्यश्री हस्ती के द्वारा लावणी, राधेश्याम दोहा एवं गीत के माध्यम से 75 पदों में प्रस्तुत किया गया है। यह बड़ा ही रोचक कथा काव्य है। श्री चौधरी साहब ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से इस काव्य कृति को भी विवेचन के माध्यम से विस्तार प्रदान किया है तथा पाठक एक साथ इस कथानक के रहस्य को हृदयंगम कर-

सकता है।

‘धर्म कथागीत’ पुस्तक में 8 चरित्र काव्य हैं जो लावणी एवं राधेश्याम दोहा में निबद्ध हैं। इसमें नमिराकृष्णि, हरिकेशबल मुनि, भृगुपुरोहित, राजर्षि संयति, जयघोषमुनि, आर्य प्रभव, महाराजा उदायन और विजयसेठ-विजया सेठानी के कथानक निबद्ध हैं। इन रचनाओं में भी श्री चौधरी साहब ने विषय-वस्तु के विवेचन में पाठकों के लिए विपुल सामग्री प्रदान की है।

इस प्रकार की साहित्य साधना के साथ उन्होंने मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की काव्यरचना को ‘गौतम से प्रभु फरमाते हैं’ पुस्तक में विषय वर्गीकरण के साथ प्रकाशित किया है। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. से काव्य रचना में उनका प्रेरक एवं निकट का सम्बन्ध रहा। जीवन के अन्तिम पड़ाव में भी, उन्होंने अपनी चिरप्रतीक्षित अभिलाषा पूर्ण कर ‘विनयचन्द चौबीसी’ का विवेचन के साथ प्रकाशन कार्य पूर्ण कराया है। विनयचन्द चौबीसी उन्हें बहुत प्रिय थी। अपने पूज्य पिताजी श्री भैरुलालजी चौधरी के मुखारविन्द से बचपन से उन्होंने इसे काव्यबद्ध रूप में गाना सीखा तथा कुछ वर्षों पूर्व गेय रूप में कुछ कैसेट भी तैयार करायी थी।

उल्लेखनीय है कि उनकी अमर कृति ‘मुक्ति का राही’ पुस्तक का संस्कृत पद्यानुवाद भी हो चुका है तथा शीघ्र ही यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है। श्री चौधरी साहब ने अपनी समस्त पुस्तकों का प्रकाशन अपने मित्र डॉ. आर. पी. आर्य की प्रेस इण्डियन मेप सर्विसेज, जोधपुर में बड़ी विश्वस्त रीति से कराया है। आर्य साहब ने भी उसे बड़ी तन्मयता और स्नेह के साथ पूर्ण किया है। श्री चौधरी साहब ने विभिन्न मानकों का प्रयोग करते हुए रचनाओं सौन्दर्य प्रदान किया है। उनमें सर्वप्रथम का भाव इतना था कि वे स्वयं उन पुस्तकों का प्रूफ देखते थे एवं अधिकांश साहित्य का प्रकाशन का अर्थभार भी स्वयं ने ही बहन करते थे।

सबके साथ मैत्री एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार के कारण वे सभी के प्रिय थे। वे लेने में नहीं देने में विश्वास करते थे। अपनी आवश्यकताएँ सीमित रख कर उन्होंने अपरिग्रहीयता से जीवन जिया तथा जो कुछ अपने पास था, उसे संघ, समाज एवं मानवसेवा में लगाया।

विद्वानों का वे आदर किया करते थे। जहाँ भी उन्हें अवसर होता वे विद्वानों से मिलकर उनसे चर्चा करते थे एवं प्रमोद का अनुभव करते थे। एक माह पूर्व जब उनसे फोन पर बात हुई तो वे बोले—“मैं आपकी रचनाओं को बहुत ध्यान से पढ़ता हूँ एवं उनसे मैंने काफी कुछ सीखा है।” इस तरह का कथन उनकी विनम्रता को दर्शाता है। वे अन्य परम्पराओं के आचार्यों एवं सन्तों के भी सम्पर्क में रहे तथा उनके साहित्य का अध्ययन किया। ‘मुक्ति का राही’ पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ के आशीर्वचन एवं ‘अहो भाव के आँसू’ पुस्तक में सन्त चन्द्रप्रभ की टिप्पणी इसके निदर्शन है। उन्होंने

आचार्य विजयसुन्दररत्नसूरीजी के दिल्ली चातुर्मास में अनेक प्रवचन सुने। जहाँ कहीं कुछ मिलता, वे उसे ग्रहण करते रहते थे।

जब भी वे जोधपुर आते तब घर पर या जिनवाणी कार्यालय में अवश्य मिलने आते थे। प्रायः जोधपुर में उनका एक ऑटोरिक्षा निर्धारित था। वे उसी का दिनभर के लिए उपयोग करते थे। उनसे कई बार लम्बी चर्चा हुई। फोन पर भी वे अपनी रचनाओं की प्रगति एवं अन्य कई विषयों पर वार्ता करते रहते थे। ‘जिनवाणी’ पत्रिका के लिए उनका चिन्तन रहा कि इसका आकार बड़ा हो एवं यह रंगीन भी हो। उनके सुझाव पर सम्बन्धित प्रचारक मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा की सदिच्छा से जिनवाणी का आकार जनवरी 2017 से बड़ा हुआ। उनका प्रेम एवं आशीर्वाद मुझे सदा मिलता रहा। मेरे वे एक अच्छे प्रेरक हितैषी थे। उनकी पवित्र आत्मा को सादर नमन।

## आचार्यग्रन्थ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद दिवस पर

श्री प्रसन्नचन्द्र खण्डन

हस्ती पूज्य रा दीप उजियारा, हीरा पूज्य गुण गावणा।  
आपरी है महिमा अति भारी, संघ री खूब प्रभावना॥

धन्ना, भूधर, कुशलचन्द्रजी की, नित प्रति करलो धारणा।  
गुमान, रत्न, हमीर, कजोड़ी, विनय, शोभ गुण गावणा॥

शोभ शिष्य गजेन्द्र गणिवर, पट्ठधर हीरा सुहावणा।  
पूर्वाचर्या रे पद चिह्नाँ पर, संघ री कर रहा सारणा॥

मोतीलाल-मोहनी रा सुत है, भूमि पीपाड़ रा लाइला।  
यौवन-वय में ठोकर मारी, गाँधी कुल उजियावणा॥

बदि अष्टमी शुभ दिन आयो, चेत चेत संदेशा सुणायो।  
आदि जयन्ति योग सवायो, पुण्यवन्त रा जन्म बधावणा॥

विक्रम बीस-बीस में दीक्षा, कार्तिक मास मन भावणा।  
सुदी छठ रो योग है देखो, षट्काय की प्रतिपालना॥

हस्ती गुरु रे मुख कमल सुं,  
श्रमण दीक्षा री धारणा।  
छोटा लक्ष्मी खूब गड़ियो है  
संघ रा भाग जगावणा॥

वाणी पर सरस्वती आप विराजे,  
ज्ञान लक्ष्मी हृदय में धारणा।  
दृढ़-निय और ज्ञान किया से,  
शुद्ध संयम री पालणा॥

दर्शन से मन ‘प्रसन्न’ होवे, बन्दन संकट मिटावणा।  
मांगलिक से मार्ग मिल जावे, शेष कुछ नहीं माँगणा॥

कई शत वर्षों तप जीओ गुरुवर, संघ री है शुभकामना।  
चतुर्विध संघ की हो वृद्धि निरन्तर, जिनेन्द्र देव से प्रार्थना॥

-1, नेहरस्क्यर्क, जोधपुर (राजस्सथान)

## बनना है वीतराहा

श्री सम्पत्तराज चौधरी

**हे चेतन!**

तू आगम ज्ञान से अन्तर के दर्पण में झाँक  
और अपने आपको आँक।  
अतीत की अनन्त यात्रा का आभास  
माने वेदना का अन्तहीन उपन्यास।  
कितना भयावना, कितनी यातना,  
कितना कराहना, कितना सहना,  
और कितनी जीवन की बंचना।  
अनादिकाल से चली आ रही इस यात्रा में  
तूने क्या-क्या रूप धारण किये ?  
कभी नरक-निगोद में पड़ा रहा  
तो कभी तिर्यञ्च में दीन-हीन बना भटकता रहा,  
पीड़ा पाता रहा, लाश खाता रहा,  
दण्डित होता रहा, खण्डित होता रहा,  
प्रताङ्गित होता रहा, तञ्जित होता रहा,  
उद्भेदित होता रहा, विचलित होता रहा और इस तरह  
निरन्तर आर्त-रौद्र ध्यान में रहकर  
एक अनाश्रित का जीवन जीता रहा।  
कभी देव तो कभी मानव भव में भी  
तेरा आगमन हुआ,  
तुझे साधन मिले, सुविधाएँ मिली और  
भौतिक ऐश्वर्य की चकाचौंध मिली।  
तू उसी में ढूब गया। क्षणिक सुख-प्राप्ति की दौड़ में  
न सुख ने कभी दामन पकड़ा,  
न दुःख ने कभी पीछा छोड़ा।  
अवसाद, विषाद में झूलता रहा,  
ईर्षा, द्वेष में दथ होता रहा,  
न दिन में चैन, न रात में नींद। खोजा सुख, मिली बेचैनी।  
ऐसा क्यों हुआ ?

तुझे पता ही नहीं चला,  
इसलिए यात्रा में कुछ नहीं बदला।  
इस अज्ञानी की यही दर्द भरी कहानी,  
स्वयं की विकलता स्वयं ने नहीं पहचानी।

**हे चेतन !**

क्या तुमने स्वयं कभी प्रश्न भी किया  
कि ऐसा क्यों हुआ ?  
जैसे नाव में छिद्र से आते पानी को निकालने के लिए  
नाव में दूसरा छिद्र करने से  
पानी और बढ़ जाता है,  
वैसे ही तुमने समस्याओं के समाधान में  
अनगिनत समस्याएँ खड़ी कर दी,  
समस्या बढ़ती गई,  
अन्तर्ज्वलाएँ और प्रज्वलित होती गई।  
सुख पाने की कल्पित कामना में  
बुद्धि मोहित हो गई, प्रज्ञा तिरोहित हो गई।

**हे चेतन !**

तू करने के योग्य कामों में नहीं लगा  
परन्तु न करने योग्य कामों में लगा रहा,  
प्रमाद में गोते खाता रहा,  
वासना में फँसकर कामनाएँ बढ़ाता रहा,  
क्रोध से बुद्धि का दीप बुझाता रहा,  
तृष्णा की तृप्ति में अतृप्ति का दावानल फैलता रहा।  
फलस्वरूप, मिली आसक्ति और भ्रान्ति।  
फिर भी तुमने अहंकार की अकड़ नहीं छोड़ी,  
ममकार की पकड़ नहीं छोड़ी।  
सुख के आभास में,  
झूठे आश्वास में, नश्वरता के भास में,

तू खोता ही खोता रहा।  
 हार में जीत का भ्रम पालता ही रहा,  
 ज़हर को ही अमृत की मधुशाला मानता रहा।

**हे चेतन !**

अब तो दे दे अपनी चेतना को आवाज़,  
 बन्द कर दे अनन्त काल से चलता अपना उल्टा रिवाज़।

अब तो अपनी विफलता से सीख,  
 अपनी असफलता के इतिहास को मत दोहरा।

ज्ञानी कह रहे हैं— “तेरे अन्तस में अविद्या का तम है,  
 देह और आत्मा के एक होने का विभ्रम है।

तेरी त्रासदी यह नहीं कि तू लक्ष्य तक नहीं पहुँचा,  
 त्रासदी यह थी कि तेरा कोई लक्ष्य ही नहीं था।”

तेरी त्रासदी पर ज्ञानियों ने करुणा बरसाई,  
 मार्ग दिखाया, मगर उनकी बात तुमने नहीं मानी,  
 अगर कुछ मानी भी तो उससे  
 भावों के तार नहीं जोड़ सके।

**हे चेतन !**

ज्ञानियों ने फिर चेताया,  
 पर तुमको वह नहीं सुहाया।

उन्होंने कहा— “निज ज्योति स्वरूप पर  
 तेरा ध्यान ही नहीं गया,  
 तत्त्वों को जानने का ढोंग करता रहा

पर निज तत्त्व को ही नहीं जान पाया।

शरीर में ही आत्म की अवधारणा करता रहा,  
 इसलिए समता सुख नहीं पा सका।

शरीर के सुख-दुःख को  
 आत्मा का सुख-दुःख समझ बैठा।”

“देह में यह आत्म-बुद्धि ही तेरे दुःखों का मूल है,  
 यही तेरी यात्रा में अत्यन्त पीड़ादायी शूल है।”

**हे चेतन !**

अब तो जाग, अब नहीं जागा तो कब जागेगा ?

रच दे अपना ऐसा इतिहास कि  
 जिसमें चेतन को हो चैतन्य पर विश्वास।

अब तक तू सोया था,  
 वह जीवन का धोखा था,  
 अब तेरे सामने मौका है।

अब तो जीवन को ढोंग से नहीं ढंग से जी।

तेरा अस्तित्व अन्धकार में खोने में नहीं,  
 अन्धकार को मिटाने में है।

अतीत के अन्धेरे को कोसने में  
 अब कोई लाभ नहीं।

रोशनी उसी की है जो दीया जलाना जानता है।

क्या संसार का सारा अन्धकार कभी दीये से  
 उसकी रोशनी छीन सका है ?

अनुकूलता आने पर तू पुरुषार्थ करेगा तो  
 वह समय कभी नहीं आयेगा,  
 संघर्षों के बीच ही अब आगे चलना होगा,  
 क्योंकि सांसारिक अनुरक्षित ही दुःख की जननी है।

तेरी निशा का अब गमन हो रहा है,  
 ऊषा का आगमन हो रहा है,  
 प्राची की प्रथम किरणों का लहरों से  
 आचमन हो रहा है।

वे लहराती हुई बार-बार सन्देश दे रही हैं—

“तू ज्ञान के प्रकाश में  
 निज का दर्शन कर,  
 अन्तर के अनन्त सुख का अनुभव कर, क्योंकि  
 यही तेरा स्वभाव है।

तू सहजानन्दी है, परमानन्दी है,  
 अक्षय है, अव्यय है,  
 जन्म-मरण से परे है,  
 रोग-शोक तेरे नहीं हैं।

संसार से परे का अनुभव कर।

चकोर बनकर सुख के बसन्त को निहार।

उस सहज आनन्द रूपी बसन्त में

शुभ रूपी पते लहलहा रहे हैं,  
सुमति रूपी कोकिला गदगद होकर गा रही है।  
आत्म-गुणों के पुष्प खिल रहे हैं,  
समता की गुलाल उड़ रही है और  
आत्मज्ञान की परम ज्योति प्रकट हो रही है।  
तुमने एक बार भी इस अनुभूति का आनन्द ले लिया तो  
मुड़कर पीछे नहीं देखेगा।  
इसी में तेरे सुख की भूमिका छिपी है।  
मोह के दर्पण को तोड़,  
नित नये रूप सजाना छोड़,  
चेतन को चेतन से जोड़ और  
माटी को माटी पर छोड़।  
संसार का वियोग ही  
आत्मानुभूति का संयोग है।  
उठ हैसला रख,  
क्या अन्धेरा कभी सुबह को रोक पाया है ?”  
मेरी चेतना हिली और दृष्टि मिली।  
व्यर्थ को मिटाया, जीवन का अर्थ पाया कि  
निराशा के आँसू गिराते हैं,  
चेतना के आँसू उठाते हैं।

**हे चेतन !**

आज तुझे प्राणवान जिनशासन मिला है,  
सत्य धर्म के उद्गाता सुदेव मिले हैं,  
मार्गदर्शन कराने वाले गुरु मिले हैं और  
जीवन को रूपान्तरित करने वाला धर्म मिला है।  
विकृति से प्रकृति में आना ही अब तेरा धर्म है और  
यही तेरे लिए उपादेय है।  
राह दिखेगी शान्ति की  
मन के दीप जलाकर देख,  
राह पलट जायेगी पल में  
बस एक पाँव उठा के देख  
अन्धियारे में सुबह छिपी है  
चिन्तन-चिराग जला कर देख।

अब तू अपनी आत्मा को  
आत्मा में आत्मा से धारण कर,  
यही तेरे अस्तित्व की तलाश होगी।  
सुना है तुमने-प्रभु क्या कहते हैं -  
“सुख-दुःख की भूमिका में कर्म कर्ता का  
अनुगमन करते हैं, अतः  
मानव स्वयं अपने सुख-दुःख का निर्माता है।”  
अब प्रभु की इसी सीख को अपने पीछे नहीं,  
आगे रखकर चलना।  
अब मेरी हर प्रवृत्ति  
आत्मा को केन्द्र में रखकर होती रहे और  
मेरी दृष्टि में द्रष्टा का चिन्तन चलता रहे।  
आसक्ति एक रोग है।  
इसे हटाकर अनासक्ति के बीज बोने होंगे  
जो सुयोग पाकर उगेंगे, फल देंगे।  
विरक्ति से वीतरागता मिलेगी,  
तब न मोह होगा,  
न संकल्प-विकल्प होंगे।  
गुण-श्रेणी में चढ़ते जाओगे,  
अनुभूति से ऊपर उठकर  
आनन्द के पुञ्ज बन जाओगे।  
जब अनुभव कर्ता, अनुभव में,  
अनुभव का अनुभव करता है,  
तब स्व का बोध हो जाता है।

**हे चेतन !**

तुझे इस बोध की यात्रा का  
शुभारम्भ आज, इसी बक्त करना है।  
अब प्रमाद का त्याग कर -  
अब न किसी अभाव में जी,  
न किसी पर के प्रभाव में जी।  
ये ज़िन्दगी है तुम्हारी, तू अपने स्वभाव में जी।

## व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (5)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

16. सफल होने के लिए....सफलता की इच्छा, असफलता के भय से अधिक होनी चाहिए। यह सत्य है कि हमारे हर लक्ष्य की प्राप्ति से पहले तक हमारे अन्दर एक भय व्याप्त रहता है .... यह भय होता है असफल होने का। अक्सर यह अनजाना भय ही सफलता हेतु किये गए हमारे प्रयासों को क्षीण कर देता है ... जिससे हमारी स्पष्ट सफलता भी संदिध हो जाती है। सफलता निश्चित करने का एक सटीक उपाय है ... सफलता की इच्छा शक्ति का इतना तीव्र होना कि उसके समक्ष असफल होने के सभी तरह के भय बौने हो जाएँ। जब तक मन में सफलता हेतु संदिधता रहेगी...तब तक किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित नहीं हो सकती।
17. जीवन में दीर्घायु होना नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता का महत्व अधिक होता है। दीर्घायु होना स्वयं में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मानव जीवन अत्यन्त मुश्किल से मिलता है... इसको जितना अधिक जी सकें, उतना ही अच्छा है। किन्तु इस जीवन को कितनी सकारात्मकता से और परमार्थ हेतु जिया, इस बात का महत्व दीर्घायु होने से कहीं ज्यादा है। यदि हमने अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति नहीं की ....घर, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए कोई योगदान नहीं दिया, किसी रोते हुए मासूम चेहरे पर मुस्कान नहीं ला सके और सिर्फ स्वार्थवश रहते हुए... स्वयं के भौतिक उत्थान में ही लीन रहे ...तो ऐसे जीवन का कोई महत्व नहीं रह जाता। गुणवत्तापूर्ण जीवन को व्यतीत करना दीर्घायु होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण, आवश्यक एवं सार्थक है। जीवन ऐसा सर्व-जन-हिताय और सकारात्मक होना चाहिए ...कि लोग आपके जाने के बाद भी आपकी कमी महसूस करते रहें।
18. हमारे जीवन का नियन्त्रण केन्द्र हमारे स्वयं का रवैया है। हम सब लोग इसी समाज में रह रहे हैं ...और सब अपनी ही समस्याओं से घिरे हुए हैं। सब अपने जीवन की लड़ाई स्वयं ही लड़ रहे हैं। लेकिन हम अपने जीवन में कितने सफल हो पाएँगे ....यह हमारी समस्याओं पर नहीं, अपितु हमारे अपने रवैये पर निर्भर करता है। हम अपनी जीवनशैली को कैसा बनाते हैं, अपनी धारणा कैसी रखते हैं, परिवार तथा समाज के प्रति हमारा नज़रिया कैसा है, हम घटित होने वाली हर घटना के प्रति कितने संवेदनशील हैं... यही सब मिलकर हमारे जीवन की गुणवत्ता तय करते हैं। सारांश में....हम किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं ...यह स्वयं हम पर, हमारे रवैये पर, हमारी सोच एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है....हमारी समस्याओं तथा हमारे जीवन में निरन्तर हो रही घटनाओं पर नहीं।
19. जो स्वयं अपने ऊपर विजय प्राप्त करता है, वही सबसे बड़ा विजेता कहलाता है। यह मानव स्वभाव है कि हम दूसरों की कमियों, गलतियों एवं साधारण सी कमजोरियों की भी बहुत जल्दी पहचान करते हुए उसे बढ़ा-चढ़ा के बताकर ...उस पर बिना माँगे ही अपने सुझाव देने लगते हैं। किन्तु स्वयं अपनी कमियों एवं कमजोरियों की ओर कभी-भी कोई ध्यान नहीं देते। जब हम अपनी कमियों और कमजोरियों को ढूँढ़ कर उनको स्वीकारते हुए उनको दूर करने के लिए पूर्ण ईमानदारी पूर्वक प्रयास करते हैं ...तो हमारी वही कमियाँ और त्रुटियाँ हमारी ताकत बन कर हमें साहसी तथा सही अर्थों में विजेता बनाती हैं।



## सफलता का तट बाँध है धैर्य

श्री पदमचन्द गरेंथी

धैर्य प्रतीक्षा करने की कला है। धैर्यवान होना एक अच्छा गुण है, लेकिन धैर्य रख-पाना सबके लिए सम्भव नहीं है। धैर्य वह गुण है जो हरेक के पास नहीं होता। कार्य करने की अलग गति होती है और उसका परिणाम पाने की अलग, लेकिन इसके मध्य धैर्य की समय सीमा होती है जिसे पार करना पड़ता है। इस समय सीमा में होती है-उम्मीदें, बेचैनी, झुँझलाहट जिन्हें धैर्य के साथ सहना पड़ता है। देखने में आता है आज की भागती-दौड़ती जिन्दगी में कोई भी प्रतीक्षा नहीं करना चाहता, कोई भी रुकना नहीं चाहता, कोई भी धैर्य को धारण नहीं करना चाहता। सबको जल्दी रहती है, धैर्य न होने पर व्यक्ति हर काम जल्दबाजी में तथा हड्डबड़ाहट में करता है। जिससे उसके क़दम गलत दिशा में मुड़ जाते हैं तथा वाञ्छित परिणाम से बच्चित हो जाता है।

बैंजामिन फ्रेंकलिन ने स्पष्ट किया-धैर्य इच्छित लक्ष्य को पाने का एक प्रभावी तरीका है क्योंकि इच्छित लक्ष्य को पाने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है। संघर्ष करना पड़ता और इसके लिए धैर्य के साथ कार्य में लगे रहना होता है। लेकिन आज के युवाओं में धैर्य की कमी है जिसके कारण वह चाहता है उसे किसी भी तरह से उसका लक्ष्य प्राप्त हो जाये चाहे उसके लिए उसे गलत मार्ग का ही चयन भी क्यों न करना पड़े और आज कल यही हो रहा है लोग अपने इच्छित लक्ष्य को पाने के लिए प्रतीक्षा नहीं करना चाहते, अधिक मेहनत नहीं करना चाहते और किसी भी तरह शॉर्टकट का रास्ता खोजते हैं। धैर्य तभी टूटता है जब मन अशान्त और उतावला होता है, ऐसी परिस्थिति में लिया गया निर्णय भी सही नहीं होता है, क्योंकि उद्विग्न तथा अशान्त मन में गहराई से सोचने समझने की क्षमता नहीं होती। धैर्य वही व्यक्ति धारण कर सकता है जो दूरदर्शी हो, जिसका मन शान्त, स्थिर एवं रचनात्मक हो, ऐसा ही व्यक्ति धैर्य के

समय की गयी प्रतीक्षा का सही नियोजन कर पाता है तथा अभीष्ट लक्ष्य को भी प्राप्त कर लेता है। इतना ही नहीं धैर्य से उसे सुकून, अनुभव, सीख तथा शान्ति भी प्राप्त होती है। यदि मन में धैर्य, लगन, उत्साह और एकाग्रता हो तो व्यक्ति सब कुछ हासिल कर सकता है।

आज युवाओं में अपार क्षमता तो है, लेकिन परिणाम पाने तक के इन्तजार का समय नहीं है। आजकल के युवाओं में धैर्य का स्तर जानने के लिए अमेरिका के युमास एमहर्स्ट इन्स्टीट्यूट में कम्प्यूटर साइंस के प्रोफेसर सीतारमन ने जब लगभग साठ लाख इंटरनेट उपभोक्ताओं पर अध्ययन किया तो पाया कि डाऊनलोडिंग के लिए उनके धैर्य धरने की औसत अवधि मात्र दो सैकण्ड थी। प्यू रिसर्च सेन्टर की एक अन्य शोध के अनुसार लोगों में बढ़ती अधीरता का बड़ा कारण तकनीकों का बढ़ता वर्चस्व है। जिससे व्यक्ति कार्य को शीघ्र पूरा करना चाहता है, परन्तु रुकावट होने पर वह अधीर हो जाता है तथा बोखला जाता है। जब व्यक्ति अपनी समस्याओं को थोड़ा और वक्त देने को तैयार नहीं होता है तो क्रोध और नकारात्मक गुण पनपते हैं जिससे लिए गये निर्णय गलत होते हैं और जीवन नकारात्मकता के दुष्क्रम में फँस जाता है।

यह सच है कि धैर्य के साथ किए गये कार्य सफलता की गारण्टी नहीं देते, लेकिन इस बात की गारण्टी आवश्य देते हैं कि असफलता से पार पाने के दूसरे रास्ते उपलब्ध हो जाए। धैर्य व्यक्ति की हर अन्तहीन इच्छा को दिशा देने के साथ साथ जीवन का एक उद्देश्य भी देता है। प्रसिद्ध लेखिका जाइस मेयर ने कहा है-धैर्य इन्तजार करने की क्षमता मात्र नहीं है, बल्कि इस दौरान व्यक्ति कैसा व्यवहार करते हुए इन्तजार करता है, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस प्रकार धैर्य एक अच्छा गुण ही नहीं बल्कि एक कौशल

भी है जिससे व्यक्ति बिना आपा या आस खोए, देरी, मुसीबत, और झुँझलाहट के क्षणों को स्वीकारने या सहने की क्षमता प्रदान करता है।

संसार के प्रमुख धनवानों में शामिल वॉरैन बफेट ने कहा- “जो भी आपको अपने से ज्यादा आगे दिख रहा है वह उसी अनुपात में ज्यादा धैर्यवान है।” अर्थात् जीवन में कितनी बड़ी समस्या हो, उसे धैर्य से आसानी से पार किया जा सकता है। इसलिये मोटिवेशनल स्पीकर रोबिन शर्मा ने कहा है- “धैर्य एक कुशलता है, जो व्यक्ति को सीखनी पड़ती है और जो व्यक्ति इसका जितना अभ्यास करता है वह जीवन में उतना ही आगे बढ़ जाता है।” इस प्रकार स्पष्ट है धैर्य व्यक्ति को वह सब कुछ प्रदान करता है जिसका वह सही मायने में हकदार है। धैर्य में उचित समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है मारवाड़ी कहावत है ठार ठार कर के खाओ, ताता ताता से मूण्डो बल जावे। अतः इस प्रतीक्षा के समय को उत्तेजनावश नष्ट न करके, उपयोग करें।

धैर्य धारण करने की चीज है तथा यह सफलता का तट बाँध है। इसे वही व्यक्ति धारण कर सकता है जो समय के हर पल की कीमत समझता है, समय के साथ जीता है तथा हर कार्य के लिए समय देता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन ने सफलता का मन्त्र बताते हुए कहा कि मैं बुद्धिमान नहीं हूँ, पर अत्यधिक धैर्यवान हूँ। बस यही इतनी सी बात है जिसके कारण मैं किसी समस्या के साथ ज्यादा वक्त तक रह सकता हूँ। अर्थात् जिस व्यक्ति को परिणाम तक पहुँचने की आतुरता पर काबू पाना आता है वही धैर्य में निपुण बन सकता है।

## जिनवाणी पर अभिमत

**श्री सुनित कुमार जैन**

जैनधर्म की प्रतिष्ठित पत्रिका ‘जिनवाणी’ अप्रैल-2021 ‘महावीर जयन्ती अंक’ बेहतरीन ज्ञानवर्द्धक और संग्रहणीय रहा। सम्माननीय साहित्यकार डॉ. दिलीपजी धींग लिखित आलेख ‘भगवान महावीर के व्यक्तित्व में सामाजिक आयाम’ पढ़कर लगा कि भगवान महावीर हर युग में प्रासङ्गिक हैं

मनोविज्ञान के अनुसार धैर्य का अर्थ एक तरह की शक्ति है, जिसमें प्रतीक्षा, निरीक्षण और सही मौके पर सही प्रतिक्रिया से व्यक्ति स्वयं को दूसरों की अपेक्षा सफल बना सकता है।

युनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के बूथ स्कूल ऑफ बिजनेस में बिहेवियरल साइंसेस एण्ड मार्केटिंग के प्रोफेसर एलेट फिशबेक ने प्रतीक्षा के परिणाम पर एक अध्ययन में स्पष्ट किया कि प्रतीक्षा जो कि अन्ततः धैर्य के रूप में सामने आती है, के कारण कार्यस्थल और जीवन में इच्छित और बेहतर परिणाम मिलते हैं। इससे व्यावहारिक और वैचारिक स्तर पर सही निर्णय लेने में सहायता मिलती है। इसके माध्यम से सहनशीलता बढ़ती है और आपसी रिश्ते बेहतर होते हैं। इसके द्वारा तनाव पैदा करने वाली स्थितियों से बचाव होता है तथा आत्मविश्वास की भावना सबल होती है। अतः स्पष्ट है कि धैर्य की मर्यादाओं में रहकर व्यक्ति शीघ्र सफल होता है।

अतः यह स्पष्ट है रे मन धैर्य धारण कर! धीरे-धीरे सब हो जाता है। माली भले ही सौ घड़ों से पौधा सींचे फल तो समय आने पर ही मिलता है, जल्दबाजी या हड्डब़ाहट में नहीं। अतः हे वत्स! तू चिन्तन कर और देख बहुत बीत गया थोड़ा बाकी है। मन से अधीर मत हो। धैर्य ही सबका मित्र है। बहुत दिनों से की गयी साधना को हड्डब़ाहट में व्यर्थ ही नष्ट मतकर। तू धैर्य धारण कर।

-25, बैंक कॉलेजी, महेश नगर विस्तर-बी,  
गोपालपुरा बाईयास, जयपुर (राज.)

और रहेंगे। ‘आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यानमाला पर आयोजित वेबिनार’ शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट पढ़कर बहुत अच्छा लगा। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती पर केन्द्रित वेबिनार कार्यक्रम के सुन्दर और प्रभावी संयोजन के लिए ‘जिनवाणी’ पत्रिका के आदरणीय प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन और समस्त सम्माननीय विद्वत्जनों को सादर नमन।

-उत्तीर्ण, जिला- टोक (राजस्थान)

## कोरोना की व्यथा-कथा

श्रीमती कमला हण्वन्तमल सुराणा

**कोरोना** वायरस ने प्रकृति का प्रवेश द्वारा खटखटाया।

प्रकृति-“तुम कौन हो ?”

कोरोना-“मैं कोरोना विषाणु।”

प्रकृति-“तुम क्यों आए? सम्पूर्ण विश्व में त्राहि-त्राहि मचा दी।”

कोरोना-“वाह-वाह!! मैं सूक्ष्म विषाणु। ये विशालकाय मानव। डर गए? हाँ, मैं डराने, कँपकँपाने और थरथराने आया हूँ, क्योंकि ये लातों के देव बातों से नहीं मानते हैं। पुरुषोत्तम राम, श्रीकृष्ण भी दुष्टों का संहार करने अवतरित हुए थे।”

प्रकृति-“दुष्टों का संहार नहीं हुआ है, भोली-भाली जनता पिस गई है।”

कोरोना-“देर है अन्धेर नहीं।” अति महत्वाकांक्षी, लालची और स्वार्थी मनुष्यों ने इस बार मुझे आपन्त्रित किया। जिन्होंने तुम्हें (प्रकृति) छेड़ा, उनकी धज्जियाँ उड़ेंगी। धरती पर अनीति का बोल-बाला बढ़ जाता है तब मुझे भिन्न-भिन्न मुखौटे धारण करने पड़ते हैं जैसे-आँधी, तूफान, भूकम्प, सुनामी, अतिवृष्टि अनावृष्टि, प्लोग, हैजा आदि-आदि।

विश्व में हिंसा का राज्य हो गया है, उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है। प्राणियों के प्राणों का कोई महत्व ही नहीं है। हत्याएँ, आत्महत्याएँ दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। संवेदनशीलता, सहनशीलता ताक पर रखी दी गई है, इसलिए ईर्ष्या, द्वेष बढ़ते जा रहे हैं। खुल्लम-खुला भ्रष्टाचार हो रहा है।

अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए मूँक प्राणियों का बेधड़क शिकार होता रहता है। गाय हमारी माता है, भरण-पोषण करती है उसको भी नहीं छोड़ते हैं।

आकाश में उड़ते परिन्दे कितने मनमोहक लगते हैं पर्यावरण को बनाए रखने में भागीदार हैं, उनकी जान के भूखे हैं।

प्राणवायु देने वाले पेड़-पौधों की अन्धाधुन्ध कटाई होती है। प्राणियों का जीवन इन पर निर्भर है, फिर भी उनको जीने नहीं देते हैं। प्रकृति! तेरा तो शृङ्खार उजड़ रहा है।

लोगों की आवश्यकता इतनी बढ़ गई है। उनकी कमाई से आवश्यकताएँ पूरी न होने के कारण घूसखोरी, बेईमानी बहुत बढ़ गई है। लूटपाट, लूटमार एवं डकैती का साम्राज्य हो गया है। गत के अन्धेरे में चोरियाँ होती हैं और दिन-दहाड़े स्त्रियों के गले से जेवर खींच लेना, पर्स छीन लेना आम बात हो गई है। खाद्य पदार्थों में मिलावट की जाती है। मदिरा में फैला पदार्थ मिलाकर उसे जान लेवा बना देते हैं। नशीली वस्तुओं की तस्करी निःसंकोच होती है, क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्ट राजनेता, अधिनेता और व्यापारियों का हाथ होता है। स्मैक, हशिश, हिरोइन, अफीम, गाँजा, डोडा, पोस्त का चलन युवा पीढ़ी में बढ़ गया है। कुव्यसनों में पड़कर युवा पीढ़ी अपना अस्तित्व खो रही है। बीड़ी सिगरेट का सेवन पुरुषों में तो चल ही रहा है, अब नारियाँ भी बड़ी मात्रा में सेवन करने लग गई हैं। छात्र-छात्राएँ भी चोरी छुपके धूप्रपान करते हैं।

नारियों में फैशन का नशा चढ़ गया है। फैशन अन्धी है। फैशन में अज्ञ प्रदर्शन और पैसों की बर्बादी मुख्य है। इसके पीछे हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह के विकार पैदा हो जाते हैं।

प्रकृति-“कोरोना! एक लज्जित होने वाली विकृति कहना चाहूँगी।”

कोरोना-“अवश्य कह दे।”

**प्रकृति-** “महापुरुषों ने कहा-यत्र नार्थस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।”

ऐसे अमूल्य और सुन्दर विचारों को लोग मिट्टी में रौंद रहे हैं। विश्वभर में नारियों की दशा निन्दनीय है। दहेज के भूत से युवतियाँ प्रताड़ित हैं। इसी कारण से हत्याएँ-आत्महत्याएँ होती हैं। निर्धन, असहाय और अवयस्क नारियों को वस्तु तुल्य बेचा जाता है, निर्लज्ज लोग खरीद कर उन्हें वेश्याएँ बना देते हैं। उनका देह-शोषण कर पैसा कमाते हैं। बलात्कार और सामूहिक बलात्कार तो साधारण घटनाएँ हो गई हैं, बलात्कार कर पीड़िता को मौत के घाट उतार देते हैं। युवक-युवती परस्पर प्रेम में बँध जाते हैं तो युवती को समाज वाले निर्वस्त्र कर गाँव में घुमाते हैं और दण्ड के रूप में राशि भी लेते हैं। नारी की ऐसी दशा कर देते हैं जिससे वह घृणा की पात्र बन जाती है। उसके अश्लील चित्र खींचकर ब्लैकमेल करते हैं। उसके जीने के रास्ते बन्द कर देते हैं, बता ? यह है सभ्य समाज।

कन्या-भ्रूण की हत्या की जाती है। गर्भ में भ्रूण मरने के डर से इधर-उधर भागता है। उसकी पीड़ा, उसके भाव, उसके नासमझ माता-पिता न समझकर बेटी-जन्म के डर के कारण जघन्य पाप कर लेते हैं। इस प्रकार नारी-संख्या घट रही है और व्यभिचार बढ़ रहा है।

जब माता-पिता भी अपने नहीं होते हैं तो किस पर विश्वास किया जाय। विश्वास स्वयं ही समस्या बन गया है। विश्वास की परिभाषा बदल गई है।

**कोरोना-**“प्रकृति, आगे सुन।”

साधु! जिसके नाम से सहजता से श्रद्धाभाव जागृत हो जाते हैं, नतमस्तक हो जाते हैं।

दुराचारियों ने साधु नाम को दुराचार का जामा पहना दिया है। साधु-वेश में भोली-भाली जनता को झाँसे में लाकर उनसे बुरे काम करवाते हैं। उन्हें मारने की धमकी देकर फाँस लेते हैं। नारी की तो और अधिक दुर्दशा करते हैं, उसकी मर्यादा से खिलवाड़ करते हैं।

मैं तो कलियुग को सतयुग में लाना चाहता हूँ।

**प्रकृति-** “वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों ने वैश्विक समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। आकाश को उपग्रहों से भर दिया है। वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण और प्रकाशप्रदूषण फैला कर प्राणियों का श्वास लेना दूधर कर दिया है।”

दो विश्व महायुद्ध के थपेड़े के पश्चात् तीसरे महायुद्ध की तैयारी में लगे हुए हैं। एक-दूसरे की ज़मीन हड्डपने में लगे हुए हैं, इस सिलसिले में छुटपुट झागड़े होते रहते हैं और मुझे रक्त से रंग देते हैं। सोच कोरोना! देश का एक सैनिक शहीद होता है तो उसके घर वाले माता-पिता, पत्नी, बच्चे, भाई-बहिन सभी अनाथ हो जाते हैं। देश को भी अभाव मारता है। उसकी क्षतिपूर्ति नहीं होती है।

**कोरोना-**“तू सही कहती है। मैं सम्पूर्ण विश्व को जीने की सीख सिखाने आया हूँ। रंगभेद, वर्णभेद, धर्मभेद, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब की संकीर्ण विचारधारा को दूर कर उच्च भावों में लाने आया हूँ।”

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

## सुखी होने के लिए बदलें अपनी सोच का तरीका

संकलन-श्री यीरचन्द्र चोरड़िया

चार बातें कचरे के डिब्बे में डाल दो-1. लोग क्या कहेंगे? 2. मुझसे नहीं होगा। 3. अभी मेरा मूड नहीं है। 4. मेरी किस्मत खराब है। ये चारों बातें आदमी को बढ़ने नहीं देती हैं।

-मणिक चौक, नवाबसर, जोधपुर (राजस्थान)

## स्वयं की अनाथता का बोध

श्री गैत्तम् पारस्प्र

**अनाथ शब्द** पर मेरा ध्यान आकर टिक गया। मैं सोचने लगा कि आखिर अनाथ कौन होता है? किसे अनाथ कहते हैं? अनाथ आश्रम क्यों खोले जाते हैं? जन्म के बाद अथवा बाल्यावस्था में जिनकी परवरिश करने वाला कोई नहीं होता। बेसहारा, अबोध अथवा बाल्यावस्था में समझ होने के बाद भी मजबूर होने वालों की ज़िन्दगी सँवारने का प्रयास होता है—अनाथ आश्रम। वृद्धाश्रम में रहने वाले लोगों की दिनचर्या, सोच, समझ, मजबूरी, परिस्थिति का मुझे निकट से अनुभव है, लेकिन अनाथ आश्रम के व्यवस्थापन, कार्यशैली का अनुभव नहीं है। कई बार अपने दुष्कृत्यों पर पर्दा डालने, सामाजिक भय आदि के कारण जन्म के बाद ही नवजात शिशु को सुनसान जगह रात के अन्धेरे में छोड़कर, ढककर जन्म देने वाली माँ ही भींगे आँसुओं से रखकर चल देती है।

वर्षों पूर्व की बात है। बस की सीट के नीचे एक टोकरे में एक नवजात को छोड़कर कोई चला गया। नवजात बालक की रोने की आवाज सुनकर लोग खड़ी बस में चढ़े। नवजात को बाहर निकाला। शासकीय चिकित्सालय में उसे भर्ती किया गया। पूर्व में महिला बाल विकास विभाग को ऐसे अनाथ बच्चों की देखरेख का दायित्व था। महिला बाल विकास विभाग में अधिकारियों के साथ नागरिकों की एक समिति का गठन किया। संयोग वश में भी उस समिति का सदस्य था। बालक की परवरिश के लिए विज्ञापन निकाला गया। अनेक सन्तान विहीन लोगों ने इस हेतु आवेदन किया। सभी ने बालक की परवरिश के साथ भविष्य में उसे दी जाने वाली सुविधाओं का उल्लेख किया। आवेदनों पर विचार कर एक बैंककर्मी को बालक को सौंपने का निर्णय लिया गया। सुन्दर लालन-पालन, संस्कारों के

बीच बालक सम्भवतः आज यौवन की दहलीज पर होगा। कुछ लोग अनाथ आश्रम से भी कुछ बालक-बालिकाओं की परवरिश करने ले जाते हैं। अपनी सन्तान समझकर ही उसका लालन-पालन करते हैं।

मेरा ध्यान पुनः अनाथ शब्द की विभिन्न परिभाषाओं में आकर उलझ गया। स्वाध्याय के क्षणों में अध्ययन किया गया राजा श्रेणिक और अनाथी मुनि का संवाद मेरे स्मृति पटल पर उभरकर आ गया। राजा श्रेणिक अनाथी मुनि से कहते हैं कि मुनिश्री क्या तुमने अनाथ होने के कारण, बेसहारा होने के कारण संन्यास ग्रहण किया है? तुम्हारी शारीरिक संरचना, शारीरिक सौष्ठव अपूर्व है। तुम्हारे चेहरे की आभा भी अद्वितीय है। शरीर का वर्ण गोरा और आकर्षक है। फिर भी तुम क्यों अनाथ हो? मुनि बन गये हो? राजा श्रेणिक कहते हैं कि तुम मेरी शरण में आ जाओ। मेरे आधिपत्य में बड़े-बड़े घोड़े हैं, मदोन्मत्त हाथी हैं, छत्रधारी अनेक नरेशों की कन्याएँ मेरी रानियाँ हैं, कई छोटे-छोटे राजा मेरे राज्य में सम्मिलित हैं। मेरी आज्ञा सर्वत्र अविकल रूप से मानी जाती है। सर्व सुखों का मैं स्वामी हूँ। मुनिश्री! तुम मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हारा नाथ बनकर तुम्हें भी सभी सुखों का स्वामी बना दूँगा।

अनाथीमुनि श्रेणिक राजा से कहते हैं कि हे राजन्! तुम स्वयं अनाथ हो, तुम मुझे क्या नाथ बनाओगे। श्रेणिक राजा को आवेश मिश्रित आश्चर्य हुआ और सोचने लगा यह कैसा मुनि है, झूठ बोलता है, मुझे ही अनाथ कहता है। राजा श्रेणिक के भाव जगत् और आभा मण्डल को देखकर अनाथीमुनि कहते हैं, राजन्! मैं आप बीती सुनाता हूँ, ध्यान से सुनना।

मेरे पिताजी, प्रभूतजी की गणना धनाद्य, वैभवशाली श्रेष्ठिवर्यों में होती थी। वे लक्ष्मी पुत्र के नाम

से जाने जाते थे। राजपुरोहित, राज्य वैद्य, सभी उनका सम्मान-सत्कार करते थे। मेरा भी बचपन, यौवन सुखों की शथ्या में बीता। बालकीड़ा करना, खेलकूद करना, अध्ययन करना, सभी के बीच में बड़ा हुआ। युवावस्था में अच्छे घरानों की सुसंस्कारित कन्याओं से मेरा विवाह हो गया। यौवन की इस दहलीज़ में मेरे शरीर में घोर वेदना शुरू हो गई। सबसे पहले मेरी आँखों में वेदना ने प्रवेश किया। आँखों को दुरुस्त करने के लिए अच्छे-अच्छे पौष्टिक पदार्थ खाये। आँखों का अञ्जन किया, फिर भी आँखों की वेदना, जलन कम नहीं हुई। आँखों की वेदना के साथ शरीर में भी विपुल दाह होने लगा। पूरे शरीर में अत्यन्त जलन होने लगी। पिताश्री ने इलाज़ में कोई कमी नहीं की। इलाज़ के लिए पानी की तरह पैसा बहाया। वैद्यराजों की लाइन लगा दी। मेरे परिजन, माता एवं धर्मपत्नियों ने भी सेवा में कहीं कमी नहीं की। मेरे मस्तक में भी ऐसी पीड़ा हो रही थी, जैसे इन्द्र वज्र मार रहा हो या बिजली गिर रही हो। जवानी के दिन अपनी स्त्रियों के रूप, यौवन, शृङ्खल, आभूषण को देखने के लिए होते हैं। लेकिन मेरी आँखों में ही असहा वेदना हो गई। शरीर में दाह-ज्वर हो गया। मस्तक फटने लगा। अपार वैभव, सम्पत्ति, साधन होने पर भी शरीर को स्वस्थ नहीं कर पाये। जब ये शरीर ही हमारी नहीं मानता, सुनता, तो हे श्रेणिक! हम अपने शरीर के ही नाथ नहीं हैं तो दुनिया का, अन्यों का नाथ बनने की बात तो केवल धोखा है। शरीर ही हमारा हुक्म नहीं मानता तो दुनिया में हुक्म चलाकर हम अपने आप को नाथ मानते हैं राजा मानते हैं। सबसे बड़े अनाथ तो आप हैं।

मैंने भी रात्रि में संकल्प किया कि यदि शरीर

स्वस्थ हो जाता है तो मैं भी धन, दौलत, पिश्टे, नाते, माता, पिता, स्त्री, परिजनों को छोड़कर मुनि बन जाऊँगा। जब शरीर पर ही मेरा हुक्म नहीं चलता तो इस भुलावे में क्यों रहना कि मैं तो ऐश्वर्यवान हूँ। त्याग का संकल्प मानो फलीभूत हो गया और मैंने संन्यास ग्रहण कर लिया। अतः हे श्रेणिक! हे राजन्! नाथ बनने का अभिमान नहीं करना। इसलिए मेरा नाम अनाथीमुनि रखा गया।

अनाथी मुनि ने जब स्वयं के जीवन का अनुभव, आप बीती राजा श्रेणिक को सुनायी तो राजा की आँखें भी फटी की फटी रह गई। सत्ता, सम्पत्ति, अधिकार सभी के प्रति उसका मोह छूट गया। जिन सामग्रियों के कारण वह अपने आप को नाथ कहता था वह भ्रम राजा श्रेणिक का समाप्त हो गया।

पुनः मेरा ध्यान अनाथ आश्रम पर आकर टिक गया। मैं सोचने लगा कि स्वयं की अनाथता का बोध करना और मानवता के नाते दूसरों की परवरिश करना दोनों अलग-अलग बात है। वास्तव में जो निष्काम, निस्पृह और नैतिकता के धरातल पर अनाथ आश्रम का सञ्चालन कर रहे हैं, उन सबको मैं प्रणाम करने लगा।

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो ! हमें नाथ बनने की दौड़ से सदैव बचाये रखना। सदैव जीवन की नश्वरता, अनाथता का बोध हमें करते रहना, कराते रहना। सेवा का अवसर आए तो उसे सौभाग्य समझ कर, सेवक बनें, न कि नाथ बनने की दौड़ में शामिल हों, ऐसी सद्बुद्धि देना, सद्बुद्धि देना।

-राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

### सुविचार

- ◆ जड़ के प्रति जो आपका लगाव है, वह आपकी जड़ता है।
- ◆ मनुष्य का कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या है।
- ◆ परिस्थितियों को अपना कर्मफल मानकर सहन करना धर्म है।
- ◆ सर्वक्लेश और सर्वदुःखों से मुक्त होने का उपाय आत्मज्ञान है।

-संकलित

## अध्यात्म की उपेक्षा करने वाला स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण

डॉ. चंचलमल चोराडिया

**आज भौतिक विज्ञान के चमत्कारों से प्रभावित अधिकांश व्यक्ति वैज्ञानिक तथ्यों को ही सुनना, मानना, समझना और ग्रहण करना पसन्द करते हैं, भले ही वे विज्ञान के मौलिक सिद्धान्तों से अपरिचित ही क्यों न हों। इसी कारण आज सनातन सिद्धान्तों की उपेक्षा विज्ञान के नाम पर हो रही है। आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान भी आज भ्रामक विज्ञापनों एवं मायावी आंकड़ों से प्रभावित हो रहा है।**

### विज्ञान क्या है?

विज्ञान का मतलब है विशिष्ट ज्ञान, जो क्रमबद्ध एवं सूत्रबद्ध ढंग से प्राप्त किया जायें अथवा विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने की वह विधि है, जिसमें तार्किक विधियों एवं प्रयोगों अथवा चेतना की अनुभूतियों के आधार पर सत्य के निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

किसी भी वस्तु के सूक्ष्मावलोकन एवं विश्लेषण से प्राप्त यथार्थ ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मतलब ऐसी क्षमता से कार्य करना होता है, जिसमें कम से कम निवेश में लाभ अधिक से अधिक हो तथा हानि और दुष्प्रभाव भी कम से कम हो। सत्य की खोज का नाम विज्ञान है अर्थात् विज्ञान का मतलब पूर्ण ज्ञान, सम्यग्ज्ञान होता है। विज्ञान सत्य को स्वीकारता है और झूठ को नकारता है। उसका एकमात्र आग्रह पूर्ण सत्य पर होता है। जैसे-जैसे आंशिक अथवा अधूरे सत्य की पोल खुलने लगती है, वर्तमान की वैज्ञानिक मान्यता को भविष्य में अवैज्ञानिक करार दे दिया जाता है अर्थात् जो सत्य को परिभाषित करता है, वही विज्ञान होता है। विज्ञान का आधार होता है सच्चा जो मेरा न कि मेरा जो सच्चा। वास्तव में जो सत्य है उसको स्वीकारने में किसको आपत्ति हो सकती है। परेशानी तो तब होती है जब विज्ञान के नाम पर आंशिक तथ्यों पर आधारित

अधूरे सत्य को पूर्ण बतलाने हेतु मायावी आंकड़े, झूठे, भ्रामक विज्ञापनों एवं संख्या बल का सहयोग लिया जाता है तथा वास्तविकता एवं सनातन सत्य को नकारा जाता है। अपनी पद्धतियों को वैज्ञानिक तथा अन्य पद्धतियों को अवैज्ञानिक बतलाने का दुष्प्रचार किया जाता है। हमारा दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है। विज्ञान के मूल मापदण्ड गैरि होने लगते हैं। किसी भी तथ्य को वैज्ञानिक मानने के लिए अन्तिम परिणामों की एकरूपता भी आवश्यक होती है, भले ही वह प्रयोग किसी के द्वारा कहीं पर भी क्यों न किया गया हो? अज्ञान का अर्थ ज्ञान का अभाव नहीं, परन्तु अल्प ज्ञान अथवा मिथ्याज्ञान भी होता है। अज्ञान से अविश्वास और भ्रान्ति पैदा होती है।

**प्रायः अधिकांश आधुनिक चिकित्सकों का अपनी खोजों की वैज्ञानिकता सिद्ध करने का दावा लगभग प्रायः ऐसा ही लगता है। विशेषकर स्वास्थ्य के नाम पर आयोजित होने वाले अधिवेशनों में प्रस्तुतिकरण का ऐसा ही आधार होता है। वैज्ञानिक शोध का आधार होना चाहिये अन्तिम परिणामों का स्पष्ट प्रकटीकरण। अर्थात् लाभ और हानि का सही विश्लेषण। प्रत्येक चिकित्सक अपनी उपलब्धियों को तो बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करते हैं, प्रचारित करते हैं, परन्तु जहाँ अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते अथवा जो दुष्प्रभाव होते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं, छिपाते हैं, प्रकट नहीं करते हैं तथा उनके कारणों का विश्लेषण तक नहीं करते हैं। स्वास्थ्य विज्ञान की शोध के आधार में एकरूपता होनी चाहिए अर्थात् जिन रोगियों अथवा प्राणियों पर दवाओं अथवा उपचार के जो प्रयोग किये जाते हैं, उसका खान-पान, रहन-सहन, स्वभाव, मानसिकता, आचार-विचार, सोच, चिन्तन-मनन की प्रक्रिया, पारिवारिक समस्याएँ तथा शरीर में अप्रत्यक्ष**

एवं सहयोगी रोगों की एकरूपता भी होनी चाहिए, क्योंकि यही कारण रोग से सम्बन्धित होते हैं। ऐसी परिस्थितियाँ सभी रोगियों में एक सी होना कभी भी सम्भव नहीं होती। अतः उसके अभाव में प्रस्तुत परिणाम कैसे वैज्ञानिक और सत्य पर आधारित समझे जा सकते हैं, चिन्तन का प्रश्न हैं?

### जीवन में चेतना का महत्व

सारा शरीर मुख्यता दो प्रकार की ऊर्जाओं से सञ्चालित होता है। प्रथम भौतिक ऊर्जा तथा दूसरी चैतन्य ऊर्जा। किसी एक के पूर्ण अभाव में मानव जीवन चल ही नहीं सकता। भौतिक ऊर्जा शरीर के अङ्गों, उपाङ्गों, अवयवों, तन्त्रों आदि के निर्माण हेतु आवश्यक साधन उपलब्ध करने में सहायक होती है और चैतन्य ऊर्जा उन उपलब्ध साधनों से उनका निर्माण, सञ्चालन और नियन्त्रण करती है। चैतन्य ऊर्जा के अभाव में न तो शारीरिक अवयवों आदि का निर्माण ही सम्भव है और न ही जीवन। आधुनिक चिकित्सकों को आज तक नाखून, आँखें एवं पसीने की एक बून्द आदि का निर्माण करने में सफलता क्यों नहीं मिली? इसी कारण भौतिक विज्ञान के विकास के बावजूद चैतन्य ऊर्जा के अभाव में अभी तक शरीर के लिए आवश्यक कोशिकाओं, रक्त अस्थियों, मांसपेशियों, नाड़ियों, वीर्य आदि अवयवों तथा आँख, कान, नाक जैसी इन्द्रियों एवं हृदय, फेफड़े, गुर्दे, लीवर जैसे अङ्गों का निर्माण प्रयोगशालाओं में सम्भव नहीं हो सकता। चैतन्य ऊर्जा का विकास आत्मा की पवित्रता के अनुसार होता है। अतः उपचार करते समय जो चिकित्सा पद्धतियाँ भौतिक और चैतन्य ऊर्जाओं को ठीक रखने, सन्तुलित रखने के सिद्धान्तों पर कार्य करती है, वे ही अपने आपको वैज्ञानिक बतलाने का वास्तव में दावा कर सकती है।

### भौतिक विज्ञान की सीमाएँ

भौतिक विज्ञान का आधार वही पदार्थ होता है, जिसे दिखाया जा सके, जो मापा जा सके, जो प्रयोगों, परीक्षणों से प्रमाणित किया जा सके। ऐसे परिणाम जो तथ्य, तर्क एवं आंकड़ों से लिपिबद्ध किये जा सकें।

जिसका आधार, निरीक्षण, विश्लेषण, निश्चित प्रक्रिया पर आधारित व्यवस्थित आँकड़ों तथा संकलित एवं प्रमाणित हों। जिसका उपयोग, सञ्चालन, नियन्त्रण प्रायः व्यक्ति स्वयं अथवा अन्य कोई व्यक्ति द्वारा निश्चित विधि का पालन कर बिना किसी बाह्य भेदभाव कर्ही भी किया जा सके। जैसे विज्ञान द्वारा विकसित सभी सुविधाओं के साधन, उपकरण, यन्त्र आदि का उपयोग कोई भी कर सकता है। उपर्युक्त मापदण्डों को जो पूर्ण न करते हों, उनको आज का मानव वैज्ञानिक तथ्य के रूप में स्वीकार करते संकोच करता है, भले ही वह अनुभूतियों द्वारा प्रमाणित ही क्यों न हों? उपर्युक्त मापदण्डों के आधार पर विज्ञान के नाम पर आज तक जो कुछ उपलब्धियाँ विकसित हुई हैं अथवा हो रही हैं, उन सभी का सम्बन्ध प्रायः भौतिक विज्ञान तक ही सीमित होता है। अनुभूति चेतना की ऊर्जा का माप और उनसे अप्रत्यक्ष पड़ने वाले प्रभाव उसमें उपेक्षित होते हैं, क्योंकि सभी अदृश्य, अरूपी पदार्थ उसकी पकड़ में नहीं आते।

### जड़ विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में भेद

भौतिक ज्ञान विज्ञान के लिए आवश्यक है। फिर भी भौतिक ज्ञान तो वही तक हमारा साथ दे सकता है जहाँ तक वह जानता है और सिद्ध कर सकता है। इन्द्रिय ज्ञान से पार अतिन्द्रिय ज्ञान का भी अस्तित्व होता है, जिसे आध्यात्मिक विज्ञान अथवा आत्म ज्ञान कहा जा सकता है। टेप से आवाज ग्रहण कर पुनः सुना जा सकता है। रेडियो, टी.वी., वी.सी.आर, कम्प्यूटर, रोबोट आदि मनुष्य की आज्ञानुसार कार्य करते हैं, परन्तु स्वतः सञ्चालित नहीं होते। आपत्तिकाल में आवश्यक स्वतन्त्र निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते।

जड़ विज्ञान का कार्य क्षेत्र होता है भौतिक विकास, भौतिक सफलताएँ, भौतिक उपलब्धियाँ आदि। उसका आधार होता है परावलम्बन, जबकि आध्यात्मिक विज्ञान से आत्मविकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उसका आधार होता है स्वावलम्बन अर्थात् स्वयं के द्वारा स्वयं का निरीक्षण, परीक्षण, नियन्त्रण,

सञ्चालन। उसका परिणाम होता है आत्मानुभूति। मनोबल और आत्मबल का विकास, अर्थात् भौतिक विज्ञान व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है, जबकि आध्यात्मिक ज्ञान मानव को स्वाभाविक बनाता है।

भौतिक विज्ञान प्रयोग में विश्वास करता है, जबकि अध्यात्म विज्ञान योग में। विज्ञान शक्ति की खोज करता है, जबकि अध्यात्म शान्ति की। जिस प्रकार बिजली का तार और उसमें प्रवाहित विद्युत् अलग-अलग होती है। उसी प्रकार जड़ से सम्बन्धित शरीर और चेतना से सम्बन्धित आत्मा अलग-अलग होती है। अतः दोनों से सम्बन्धित ज्ञान का लक्ष्य भी अलग-अलग होता है।

#### आध्यात्मिक साधकों की प्राथमिकता

स्वास्थ्य एवं जीवनयापन की दृष्टि से आत्म साधकों का जीवन प्राणिमात्र के प्रति करुणा, दया और अनुकरण, सर्व जीव हिताय, सर्व जीव सुखाय की लोकोक्ति को सार्थक करने वाला होता है। उनके शोध और साधना का मूल उद्देश्य आत्मा को निर्मल, शुद्ध, पवित्र बनाना होता है। अर्थात् आत्म पोषण का होता है, भले ही उन्हें कभी-कभी उसके लिए शरीर का कष्ट ही क्यों न सहना पड़े। उनके जीवन में क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषायों की मन्दता होने से वे अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में परेशान नहीं होते। उनमें प्रायः मानसिक आवेग नहीं आते, जो हमारी ग्रन्थियों को प्रभावित कर रोग का मुख्य कारण होते हैं। आचरण में अहिंसा, सत्य, नैतिकता, संयम की प्राथमिकता होती है। प्रायः ऐसे व्यक्ति सहनशील, सहिष्णु, निर्भिक और धैर्यवान् होते हैं। वाणी में विवेक और मधुरता का सदैव

ख्याल रखते हैं। उनका उद्देश्य होता है जीवन में चिरस्थायी आनन्द, शक्ति एवं स्वाधीनता की प्राप्ति। वे स्वयं के द्वारा स्वयं का आत्मावलोकन, निरीक्षण परीक्षण करते हैं। वे स्वयं के द्वारा स्वयं से अनुशासित होते हैं। उनका जीवन, शान्त, सन्तोषी, संयमी, सहज, सन्तुलित एवं सरल होता है। विचारों में अनेकान्तता, भावों में मैत्री, करुणा, प्रमोद तथा मध्यस्थिता अर्थात् सहजता, स्वदोष-दृष्टि, सजगता, सहनशीलता, सहिष्णुता, दया, सरलता, सत्य, विवेक, संयम, नैतिकता आदि गुणों का प्रादुर्भाव होता है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम्भाव, निस्पृहता, अनासक्ति विकसित होती है। व्यक्ति निर्भय, तनाव मुक्त बन सकता है। वाणी में सत्य के प्रति निष्ठा, सभी जीवों के प्रति दया, करुणा, मैत्री, परोपकार जैसी भावना और मधुरता प्रतिध्वनित होने लगती है। व्यक्ति का मनोबल और आत्मबल विकसित होने लगता है। व्यक्ति स्वावलम्बी, स्वाधीन बनने लगता है।

#### आध्यात्म से शून्य स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण

जिस चिकित्सा में शारीरिक स्वास्थ्य ही प्रमुख हो, मन, भावों अथवा आत्मा के विकार जो अधिक खतरनाक, हानिकारक होते हैं, गौण अथवा उपेक्षित होते हों या बढ़ते हों, ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को ही वैज्ञानिक समझने वाले विज्ञान की बातें भले ही करते हों, विज्ञान के मूल सिद्धान्तों से अपरिचित लगते हैं। विज्ञान शब्द का अवमूल्यन करते हैं। सनातन सत्य पर आधारित प्राकृतिक सिद्धान्तों को नकारते हैं।

-चेरेडिया भवन, जाललेरी गेट के बाहर, जोधपुर-  
342003(राज.)

#### जिनवाणी पर अभिमत

श्री उरार. प्रसन्नरचन्द्र चेरेडिया

हमारे जैन समाज की प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में जिनवाणी श्रेष्ठ पत्रिका है। इसमें बहुत सुन्दर ज्ञानवर्धक लेख आते हैं, जो हमें नई-नई जानकारी देते हैं।

अधिकतर हम हमारे यहाँ आने वाली पत्र-पत्रिकाओं को अनदेखा कर एक तरफ सरका देते हैं। पर आचार्यश्री के दीक्षा-शताब्दी अङ्क मुझे बहुत अच्छे लगे। मन सुहावती रचनाएँ पढ़कर आनन्द की लहर आती है। मन शान्त और हृदय तृप्त हो जाता है।

-52, काल्याशी फिल्टर स्ट्रीट, चेन्नई-79

## आओ मिलकर कर्मों को समझें (12)

### (मनःपर्याय ज्ञान का स्वरूप)

श्री धर्मचन्द्र जैन

**जिज्ञासा-** मनःपर्याय ज्ञान किसे कहते हैं?

**समाधान-** जिस ज्ञान के द्वारा दूसरे सन्नी जीवों के मन के भावों को सीधा आत्मा से जाना जा सके, उसे मनःपर्याय ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान को मनःपर्याय ज्ञान अथवा मनःपर्यायज्ञान के नाम से भी जाना जाता है। यह ज्ञान विकल प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।

**जिज्ञासा-** मनःपर्याय ज्ञान की प्राप्ति किन जीवों को होती है?

**समाधान-** मनःपर्याय ज्ञान की प्राप्ति के लिए नन्दीसूत्र में तथा भगवतीसूत्र शतक 8/2 में बताया है कि यह ज्ञान निम्नांकित योग्यता वाले जीवों को होता है—(1) मनुष्य हो, (2) गर्भज सन्नी मनुष्य हो, (3) कर्मभूमिज मनुष्य हो, (4) संख्यातर्वर्ष की आयु वाला हो, (5) पर्याप्तक हो, (6) सम्यगदृष्टि हो, (7) संयत हो, (8) अप्रमत्त संयत हो, (9) ऋद्धि प्राप्त अप्रमत्त संयत हो।

संख्यातर्वर्ष की आयु से यहाँ तात्पर्य कम से कम 9 वर्ष से लेकर अधिक से अधिक एक क्रोड़ पूर्व तक की आयु वाला समझना चाहिए। उक्त नौ बारें मिल जाने पर भी जब तक मनःपर्याय ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम योग्य विशुद्ध परिणाम नहीं हो तथा जब तक मनःपर्याय ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम न हो जाय तब तक उस जीव को मनःपर्याय की प्राप्ति नहीं होती है।

मनःपर्याय ज्ञान की प्राप्ति तो ऋद्धिमंत अप्रमत्त संयत को ही होती है, किन्तु बाद में वह साधक प्रमत्त संयत के रूप में भी रह सकता है। यही कारण है कि मनःपर्याय ज्ञानी में छठे से बारहवें तक गुणस्थान माने जाते हैं।

**जिज्ञासा-** मनःपर्याय ज्ञान से किन-किन सन्नी जीवों

के मन की बात को सीधे आत्मा से जाना जा सकता है?

**समाधान-** मनःपर्याय ज्ञान में अद्वाई द्वीप और दो समुद्र में रहे हुए सन्नी जीवों के मन की बात जानी जा सकती है। ऊपर में ज्योतिषी देवों की तथा भद्रशाल वन में रहने वाले सन्नी जीवों की तथा नीचे में सलिलावती तथा वप्रा विजय के अन्तर्गत रहने वाले सन्नी मनुष्यों तथा सन्नी तिर्यज्वों के मनोगत भावों को आसानी से जाना जा सकता है।

**जिज्ञासा-** मनःपर्याय ज्ञान के कौन-कौन से भेद होते हैं?

**समाधान-** मनःपर्याय ज्ञान के दो भेद होते हैं—1. ऋजुमति और 2. विपुलमति। ऋजुमति मनःपर्याय ज्ञान से मन की पर्यायों को सामान्य रूप से जाना जाता है, किन्तु विपुलमति मनःपर्याय से ऋजुमति की अपेक्षा अधिक विशिष्ट पर्यायों को, अधिक विशुद्धि से, अधिक गहराई से जाना जा सकता है।

**जिज्ञासा-** ऋजुमति तथा विपुलमति मनःपर्याय ज्ञान के अन्तर को उदाहरण से कैसे समझ सकते हैं?

**समाधान-** दो उदाहरणों से ऋजुमति तथा विपुलमति मनःपर्याय ज्ञान का अन्तर समझा जा सकता है—1. घट का उदाहरण 2. छात्रों का उदाहरण।

1. जैसे अमुक व्यक्ति ने घट का चिन्तन किया, तो इतना जान लेना कि अमुक व्यक्ति घट का चिन्तन कर रहा है। किन्तु घट से सम्बन्धित पर्यायों को नहीं जान पाता। यह रूप ऋजुमति मनःपर्याय की तरह समझा जा सकता है। विपुलमति वाला घट को जानने के साथ ही वह अमुक देश, अमुक काल में बना है, अभी इसका उपयोग अमुक रूप में हो रहा है आदि भी जानना है।

2. जैसे दो छात्रों ने एक ही विषय की परीक्षा में

भाग लिया, दोनों ही उत्तीर्ण हो गये, किन्तु एक ने सर्वाधिक अङ्ग्रेज प्राप्त कर प्रथम श्रेणि प्राप्त की तथा दूसरे ने द्वितीय श्रेणि प्राप्त की। स्पष्ट है प्रथम श्रेणि पाने वाले का ज्ञान अधिक रहा तथा द्वितीय श्रेणि वाले का उससे कुछ कम रहा। ठीक इसी प्रकार ऋचुमति की अपेक्षा विपुलमति का ज्ञान अधिकतर विपुलतर तथा विशुद्धतर होता है।

ऋचुमति मनःपर्याय ज्ञान तो प्रतिपाती (गिरने वाला) भी हो सकता है, किन्तु विपुलमति मनःपर्याय ज्ञानी अप्रतिपाती ही होता है। उसी भव में केवलज्ञान को प्राप्त कर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो जाता है।

**जिज्ञासा-** मनःपर्याय ज्ञान क्या साध्वियों को भी हो सकता है?

**समाधान-** मनःपर्याय ज्ञान अप्रमत्त संयतों को तो ही ही सकता है, साथ में साध्वियों को भी हो सकता है। जो ऋद्धि प्राप्त अप्रमत्त साध्वियाँ होती हैं, उनमें किन्हीं-किन्हीं को हो सकता है। भगवतीसूत्र में जहाँ ज्ञानलब्धि का वर्णन किया है, वहाँ पर बतलाया कि स्त्रीवेद में चार ज्ञान की भजना है, अर्थात् स्त्रीवेद में मनःपर्याय ज्ञान हो सकता है। इसी प्रकार कर्मग्रन्थ भाग-3 में भी स्त्रीवेद मार्गणा में 4 ज्ञान मिलने का उल्लेख किया गया है। इनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सातवें गुणस्थानवर्ती साध्वी को भी मनःपर्यायज्ञान प्राप्त होने में कोई बाधा नहीं है। यहाँ तक कि ऋचुमति तथा विपुलमति दोनों ही प्रकार का मनःपर्यायज्ञान साध्वियों को भी हो सकता है।

**जिज्ञासा-** क्या भरत-ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान में मनःपर्यायज्ञान हो सकता है?

**समाधान-** विशेषावश्यक भाष्य में उल्लेख है कि वर्तमान में भरत-ऐरवत क्षेत्र में साधु-साध्वियों को मनःपर्यायज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है। यद्यपि ऋद्धि

प्राप्त अप्रमत्त अनगार तो हो सकते हैं, किन्तु उनमें मनःपर्याय ज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम योग्य विशुद्धि नहीं होने से मनःपर्यायज्ञान नहीं हो पाता है।

**जिज्ञासा-** मनःपर्यायज्ञान से मन की पर्यायों को प्रत्यक्ष जानते हैं अथवा चिन्त्यमान वस्तु को प्रत्यक्ष जानते हैं?

**समाधान-** मनःपर्यायज्ञान का विषय मनोद्रव्य अर्थात् मनोवर्गणा के पुद्गल स्कन्ध है। ये पौद्गलिक द्रव्य मन का निर्माण करते हैं। मनःपर्याय ज्ञानी उन पुद्गल स्कन्धों को तो प्रत्यक्ष जानता है। ज्ञानात्मक चित्त को जानने की क्षमता मनःपर्याय में नहीं है। ज्ञानात्मक चित्तमूर्त है, जबकि मनःपर्यायज्ञान मूर्त वस्तु को ही जान सकता है। मन के द्वारा चिन्त्यमान वस्तु को अनुमान से जानता है। द्रव्य मन में जो आकृतियाँ बन रही हैं, उन आकृतियों-पर्यायों को प्रत्यक्ष देखकर उनके आधार से चिन्त्यमान वस्तु को अनुमान से जाना जाता है। विशेषावश्यक भाष्य में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने तथा आचार्य सिद्धसेन गणि ने इस विषय को और अधिक स्पष्ट करके बतलाया है।

उनका अभिमत है कि मनःपर्यायज्ञान से चिन्त्यमान अरूपी वस्तु ही नहीं, स्तम्भ, कुम्भ आदि रूपी वस्तु भी प्रत्यक्ष नहीं जानी जा सकती। उन्हें तो अनुमान से जाना जा सकता है। मनःपर्यायज्ञान से तो मन के पर्यायों अथवा मनोगत भावों का साक्षात्कार किया जा सकता है। वे पर्याय अथवा भाव चिन्त्यमान विषय-वस्तु के आधार पर बनते हैं।

भाव मन ज्ञानात्मक है। ज्ञान अमूर्त है। छद्मस्थ मनुष्य अमूर्त को प्रत्यक्ष नहीं जान सकता। वह चिन्तन के क्षण में द्रव्य मन के पुद्गल-स्कन्ध की विभिन्न आकृतियों को जानता है। इसलिए मन के पर्यायों को जानने का अर्थ भाव मन को जानना नहीं होता, किन्तु भाव मन के कार्य में निमित्त बनने वाले मनोवर्गणा के पुद्गल-स्कन्धों के पर्याय को जानना होता है।

## सहयोग

संकटकाल में छोटा-बड़ा सहयोग हर व्यक्ति का दायित्व है। कोरोनाकाल में जो क्षति हुई है, उसमें करुणा एवं भ्रातृत्व भाव से हम यथासम्भव योगदान अवश्य करें।

## अनित्य भावना

श्री लक्ष्मलाल जैन (देवली वाले)

### पहली भावना-अनित्य भावना (अनुप्रेक्षा)

#### अनित्य भावना के छन्द

जोबन, गृह, गौ, धन, नारी, हय गय, जन आङ्गाकारी।  
इन्द्रिय-भोग छिन थाई, सुर-धनु चपला चपलाई॥1॥  
राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।  
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥2॥  
कहा गये चक्री जिन जीता भरत खण्ड सारा।  
कहा गये वे शमरु लछमन जिन रावण मारा॥  
कहा कृष्ण रुक्मणि सतभामा अरु सम्पति सगरी।  
कहा गये वे रङ्गमहल अरु सुवरन की नगरी॥  
नहीं रहे वे लोभी कौरव जूझ मरे रन में।  
गये राज तज पाण्डव बन को अग्नि लगी तन में॥  
मोह नींद से उठरे चेतन मुझे जगावन को।  
हो दयाल उपदेश करें, गुरु बारह भावन को॥4॥  
अञ्जुली-जल सम जवानी क्षीण होती जा रही।  
प्रत्येक पल जर्जर जरा नज़दीक आती जा रही॥  
काल को काली घटा प्रत्येक क्षण मण्डरा रही।  
किन्तु पल-पल विषय-तृष्णा तरुण होती जारही॥5॥

अनित्य भावना के उपर्युक्त छन्दों के अनुसार यौवन, मकान, गाय-भैंस, धन-सम्पत्ति, स्त्री, पुत्र, घोड़ा-हाथी, कुटुम्बीजन, नौकर-चाकर, राजा, राणा, छत्रपति, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण आदि अनेक महापुरुष तथा पाँच इन्द्रियों के विषय-यह सर्व वस्तुएँ क्षणिक हैं, अनित्य हैं, नाशवान हैं।

जिस प्रकार इन्द्र-धनुष और बिजली देखते ही देखते विलीन हो जाते हैं, उसी प्रकार यह यौवनादि कुछ ही काल में नाश को प्राप्त होते हैं, वे कोई पदार्थ नित्य और स्थायी नहीं हैं, किन्तु निज शुद्धात्मा ही नित्य और

स्थायी है।

ऐसा स्वोन्मुखतापूर्वक चिन्तवन करके सम्यग्दृष्टि जीव वीतरागता को वृद्धि करता है वह ‘अनित्य भावना’ (अनुप्रेक्षा) है।

पुण्य पाप कर्मों के उदय के अनुसार प्राप्त मनुष्य आदि पर्याय आदि संयोग नित्य नहीं हैं, जिसका संयोग होता है उसका वियोग भी होता है।

इस जगत् में जीव को जो भी संयोगी पदार्थ तथा अवस्थाएँ प्राप्त होती हैं वे सभी अनित्य हैं जबकि इन अवस्थाओं को प्राप्त होने वाला जीव (आत्मा) त्रिकाली अथवा नित्य है, जो अनित्य है वह रमने योग्य नहीं है ऐसा चिन्तवन करना ही अनित्य-भावना है।

द्रव्य तथा उसके गुण नित्य हैं, जबकि पर्याय अनित्य है। लोक में छह जाति के द्रव्य पाये जाते हैं-जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

जीव अनन्तानन्त, पुद्गल उससे भी अनन्तानन्त गुणा अधिक, धर्म, अधर्म, आकाश एक-एक तथा काल द्रव्य असंख्यात है। ये सभी द्रव्य अनादि-निधन हैं। न तो कोई द्रव्य नवीन उत्पन्न होता है और न ही किसी द्रव्य का कभी नाश होता है।

प्रत्येक द्रव्य अनन्तगुणों का धारी है। द्रव्य में गुण, सामान्य तथा विशेष दो भेद से होते हैं। जो गुण सभी द्रव्यों में समान रूप से पाये जाते हैं उन्हें सामान्य गुण कहते हैं।

अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघु एवं प्रदेशत्व-ये छह गुण सभी द्रव्यों में समान रूप से पाये जाते हैं। ज्ञान, दर्शन, श्रद्धा, वीर्य, सुख आदि जीव के तथा स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण आदि पुद्गल के विशेष गुण हैं।

द्रव्य तथा उसके गुणों की अवस्था बदलना पर्याय है, पर्याय अनेक प्रकार की है, जैसे-सूक्ष्म-स्थूल पर्याय, समान जातीय, असमान जातीय पर्याय, व्यञ्जन पर्याय, अर्थ पर्याय, स्वभाव-विभाव पर्याय, क्रमिक-सहभावी पर्याय आदि ये सभी पर्यायें उत्पाद-व्यय रूप तथा विनाशीक हैं, एवं द्रव्य (त्रिकाली) अविनाशी हैं।

जीव को मनुष्यादि रूप देह सहित अवस्था असमान जातीय पर्याय है। कर्मोदय से प्राप्त अशुद्ध जीवन, यौवन, परिवार आदि का संयोग क्षणिक एवं नाशवान है, इनकी प्राप्ति तथा वियोग में हर्ष-विषाद करना अज्ञान है।

पुण्योदय से प्राप्त सुन्दर शरीर, इन्द्रियों के उत्तम विषय, आज्ञाकारी स्त्री, पुत्र, नौकर-चाकर तथा धन-सम्पत्ति आदि क्षण भंगुर तथा नाशवान हैं। संयोग के काल में भी ये आकुलता ही प्रदान करने वाली है, अतः इनमें सुख मानकर रमना योग्य नहीं है।

अनित्य भावना सम्बन्धी उक्त कथनों में यद्यपि संयोगी पदार्थों और पर्यायों की क्षण भंगुरता का ही ज्ञान कराया गया है, तथापि प्रयोजन उनसे विरक्ति उत्पन्न करना है, दृष्टि को वहाँ से हटाकर स्वभाव सन्मुख ले जाना है। यही कारण है कि अनित्य भावना में जहाँ एक

ओर पर्यायों की अनित्यता की चर्चा की जाती है तो दूसरी ओर द्रव्य स्वभाव की नित्यता का ज्ञान भी कराया जाता है।

#### अनित्य भावना के चिन्तन से लाभ

अनित्य भावना (अनुप्रेक्षा) का चिन्तन करने से शरीर, परिवार, धन-सम्पत्ति आदि अनित्य पदार्थों से एकत्व-ममत्व का अभाव होता है तथा इनके संयोग-वियोग से उत्पन्न आकुलता समाप्त होती है सदा ही नित्य ऐसे अपने चेतन स्वभाव की महिमा आती है।

यह भी चिन्तन पर्याय दृष्टि से है, द्रव्यदृष्टि से अपनी आत्मा को नित्य, ध्रुव शुद्ध रूप देखना एवं पर्याय दृष्टि को गौण करना यही अनित्य भावना (अनुप्रेक्षा) है।

#### छन्द के सन्दर्भ

छह ढाला, भूधरदासजी कृत बारह भावना, जयचन्दजी कृत बारह भावना, मंगतरामजी कृत बारह भावना एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत बारह भावना से सम्बन्धित पुस्तकों के आधार से लिये गये हैं।

#### विषयवस्तु का सन्दर्भ

तत्त्वार्थसूत्र, छह ढाला, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि ग्रन्थ।

-139, महावीर नगर, इन्दौर (म.प्र.)

## जैनधर्म धर्म नहीं जीवन जीने की कला है

श्रीमती मंजू जैन

जैनधर्म सिर्फ धर्म नहीं जीवन जीने की कला से है परिपूर्ण चारित्रिक गुणों से सुशोभित है इसके नियम और कानून अहिंसा इसका मूल मन्त्र सत्य इसका ध्येय अस्तेय इसका गहना है शील है परिवेश परिग्रह के त्यागी बने उसके धारण हार साम्यभाव, दया, नैतिकता और परोपकार सब है उसके परिवार त्याग, तपस्या का भी

इसमें समावेश कर्मों की निर्जरा करे त्यागे राग और द्वेष कुछ संकल्पों का भी देता है सन्देश जानबूझ कर न बोले कभी झूठी बात प्राणिमात्र से प्रेम करे न करे उनकी घात मदिरा अभक्ष्य तो बहुत दूर की बात यहाँ तो होता है जर्मीकन्द का त्याग रात्रिभोजन-त्याग से रहे स्वास्थ्य अनुकूल पानी भी छान कर पीने से बीमारी रहे दूर समता और शान्ति में सहे दुःख की मार ये सभी बातें हैं जीवन का आधार।

-313/15 ए. नरेङ्गा (उत्तरायण्डेश)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## बूतन साहित्य



श्री गैरेत्मचन्द जैन

जीवन जो आप बचा सकते हैं-लेखक-पीटर सिंगर।  
अनुवादक-नन्दकिशोर आचार्य। ग्रकाशक एवं ग्राप्ति स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2524828, 2520230, ISBN No. 978-81-946417-6-6, ग्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ-264, मूल्य-520 रुपये।

श्री पीटर सिंगर द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित पुस्तक 'The life you can save' का हिन्दी अनुवाद श्री नन्दकिशोरजी आचार्य ने 'जीवन जो आप बचा सकते हैं' शीर्षक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। श्री पीटर सिंगर की वैश्विक गरीबी-उन्मूलन में महती भूमिका रही है। इन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबी-उन्मूलन के बारे में अध्ययन, विचार, संवाद और लोकोपकार के कार्य करने में समर्पित किया है। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में विश्व के प्रमुख विचारकों एवं सम्पन्न वर्ग के प्रबुद्ध जनों के समक्ष असहाय एवं सामान्य जनों की समस्याओं के बारे में ज्वलन्त प्रश्न उपस्थित किये हैं और उनको सोचने के लिए मजबूर किया है। लेखक ने दिन-प्रतिदिन घटित होने वाली सामान्य घटनाओं को प्रस्तुत कर पाठक को सोचने के लिए विवश कर दिया है कि वह अपना मूल्यांकन करे कि वह मानवता के किस स्तर पर अपने आपको खड़ा हुआ महसूस करता है। लेखक ने पाठक को इस बारे में सोचने को मजबूर कर दिया कि समर्थ होते हुए भी हम आवश्यकता पड़ने पर किसी असहाय अथवा पीड़ित व्यक्ति की सहायता क्यों नहीं कर पाते हैं?

इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी चिन्तन किया गया है। मानव-प्रकृति का चित्रण करते हुए दान की संस्कृति पर भी सुन्दर विचार व्यक्त किये हैं और यह भी स्पष्ट किया है कि हम अधिक दान क्यों नहीं देते? दान एवं सहायता के सम्बन्ध में लेखक ने यथार्थवादी

मानक प्रस्तुत किये हैं। दान एवं सहायता के सम्बन्ध में अनेक विश्वकल्याणकारी संस्थाओं का परिचय देते हुए उनके आँकड़े भी प्रस्तुत किये हैं। अनेक प्रमुख धनाद्यव पुरुषों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जिन्होंने अपनी आय का 50 प्रतिशत तक धन लोकोपकारी संस्थाओं को दान कर दिया। लेखक ने यह तथ्य भी प्रकट किया है कि हम अनेक अवसरों पर विलासितापूर्ण वस्तुएँ खरीदने और व्यर्थ के कार्यों में बहुत अधिक धन व्यय कर देते हैं, जबकि उसको बचाकर हम जरूरतमन्द व्यक्ति की सहायता कर सकते हैं। पुस्तक के अन्त में लेखक ने यह भी बताया है कि एक समझदार व्यक्ति किसी प्रकार से किसी पीड़ित व्यक्ति की सहायता कर सकता है। परिशिष्ट में लेखक ने दान के अनुपात एवं संस्थाओं के बारे में बताया है।

प्रस्तुत अनुवाद सुन्दर, सरस एवं सुगम शैली में किया गया है, जो पाठक के अन्तःस्तल को झकझोर देता है और उसे मानवीय सहायता, सहयोग एवं दान करने के लिए प्रेरित करता है। प्रस्तुत पुस्तक सभी नागरिकों के लिए पठनीय एवं आचरणीय है।

**जतन की जिन्दगी :** जैनधर्म-लेखक-प्रो. प्रेमसुमन जैन। ग्रकाशक एवं ग्राप्ति स्थल-भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी (पंजीकृत), 29, विद्या विहार कालोनी, सुन्दरबास, उदयपुर (राज.) ग्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ-88 + 8 = 96, मूल्य-100 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक 'जतन की जिन्दगी : जैनधर्म' में लेखक ने जैनधर्म एवं दर्शन के बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने का सफल प्रयास किया। जैनधर्म में जयणा (यतना) का विशेष महत्व है। चतुर्विधि संघ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की प्रत्येक प्रवृत्ति यतना पूर्वक (विवेक पूर्वक) होती है ताकि किसी भी प्रकार के त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा नहीं हो अथवा श्रावक-श्राविका की प्रवृत्ति में कम से कम हिंसा हो। इसके लिये भगवान महावीर ने प्रत्येक कार्य को यतना पूर्वक अर्थात् पाँच समितियों का पालन करते हुए करने के निर्देश दिये

हैं। प्रस्तुत पुस्तक के शीर्षक 'जतन की ज़िन्दगी' में प्रयुक्त 'जतन' शब्द यतना के लिए ही प्रयुक्त किया गया है जो साभिप्राय एवं सार्थक है।

प्रस्तुत पुस्तक में जैनधर्म की प्राचीनता को सिद्ध करते हुए जैनधर्म के प्रवर्तक 24 तीर्थद्वारों एवं 63 शलाका पुरुषों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् भगवान महावीर के शासन के प्रमुख गणधर एवं आचार्यों का परिचय दिया गया है। जैनदर्शन के साथ-साथ जैनगमों का विस्तृत उल्लेख किया गया है। तत्त्वज्ञान एवं सिद्धान्तों में अनेकान्तवाद और कर्मसिद्धान्त के साथ जैनधर्म के प्रमुख सिद्धान्त अहिंसा आदि 5 महाब्रतों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। समता को जैनधर्म की आधारशिला बतलाया है। भगवान महावीर ने अपने शासन में नारियों को भी पुरुष के बराबर अधिकार दिया है और यहाँ तक कि उनको सर्वोच्च पद तीर्थद्वार एवं मुक्ति के लिए भी योग्य बतलाया है। जैनधर्म में प्रमुख सम्प्रदायों का परिचय और मन्दिर, पर्व, त्योहार, तीर्थस्थल, ज्ञान-भण्डार आदि के बारे में भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी है। जैनधर्म में पर्यावरण संरक्षण, भोजन में संयम, शाकाहार और संयमित जीवनशैली आदि विषयों पर भी सम्यक् प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार से प्रस्तुत पुस्तक में जैनधर्म के सम्बन्ध में सामान्य रूप से संक्षेप में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई है, जो सभी के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

**प्राकृत साहित्य के विविध आयाम-**लेखिका-श्रीमती डॉ. सरोज जैन। **प्रकाशक एवं ग्राप्ति स्थल-**भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी (पंजीकृत), 29, विद्या विहार कालोनी, सुन्दरवास, उदयपुर (राज.) **प्रथम संस्करण-** 2020, **पृष्ठ-**192 + 8 = 200, **मूल्य-**300 रुपये।

लेखिका ने प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत भाषा के साहित्य के विविध आयामों के क्रमिक विकास का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया है। विशेष तौर पर प्राकृत की विभिन्न भाषाओं यथा-अर्धमागधी, शौरसेनी,

पैशाची, पालि और अपभ्रंश भाषा के साहित्य और कवियों का परिचयात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने सर्वप्रथम सभी लोगों की समस्या के समाधान हेतु प्राकृत भाषा के आगमों और अन्य साहित्य में प्रयुक्त तनावमुक्ति के सूत्रों को प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् अन्य अध्यायों में नारी की भूमिका जैन संस्कृति के विकास और गृहस्थी के परिपालन में दर्शायी है। प्राकृत भाषा के साहित्य में वर्णित नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। जैनधर्म और तीर्थों के उद्धार एवं निर्माण में प्रमुख नारियों के योगदान का भी वर्णन प्रस्तुत किया है। साथ ही जैन प्राकृत साहित्य के सम्पादन करने वाली विदुषी साध्वी एवं श्राविकाओं का भी परिचय दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में 12वीं शताब्दी के प्रमुख जैन कवियों के वर्णन के साथ-साथ उनके द्वारा रचित साहित्य के बारे में भी जानकारी प्रस्तुत की गई है। प्राकृत साहित्य में वर्णित श्रावकाचार, जीवनमूल्य, यत्नाचार, पूजा और भक्ति को भी उजागर किया गया है। पुराण ग्रन्थों में वर्णित समाधिमरण का भी सुन्दर विवेचन किया गया है। इसके साथ ही प्राकृत साहित्य में प्रस्तुत तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक स्थिति का चित्रण किया गया है। नाटकों की प्राकृत और सङ्कृत का भी परिचय दिया गया है। पुस्तक में उपसर्ग कथाओं का वैशिष्ट्य बतलाते हुए 'सुनील-प्राकृत समग्र' ग्रन्थ की सूक्तियों के बारे में भी विस्तार से परिचय दिया गया है। पुस्तक के सभी अध्यायों में वर्णित तथ्यों की प्रामाणिकता के लिए सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची भी साथ में ही देंदी गई है।

प्रस्तुत पुस्तक प्राकृत भाषा के साहित्य के विविध आयामों की जानकारी प्राप्त करने के लिए पठनीय एवं उपयोगी है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयगां', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फर्म, जयपुर (राजस्थान)

## लमाचाण विविधा

### पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जन्मदिवस पर देशभर में तप-त्याग

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 83वें जन्मदिवस पर 4 अप्रैल, 2021 को देशभर में एकाशन, उपवास, आयम्बिल आदि तप-साधना के साथ सरकारी नियमों की पालना करते हुए कार्यक्रम सम्पन्न हुए। जहाँ-जहाँ भी सन्त-सती विराजित रहे वहाँ पर एवं अन्य ग्राम-नगरों में भी कोरोना की मर्यादानुसार तप-त्याग हुए।

पीपाड़ श्रीसंघ के श्रावकसंघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल सभी सर्वतोभावेन सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं श्रद्धाभक्ति, भावना, धर्मध्यान, तप-त्याग में अनवरत सहभागिता धर्मोल्लासपूर्वक गतिशील हैं।

-गिरर्ज जैन

**सर्वाईमाधोपुर-**पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 को चौथ का बरवाड़ा के निवासियों ने भारी मन से विदा किया, क्योंकि सन्तों के सान्निध्य से बहुत कुछ सीखा और पाया।

30 मार्च, 2021 को जब जैनपुरी में सन्त पथरे, सम्पूर्ण ग्रामवासी जाति से भले ही मीणा हैं, लेकिन हर घर का सदस्य जैनधर्म में आस्था और विश्वास रखता है और प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर नवकार सूत्र एवं चौबीस तीर्थड़करों के नाम थिरकते रहते हैं। यहाँ का हर व्यक्ति अपने आपको जैनी कहलाते हुए गौरव का अनुभव करता है। यही कारण है कि सन्त यहाँ एक दिन रुकने का विचार करके आए थे, मगर उनकी भावनाओं को देखते हुए अगले दिन भी रुकना पड़ा और प्रवचन सभा में देखते ही देखते पूरा गाँव प्रवचन में उमड़ पड़ा। रात्रि चर्चा में यहाँ के भाइयों ने सन्तों के पास बैठकर जैनधर्म के मर्म को भी समझने का प्रयास किया।

1 अप्रैल को सन्तों ने अलीगढ़-रामपुरा की ओर कट्टम बढ़ाए तो एक ओर गाँव के अनेक लोगों ने साथ चलकर तो दूसरी ओर अलीगढ़-रामपुरा के निवासियों ने अगवानी में पहुँचकर प्रवेश के दृश्य को मनभावन बना दिया। प्रवचन सभा में उपस्थित लोगों से आङ्गन करते हुए श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आगामी 4 तारीख को हमारे संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर का 83वाँ जन्मदिवस है तो 83 एकाशन तप, आयम्बिल, उपवास और तेले करने का लक्ष्य रखें। चैत्र बदि अष्टमी के दिन आचार्यप्रवर के जन्मदिवस के पावन प्रसङ्ग पर सम्पूर्ण सर्वाईमाधोपुर क्षेत्र के अनेक ग्राम नगरों से श्रद्धालु प्रवचन सभा में उमड़ पड़े और प्रवचन का प्रारम्भ करते हुए श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे गुरुदेव अप्रमत्ता, स्वानुशासन, आचारनिष्ठा के जीवन्त आदर्श हैं। श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर के जीवन की अनेक विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कई रोचक प्रसङ्ग फरमाये जिनको सुनकर हर कोई व्यक्ति श्रद्धाभिभूत था।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने खचाखच भरे हुए प्रवचन हाल में जब संघनायक के जीवन के कई अनछुए प्रसङ्गों का जिक्र किया तो उपस्थित लोगों की श्रद्धा अन्तर में हिलोरे मार रही थी और हर कोई संघनायक की विशेषताओं पर प्रणत था। संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर के जन्मदिवस के पावन प्रसङ्ग को लेकर लोगों ने गुरुभक्ति का परिचय देते हुए सजोड़े आजीवन शीलब्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये-(1) श्रीमती इन्द्राजी-रमेशचन्द्रजी जैन, सोलतपुरा वाले (2) श्रीमती सुशीलाजी-शुभकरणजी जैन रामपुरा और (3) श्रीमती सम्पतदेवी-रामस्वरूपजी जैन गाड़ोली वाले।

मध्याह्न में आचार्यश्री के जीवन पर एक प्रतियोगिता रखी गई जिसका कुशल सञ्चालन विकला बहिन सुश्री अदितिजी जैन ने किया एवं बढ़-चढ़कर प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसी क्रम में यहाँ पर 6 से 13 अप्रैल तक बालिकाओं और महिलाओं का शिक्षण शिविर रखा गया जिसमें तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम के साथ जीवन-निर्माण के बारह भावना आदि पर विशेष अध्यापन सवाईमाधोपुर से आकर सेवानिवृत्त शिक्षक श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, तत्त्वों की विशेष जानकार श्राविकारत्न श्रीमती कुमकुमबाईजी जैन, श्राविका मण्डल क्षेत्रीय प्रधान श्रीमती रजनीजी जैन एवं विरक्ता बहिन सुश्री अदितिजी जैन ने बड़े उत्साह के साथ किया। शिक्षण शिविर के समापन के दिन मुख्य वक्ता के रूप में यहाँ के जाये, जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने अपने उद्बोधन में सारगर्भित चर्चा करते हुए बताया कि हमें लौकिक देवी-देवताओं की नहीं अरिहन्त-सिद्ध देवों एवं पाँच महाब्रतधारी गुरुओं की उपासना करनी चाहिए।

आगे चर्चा करते हुए बताया कि हम कितने सम्यक्त्वी हैं? हम सिर्फ नाम से जैन नहीं अपने आचार, विचार से भी जैन बनें। इसके लिए हमें पूर्ण रूप से सम्यक्त्वी बनना होगा। हमें अपने सुदेव, सुगुरु और सुधर्म पर दृढ़ श्रद्धा और आस्था रखनी होगी। निश्चित ही हमें अपने गुरु भगवन्तों और प्रभु के द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलना होगा। श्रावक एवं श्राविकाओं को 12 ब्रतधारी बनकर जिनवाणी पर पूर्ण आस्था रखनी होगी। तभी हम सच्चे जैन कहलाएँगे और अपने संघ और समाज की उन्नति में सहयोग प्रदान कर पायेंगे।

-ऋषभ जैन

**शान्तिनगर (बैंगलूरु)-व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.** आदि ठाणा-5 के शुभ सान्निध्य में प्रथम तीर्थङ्कर भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आगमज्ञ पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का जन्म दिवस दो-दो सामायिक, उपवास, आयम्बिल, एकाशन आदि अनेक छोटे-बड़े, ब्रत-पच्चकखाण एवं त्याग-तप से सादीपूर्वक रत्नसंघ और सरकार द्वारा निर्धारित सीमित उपस्थिति में अपूर्व श्रद्धाभक्ति से मनाया गया। महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा. ने श्रद्धा तथा गुरुभक्ति पर बल देते हुए अनेक उद्घरणों से पूज्य प्रवर की विशेषताएँ बतायी। महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा. ने गुरु हीरा महिमा गुणगान गीतिका प्रस्तुत की। प्रबुद्ध एवं सुज्ञ धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रखर व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. ने फरमाया कि जीओ ऐसे जो लिखा जाए, लिखो ऐसे जो पढ़ा जाए-ऐसा ही पठनीय-मननीय-अनुकरणीय-वन्दनीय जीवन भगवान आदिनाथ और आचार्यश्री हीरा का रहा है। असि-मसी-कृषि आदि जीवन-निर्वाह तथा जीवन-निर्माण की विधि भगवान आदिनाथ ने जनता को सिखाई। आचार्यश्री हीरा का जीवन साधना, मौन, लेखन, मनन, चिन्तन आदि अनेक सुदृगुणों से महिमा मण्डित है।

-गौतमचन्द अरेस्तवाल, संघमन्त्री

**गंजखेड़ी (अलवर)**-परम आराध्य जिनशासन सौरभ रत्नसंघ के गौरव आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 83वाँ जन्मदिवस समस्त श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक, स्वाध्याय एवं एकाशन के साथ बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रातः प्रार्थना एवं दोपहर में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तीन-तीन सामायिक एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण और भजन का कार्यक्रम भी रखा गया।

-कमलचन्द जैन

**बालोतरा-**श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित सामूहिक सामायिक-साधना एवं गुणानुवाद कार्यक्रम में मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया ने भगवान श्री ऋषभदेव के जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक की महत्ता दर्शाते हुए पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जन्मदिवस पर उनकी निर्मल साधना, व्यसन मुक्ति की प्रेरणा एवं जैन आचार्य के रूप में चतुर्विध संघ को धर्म-आराधना, सामायिक-स्वाध्याय, शीलब्रत एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के साथ ही युवा पीढ़ी, बालकों को संस्कारित करने के क्षेत्र में अमूल्य योगदान बताया।

-अरेमण्डकश बाँठिया

**मुम्बई-**श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा ‘द्वा मुक्ति प्रतियोगिता’ सकुशल सम्पन्न हुई। जिसमें लगभग 17 प्रतियोगियों ने अपने भावों की बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति की, साथ ही भजन द्वारा गुरु हीरा के गुणगान भी किए।

-श्रीमती इन्दुजी जैन, अर्ध्यक्ष

**नन्दूरबाट-**व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 83वाँ जन्मदिवस बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने तप-त्याग, दया, गोचरी, सामायिक, स्वाध्याय की साधना की तथा अपने-अपने विचार व्यक्त किए। महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 ने भी गुरुदेव के प्रति अपने भाव रखते हुए कहा कि-गुरुदेव के बारे में कहने को तो शब्द भी कम पड़ जाएँगे। जैन कुल में जन्म भाग्य से मिलता है, लेकिन आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. जैसे गुरु सौभाग्य से मिलते हैं।

### **महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ द्वारा निरन्तर स्वाध्याय की गतिविधियाँ**

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा इस भयंकर कोरोना महामारी के काल में भी पूरे वर्ष निरन्तर स्वाध्यायियों के ज्ञान विकास हेतु पूरे भारतवर्ष से लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को ग्रुप के माध्यम से अलग-अलग परीक्षाओं एवं धार्मिक गतिविधियों से जोड़ा है। जैसे-

(1) जुलाई 2020 में स्वाध्यायियों की विशेष ज्ञान-आराधना हेतु ‘जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग’ भाग-1 से भाग-40 पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। (2) 7 से 14 अगस्त, 2020 पर्युषण पर्व से पूर्व श्री अंतगडसासूत्र पर ऑन-लाइन में 8 प्रतियोगिता आयोजित की गई। (3) 3 सितम्बर से 29 अक्टूबर, 2020 पर्युषण पर्व के बाद उत्तराध्ययनसूत्र के अन्य अध्ययनों पर 9 परीक्षाएँ आयोजित की गई। (4) 5 नवम्बर से 24 दिसम्बर 2020 तक आवश्यकसूत्र की 4 एवं प्रतिक्रमणसूत्र की 3 कुल 7 प्रतियोगिताएँ ऑन-लाइन आयोजित की गई। (5) 31 दिसम्बर, 2020 से नवतत्त्व एवं पुनः आवश्यकसूत्र की 4 परीक्षाएँ आयोजित की गई।

पूरे भारतवर्ष से परीक्षा में लगभग 5000 परीक्षार्थी जुड़कर प्रतियोगिताओं का आनन्द ले रहे थे। प्रत्येक परीक्षा में प्रथम 20 परीक्षार्थियों को 100 रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा पूरे देशभर में आवश्यकसूत्र पर ओपन बुक परीक्षा 4 जुलाई, 2021 रविवार को ली जा रही है। जलगाँव से 120 केन्द्रों के लगभग 1,900 परीक्षा के फार्म भरवाकर जोधपुर बोर्ड कार्यालय में भिजवा दिये गये हैं।

अभी वर्तमान में ‘स्वाध्याय-शिक्षा’ पत्रिका पर प्रत्येक गुरुवार को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप आदि विषयों पर ऑन-लाइन परीक्षा ली जा रही है। जिससे स्वाध्यायियों में एक-एक विषय की जानकारी बढ़ती रहे। श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा 18 से 30 अप्रैल 2021 तक तेरह दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का जूम मीटिंग एप्प पर शिविर लिया गया, जिसमें दिल्ली, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात से 350 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविर में आध्यात्मिक शिक्षा समिति के वरिष्ठ अध्यापकों का महत्वपूर्ण योगदान पढ़ने में प्राप्त हुआ, जिनमें (1) श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन-आगम (आगम का जीवन में महत्व), (2) श्री धर्मचन्द्रजी जैन-कर्मवाद, कर्मसिद्धान्त, (3) श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन-गमा, (4) श्री धर्मेन्द्रजी जैन-गुणस्थान स्वरूप (5) सुश्री नेहाजी चोरडिया-जीवन में कैसे आगे बढ़ें?

सौ. मंगलाजी चोरड़िया का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव को प्राप्त हो रहा है और शिविर को सफल बनाने में बहन नेहाजी चोरड़िया, श्री मनोजजी संचेती, श्री शुभमजी बोहरा और भाई रिषभजी तातेड़, मायावरम् (तमिलनाडु) का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रीमती नयनताराजी बाफना द्वारा सभी को पुरस्कृत किया गया। आगे इसी कड़ी में बच्चों का सात दिवसीय शिविर आयोजित हो रहा है।  
-मनोज संचेती, जलगाँव

## **जयपुर की राधानिकुञ्ज कॉलोनी में नव-निर्मित सामायिक-स्वाध्याय भवन का उद्घाटन**

05 अप्रैल, 2021 को उक्त नव-निर्मित सामायिक-स्वाध्याय भवन का उद्घाटन आदरणीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द्रजी टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने प्रातः 10 बजे किया। जयपुर शहर के एक उपनगर राधानिकुञ्ज में जयपुर के श्री केवलमलजी लोढ़ा परिवार द्वारा भूखण्ड खरीदकर एक तीन मंजिला स्थानक, सभी व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर और बैंगलोर के एक सुश्रावक के आर्थिक सहयोग के साथ लोढ़ा परिवार ने अपना मुख्य आर्थिक सहयोग देकर सामायिक-स्वाध्याय भवन का निर्माण करवाया है। उद्घाटन से पूर्व वहाँ के स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं ने विशाल संख्या में उपस्थित होकर प्रातः 7.30 बजे से 9.30 बजे तक सामायिक साधना की और नवकार महामन्त्र का जाप किया। मुख्य अतिथि श्री टाटिया साहब ने कहा कि क्षेत्र में स्थानक बनाने से यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं को धार्मिक स्थान में आकर सामायिक, संवर, पौष्टि, सामूहिक प्रतिक्रमण एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न करने के लिए हमेशा के लिए सुविधा रहेगी। कार्यक्रम में मञ्च को श्री प्रमोदजी मोहनोत, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा जयपुर एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भी सुशोभित किया। कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने भी हर्ष प्रकट करते हुए इस भवन में किसी भी प्रकार का मनोरञ्जन, शादी-ब्याह, सगाई आदि किसी भी प्रकार के ऐसे कार्यक्रम न करने को कहा। इस भवन का सदुपयोग केवल धार्मिक कार्यों के लिए ही हो सकेगा।

इसके साथ ही एक अतिथि भवन भी बनाया गया है जिसे स्थानक से अलग रखा गया। यह भवन और महारानी फार्म स्थित उत्तम सामायिक-स्वाध्याय भवन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अन्तर्गत सञ्चालित होंगे, स्थानीय स्तर पर संयोजक या विभिन्न समितियों का कार्य सञ्चालन के लिए गठन किया जा सकता है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री प्रमोदजी लोढ़ा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने मंगलाचरण कर कार्यक्रम की शुरुआत की, कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. प्रेमर्सिंहजी लोढ़ा ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया, उन्होंने स्पष्ट किया कि उक्त भवन सन्त-सतियों के लिए नहीं बनाया गया है बल्कि राधा-निकुञ्ज वासियों के धर्म-ध्यान करने के लिए बनाया गया है। कार्यक्रम की समाप्ति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री टाटिया साहब ने भवन की चाबी श्री प्रमोदजी मोहनोत, स्थानीय शाखा अध्यक्ष को सौंपी तत्पश्चात् श्री मोहनोत साहब ने उक्त चाबी नवगठित स्थानीय पाँच परामर्शदाताओं की कमेटी के सभी सदस्यों को सौंपी।

स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं की तरफ से सुश्रावक श्री महेन्द्रजी जैन ने लोढ़ा परिवार और अन्य सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद दिया कि क्षेत्र की इस कमी को इस परिवार ने तन-मन-धन से पूरी किया है। आज सभी धर्मप्रेमी बन्धु और उनके परिवार हर्ष से विभोर हो रहे हैं। अन्त में सभी को धन्यवाद श्री प्रजनजी जैन ने दिया। कार्यक्रम का समापन स्वरुचि भोज के साथ सम्पन्न हुआ।  
-सुरेश कोठारी, मन्त्री

**जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्रों को सुनहरा अवसर  
आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में  
वर्ष 2021 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ**

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गया है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटरशिक्षण, इंग्लिशस्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

**नोट-**रजिस्ट्रेशन फार्म रत्नसंघ की वेबसाइट [ratansangh.com](http://ratansangh.com) पर जाकर। About us option पर click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक <https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008> से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए-9 महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762

**श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़ में छात्रों हेतु  
प्रवेश प्रारम्भ एवं अध्यावधकों की आवश्यकता**

श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान) में कक्षा 12 में वाणिज्य (कम्प्यूटर विज्ञान, अर्थशास्त्र) एवं विज्ञान (जीव विज्ञान, गणित) विषयों की हिन्दी माध्यम में राजस्थान स्टेट बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की सुन्दर एवं गुणवत्तापूर्वक व्यवस्था है। अतः जैन छात्र कक्षा छह से बारहवीं तक पूर्ण शुल्क में, अर्द्ध शुल्क में, निःशुल्क में, अपनी आर्थिक स्थिति अनुसार प्रवेश के लिए आवेदन करें। 20 छात्र बाहर गाँव-शहर से होने पर छात्रावास की व्यवस्था भी प्रदान की जा सकती है।

उक्त विद्यालय में प्रधानाचार्य, व्याख्याता भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, अंग्रेजी के पद पर सेवा देने वालों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। आवासीय व्यवस्था विद्यालय परिसर में प्रदान की जा सकती है। जैन बन्धुओं को प्राथमिकता। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-प्रसन्नचन्द्र ओस्तवाल 'अध्यक्ष', फोन नं. 044-25369430, 25364062 मो. 9444823092, 9380102607 Email : [prassanchandostwal@gmail.com](mailto:prassanchandostwal@gmail.com)

## संक्षिप्त समाचार

**उद्यपुष्ट-राजस्थान स्थापना दिवस पर जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग द्वारा 30 मार्च, 2021 को एक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. देव कोठारीजी द्वारा राजस्थान में प्राकृत भाषा के विभिन्न प्रकार के साहित्य आदि की भी जानकारी उनके वक्तव्य में दी गई।** -डॉ. सुमत कुमार जैन  
**ब्यावर-ब्यावर से लगभग 8 किलोमीटर दूर अजमेर रोड़ की ओर टोल प्लाजा के तुरन्त बाद 'जे.सी.टी. विहार धाम' का शुभारम्भ किया गया है।** सभी जैन साधु-साधियों के लिए विश्राम या रात रुकने की उचित और साताकारी व्यवस्था है। यह विहार धाम जवरीलाल श्रीश्रीमाल चेरिटेबल ट्रस्ट (जे.सी.टी.) द्वारा सञ्चालित रहेगा। सम्पर्क सूत्र-जवरीलाल श्रीश्रीमाल चेरिटेबल ट्रस्ट, 1 जसवन्त मार्केट, सुनारान चौपड़, महावीर बाजार, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राजस्थान) 9351710414

चेन्नई-सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक, भगवान महावीर फाउण्डेशन के संस्थापक एवं मानवसेवा में समर्पित श्री सुगालचन्द्रजी जैन, प्रबन्ध न्यासी श्री विनोदकुमारजी एवं पलकजी जैन ने राज्य के मुख्यमन्त्री श्री एम.के. स्टालिन से मुलाकात कर उनको बधाई दी तथा इस मौके पर उन्होंने मुख्यमन्त्री को कोविड राहत के लिए मुख्यमन्त्री राहत कोष में 25 लाख रुपये का चैक प्रदान किया।

## बधाई

**चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय**, चेन्नई के तीन शोधार्थियों को विश्वविद्यालय के 163वें वार्षिक दीक्षान्त समारोह में जैनदर्शन पर पी-एच.डी. उपाधि प्रदान की गई। सुभाष जैन, एस. कुशलचन्द छाजेड़ एवं राजल बोर्डिया ने जैनदर्शन विभाग में डॉ. प्रियदर्शना जैन के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण कर यह उपलब्धि प्राप्त की है।

-डॉ. श्रीदर्शन्द्र

**चेन्नई-अन्तरराष्ट्रीय विधिवेत्ता** डॉ. विनोद सुराणा को ताङ्गे आर्थिक एवं सांस्कृति केन्द्र, चेन्नई का मानद कानूनी सलाहकार नियुक्त किया गया है। यह केन्द्र भारत और ताईवान के निवेशकों के हितों के लिए कार्य करता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के 'युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा-सम्मान-2011' सहित कई सम्मानों से विभूषित डॉ. सुराणा एसोचेम (दक्षिण भारत) के सह-चेयरमैन भी हैं।

-डॉ. दिलीप शर्मा

**बालोतरा-श्री ओमप्रकाशजी बांठिया** (सी.ए.) को महावीर इण्टरनेशनल का रिजन-6 (बालोतरा, सिरोही, जालोर, पाली-मारवाड़) का अन्तरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। इसकी घोषणा महावीर इण्टरनेशनल के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष वीर श्री एस. के.जैन ने दिल्ली में की। श्री बांठिया चर्तमान में भारत जैन महामण्डल, बालोतरा केन्द्र के अध्यक्ष, श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान के मन्त्री और श्री गुरु हस्ती कल्याण संस्थान के मन्त्री पद पर कार्यरत हैं।

**मुम्बई-श्री सूजग गोखरू सुपुत्र** श्रीमती जयाजी-सुरेशचन्द्रजी गोखरू मानसरोवर जयपुर निवासी ने एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त कर ली है। आप पर बचपन से ही विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. की असीम कृपा और प्रेरणा रही हैं। बचपन से ही म. सा. छोटे-छोटे नियमों के द्वारा आपको धर्म के पथ पर आगे बढ़ाते रहें। आपने व्यसन-मुक्ति का नियम तथा गुरु आमना भी ले ली। आप देश विदेश में रहते हुए भी व्यसन मुक्ति के नियम पर विकट परिस्थितियों में भी अद्विग्न रहे। आप धार्मिक गतिविधियों में भी निरन्तर हिस्सा लेते रहे। आपको संगीत, भजन, नाटक, कविता लेखन आदि में विशेष रुचि है।

**चेन्नई-साहित्यकार** डॉ. दिलीप धींग को डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध एवं शिक्षा संस्थान, उदयपुर का मानद सह-निर्देशक मनोनीत किया गया है। पदम विभूषण डॉ. कोठारी के सुझाव के अनुसार डॉ. धींग ने आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' के चार खण्डों का संक्षिप्तीकरण और सम्पादन किया था।

-शिक्षाकाटेचर

**जोधपुर-श्री शनिल रांका** (सी.ए., सी.एस., सी.एम.ए.) सुपुत्र श्री सन्तोषजी रांका की नियुक्ति प्राइस वाटर हाऊस कूपर्स, एल.एल.पी. 'पी.डब्ल्यू.सी' एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड, यू.के. में हुई है। यह विश्व की बड़ी चार ऑडिट कम्पनियों में से एक है।

**दिल्ली-**श्रीमती राशिका बोधरा धर्मसहायिका श्री अरिहन्तजी बोधरा ने बी.टेक के पश्चात् जैन विश्व भारती लाडनूं से 'जैनदर्शन एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन' विषय में एम.ए. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया है। आपको धार्मिक संस्कारों में आगे बढ़ने की प्रेरणा दादी श्रीमती सुशीलाजी सुराणा (ब्यावर) से मिलती रहती है तथा परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

## श्रद्धाञ्जलि

**दिल्ली-**श्रेष्ठ कवि, लेखक, चिन्तक एवं समीक्षक श्रावकरत्न श्री सम्पतराजजी चौधरी सुपुत्र स्व. श्री धैरुलालजी चौधरी का 23 मई, 2021 को 80 वर्ष की आयु में समाधिभावों के साथ देहावसान हो गया। अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के जीवन पर आपने 'मुक्ति का राही' काव्य कृति की रचना की, जो लोकप्रिय हुई। आगम मर्मज्ञ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की कृपा से आपने पूज्य आचार्य श्री हस्ती विरचित 'वीर गुण गौरव गाथा, जम्बू कुमार चरित, धर्मकथा गीत, स्थूलभद्र चरित्र' आदि विभिन्न कृतियों का सुन्दर विवेचन किया। अहोभाव के आँसू, जीवन का सन्ध्या काल आदि रचनाएँ भी भावपूर्ण हैं। सम्यज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं परामर्शदाता के रूप में आपने संघ को अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। संघ-सेवा एवं साहित्य सेवा के लिए तत्पर मनीषी ने विनयचन्द चौबीसी का भी विवेचन किया एवं उसे गेयता के स्वरूप में रिकॉर्ड करवाया। श्रद्धा, समर्पण, उदारता के साथ आप स्पष्ट वक्ता एवं सिद्धान्तवादी थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती मीमाजी चौधरी का आपको निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहा। आप सुसंस्कारों से सम्पन्न सुपुत्र डॉ. सुनीलजी चौधरी (प्लास्टिक सर्जन), श्री विमलजी चौधरी (सी.ए.) के संस्कारित, धर्मनिष्ठ एवं संघनिष्ठ परिवार को छोड़कर गए हैं।

-उरशेक कुमार स्टेट, मन्द्री

**जामबेझ-**धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री बसन्तीलालजी रंगलालजी डांगी का 80 वर्ष की आयु में 20 मार्च 2021 को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, भितभावी, हँसमुख व्यक्तित्व के धनी तथा सेवाभावी एवं दानशूर थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कांचनबाईजी विनग्र, सेवाभावी एवं कुशल गृहिणी हैं। जितना समय आपने अपने परिवार में व्यतीत किया उससे अधिक समय धार्मिक, सामाजिक तथा विविध सेवाएँ प्रदान करने में व्यतीत किया। पूज्य गुरु भगवन्तों तथा सतियों के आहार-विहार की निःस्वार्थ भाव से समय-समय पर सेवाएँ प्रदान की। आपने सम्यज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित होने पुस्तक 'हीरा प्रबचन पीयूष' के पाँचों भागों में मुक्त हस्त से सदैव अर्थसहयोग प्रदान किया।

**जयपुर-**संघरत्न श्रावकरत्न श्री विनयचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री अनुपचन्दजी बम्ब का 25 मार्च, 2021 को स्वर्गवास हो गया।

आप सभी सन्त-सती मण्डल की सेवा में भी सदैव तत्पर रहते थे। आपका व्यक्तित्व सरल एवं सुन्दर था। समाज-सेवा में आप एवं आपके परिवार का अतुलनीय योगदान रहा है। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष पद, श्री बद्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक, जयपुर संघ, जयपुर (लाल भवन) के अध्यक्ष पद एवं गुलाबी नगर जयपुर की सुप्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था में कार्यकारिणी सदस्य रहते हुये सुबोध उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर में लगभग 23 वर्ष तक संयोजक पद का निर्वहन किया। बम्ब परिवार ने रत्नसंघ में दीक्षित पूज्य शुभेन्द्रमुनिजी म.सा के दीक्षा कार्यक्रम का सहर्ष लाभ प्राप्त किया। आपके चाचाजी स्व. श्री सिरेहमलजी बम्ब भी प्रथम पंक्ति के श्रावकों में गिने जाते थे। संघ की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर आगे रहने वाले श्री सिरेहमलजी बम्ब सा ने कुछ वर्षों तक जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का सफल सञ्चालन भी किया। वस्तुतः गुलाबी नगर जयपुर में बम्ब परिवार का संघ एवं समाज में महत्वपूर्ण योगदान

है। आपके सुपुत्र श्री अनिलजी बम्ब जयपुर संघ में सदस्य पद पर आरूढ़ है। श्री अरुणजी, श्री अमितजी सहित सम्पूर्ण परिवार संघ एवं समाज सेवा में समर्पित हैं।

-उत्तरोक कुमार स्टेट, मन्त्री-सम्बन्धान प्रचारक मण्डल

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री मख्तुरमलजी सुपुत्र स्व.** केवलमलजी गांग का 84 वर्ष की आयु में 09 मार्च,



2021 को स्वर्गवास हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी तथा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। आप जोधपुर में विभिन्न चातुर्मासों में अपनी सेवायें देने में अग्रणी रहे हैं। आप जिस चिता पर लेटे थे उस चिता पर जीवनपर्यन्त हजारों लोगों का अन्तिम संस्कार कर आप गमगीन परिवारों के मसीहा बने रहे। कभी हजारों दिलों में धड़कते और बसते आप जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के सेक्शन ऑफिसर के पद पर रहते हुए भी समाज-सेवा में अग्रणी रहे तथा समाज सेवा के पुरोधा व मानवता के मसीहा के रूप में जाने जाते थे। सम्पूर्ण जैन समाज आपकी अनमोल सेवा को हमेशा याद रखेगा। इनकी सेवा मानव जाति तक ही सीमित नहीं तथा बेजुबान जानवरों के लिए जीव दया का कार्य सभी के सहयोग से पूर्ण करते थे। आप अपने पीछे दो पुत्रों सुनील व नवीन का भरा पूरा परिवार छोड़ कर गए हैं। श्री नवीन गांग ने भी श्री जैन रत्न युवक परिषद में सचिव के पद पर एवं विभिन्न पदों पर रहकर रत्न संघ में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं।

**जोधपुर-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर** के पूर्व संयोजक एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी आदरणीय श्री नवरतनमलजी सुपुत्र स्व. श्री उदयराजजी ढोसी का 12 मई, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपने अपने काका स्व. श्री लादूरामजी तथा बड़े भ्राता स्व. श्री सम्पतराजजी ढोसी से प्राप्त संस्कारों से संघ एवं समाज में कई उच्च पदों पर रहते हुए अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। आपने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में लगभग 35 वर्षों तक पर्युषण पर्व में समीपवर्ती और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में पधारकर संघ को अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की तथा कई वर्षों तक स्वाध्याय संघ के संयोजक पद को भी सुशोभित किया।



-धैरज ढोसी

**जयपुर-धर्मनिष्ठ, मिलनसार, स्वाभिमानी सुश्राविका श्रीमती शोभाजी धर्मपत्नी स्व.** श्री अभय कुमारजी डागा का



55 वर्ष की आयु में 5 मई, 2021 को निधन हो गया। आपने अपने जीवन में चुनौतियों को आगे होकर स्वीकार कर, साहसिक रूप से उनका सामना कर पति स्व. श्री अभय कुमारजी डागा के धार्मिक संस्कारों को पुनर्जीवित किया और संघ, समाज, पक्षी-सेवा में सदैव सकारात्मक सहयोग प्रदान किया। दो वर्ष पूर्व ही आपके पति के निधन के पश्चात् आपने अपने पुत्र और पुत्री को सम्बल प्रदान किया। आप स्वयं सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। पर्युषण में आपका विशेष धर्मध्यान होता था। आपके ज्येष्ठ श्री विमलचन्द्रजी, हीराचन्द्रजी डागा सहित सम्पूर्ण डागा परिवार रत्नसंघ का एक समर्पित अग्रणी परिवार है। सन्त-सतीमण्डल की सेवा आपके जीवन का अधिनन अङ्ग था। आपके परिवार से दीक्षित श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा. आज जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। ज्ञान दर्शन से अपनी आत्मा को आप्लावित कर सजग आत्मा ने इस देह को भले ही छोड़ दिया है, पर उनके गुण सदैव परिवार, संघ एवं समाज को सुरभित करते रहेंगे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री मयूरजी, पुत्रवधू श्रीमती नेहाजी और सुपुत्री मनालीजी डागा को छोड़कर गई हैं।

-जितेन्द्र कुमार डागा

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अमरचन्द्रजी सुपुत्र स्व.** श्री चन्द्रमलजी सदावत मेहता का 6 मई, 2021 को स्वर्गवास हो गया। कर्तव्यनिष्ठ एवं कर्मयोगी आपका जीवन संघ-समाज सेवा, विशेषकर सरस्वती नगर शाखा क्षेत्र में धर्म और समाज के उत्थान में निरन्तर अग्रणी रहा। सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। आपने बात्सल्य निधि के संयोजक और श्री जैन रत्न हितैषी



श्रावक संघ, जोधपुर के महामन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। आपने आजीवन शीलब्रत एवं अन्य कई ब्रत अंगीकार किये थे। स्वयं सादगी तथा संस्कारपूर्ण जीवन जीते हुए अपने परिजनों को धार्मिक और आध्यात्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। जिसके फलस्वरूप सदावत परिवार संघ सेवा, समाज सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में भी सदैव अग्रणी रहा। आपकी सतत प्रेरणा एवं धर्म के प्रति गहरी आस्था, श्रद्धा व निष्ठा से आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड से कई युवा धर्म बन्धुओं में भी सामायिक, प्रतिक्रिमण-सूत्र सीखने की भी ललक पैदा हुई। करुणामय, कोपल हृदय के साथ निर्धनों-रोगियों के लिए आपका तन-मन-धन से विशेष सहयोग रहा। सरकारी क्षेत्र में अपने जॉब के दौरान आपकी गरिमामय छवि रही और मुख्य अभियन्ता जैसे उच्च पद पर सुशोभित होते हुए भी अंहकार को अपने से कोर्सों दूर रखा। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

**जोधपुर-**अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नारायणचन्द्रजी मेहता का 22 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आपने संस्कारों से अपने समूचे परिवार को समृद्ध किया। इसी का सुफल है कि आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में निष्ठा पूर्वक जुड़ा हुआ है। आपकी धर्मसहायिका आदरणीया स्व. श्रीमती विमलाजी मेहता ने भी संघ और संघीय संस्थाओं में अपना दायित्व बखूबी निर्वहन किया। उन्हीं के सहयोग से आदरणीय मेहता साहब ने ओसवाल सिंह सभा के अध्यक्ष पद के साथ कई संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहकर अपना दायित्व निभाया। वर्तमान में गजेन्द्र निधि के द्रस्टी थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में मेहता परिवार सदैव तत्पर रहा है।

-श्वेतपत्र स्टेटियर, महामन्त्री

**जोधपुर-**अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी सुश्राविका श्रीमती रतनकंवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबचन्द्रजी सिंघवी का 19 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आपकी भावना सदा प्रशस्त रही। आप एवं आपके परिवार द्वारा रत्नसंघ का पक्खी पत्र प्रकाशित होता है, यह कार्य अभी भी निरन्तर आपके परिवार द्वारा किया जा रहा है जिसका संघ को प्रमोद है। जोधपुर में सम्पन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सिंघवी परिवार सदैव सक्रिय है। सिंघवी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। सुपुत्र श्री चंचलचन्द्रजी सिंघवी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संस्थापक सक्रिय सदस्य रहे हैं। दिल्ली में रत्नसंघ की धार्मिक गतिविधियों में श्री ईश्वरचन्द्रजी सिंघवी सक्रिय हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार एवं सन्त-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में सिंघवी परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में सिंघवी परिवार का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहता है।

-श्वेतपत्र स्टेटियर, महामन्त्री

**जोधपुर-**धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रीटाजी धर्मपत्नी श्री चंचलचन्द्रजी सिंघवी का एवं श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द्रजी सिंघवी का 01 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आप की भावना सदा प्रशस्त रही थी। श्रीमती उषाजी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल हाऊसिंग बोर्ड में धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय थी। नियमित रूप से हाऊसिंग बोर्ड स्थानक में पधारती थी और अन्य श्राविकाओं को स्थानक में पधारकर धर्म-ध्यान की प्रेरणा करती



थी। आदरणीय श्री चंचलचन्द्रजी सिंघवी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संस्थापक दस्य रहे हैं। दिल्ली में रत्नसंघ की धार्मिक गतिविधियों में श्री ईश्वरचन्द्रजी सिंघवी सक्रिय है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार तथा सन्त-सतीबृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में भी सिंघवी परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में सिंघवी परिवार का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

-धन्यवाच स्टेटियर, महामन्त्री

**जयपुर-सन्तसेवी,** श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्री निर्मल कुमारजी सुपुत्र श्री पूनमचन्द्रजी जामड़ (किशनगढ़ वाले) का



72 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक 26 मई, 2021 को समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप सामायिक-स्वाध्याय के साथ संवर, दया की साधना भी करते रहते थे। आपकी इच्छानुसार देहदान किया गया है। आपने वर्ष 2019 के व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के जबाहर नगर-जयपुर चातुर्मास में देहदान का संकल्प लिया था। आपके परिवारजनों ने संघ के पदों का निर्वहन बखूबी किया है। श्री एस. एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति से सेवा निवृत्त होने के पश्चात् कुछ वर्षों तक अपनी महनीय सेवाएँ सम्बन्धित प्रचारक मण्डल को प्रदान कर समाज को गौरवान्वित किया। आप एक अच्छे कवि थे। आपकी रचनाएँ जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के साथ अन्य धार्मिक पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती रहती थी।

-अरशोक कुमार स्टेट, मन्त्री

**बजप्रिया-सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ** गुरुभक्त सुश्रावक श्री सौभाग्यमलजी जैन (एडवोकेट) सुपुत्र स्व. श्री



नेमीचन्द्रजी जैन का 8 अप्रैल, 2021 को लगभग 80 वर्ष की आयु में त्याग, पच्चक्खाण, क्षम् याचना एवं साधारी संथारा के साथ समाधिमरण हो गया। आपका पूरा परिवार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रति पूर्ण समर्पित एवं निष्ठावान है। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी के दीर्घ समय तक क्रियाशील सदस्य रहे। आपने परम श्रद्धेय आचार्यप्रबर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के सवाईमाधोपुर में 1974 के चातुर्मासिकाल में कोषाध्यक्ष पद को सुशोभित किया तथा चातुर्मास काल में राजस्थान हाइकोर्ट के न्यायाधीश बेरी साहब एवं मन्त्रियों को दर्शनार्थ बुलाने में रचनात्मक भूमिका निभाई। आपने आचार्यश्री की प्रेरणा से सर्वप्रथम पल्लीवाल क्षेत्र हिण्डौनसिटी में सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार हेतु अपने अन्य साधियों के साथ जाकर रचनात्मक भूमिका निभाई। आप आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के अग्रिम पंक्ति के श्रद्धावान श्रावक थे तथा आपकी पत्नी की 36 वर्ष की आयु में ही निधन होने पर आपने 39 वर्ष की आयु में ही ब्रह्मचर्य ब्रत का नियम पूज्य आचार्यश्री से ग्रहण किया था। आप नवकारसी ब्रत, बारह ब्रत, बदि-दशमी का एकाशन ब्रत आराधन करने के साथ नियमित रूप से सामायिक एवं स्वाध्याय करने नियम भी ग्रहण कर रखे थे। आप ध्यान-साधना में भी विशेष रुचि रखते थे। आपका पूरा जीवन काल धार्मिक एवं सामाजिक भावनाओं से ओतप्रोत था। आपने श्री कन्हैयालालजी लोदा से प्रभावित होकर ध्यान-साधना (विपश्यना) में क़दम आगे बढ़ाये और लगभग विपश्यना के 25 शिविरों में भाग लिया।

-

**जयपुर-धर्मनिष्ठ** गुरुभक्त सुश्राविका श्रीमती राजकुमारीजी धर्मपत्नी श्री बसन्तकुमारजी हीरावत का 4 मई, 2021



को देहावसान हो गया। जयपुर में विरजित साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा-सन्निधि का लाभ आप निरन्तर प्राप्त किया करते थे। आपने श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर की धार्मिक, सामाजिक, गतिविधियों में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। सन्त-सतीबृन्द की सेवा-भक्ति में हीरावत परिवार सदैव तत्पर रहता है। आप स्वयं ने संस्कारी

जीवन जीते हुए अपने परिवारिक जनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व विभाग था, जिसके फलस्वरूप श्री अमितजी हीरावत अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् में महासचिव पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आतिथ्य-सत्कार में भी हीरावत परिवार सदैव समर्पित रहता है। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में हीरावत परिवार का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहता है।

-श्वेत श्रेतिवर, महामन्त्री

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ,** संघनिष्ठ सुश्रावक श्री चंचलमलजी गांग का 78 वर्ष की उम्र में 6 अप्रैल, 2021 को देहावसान



हो गया। आपने राजकीय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् अधिकतर समय संघ-सेवा में दिया। आपने श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर को लगभग 14 वर्षों तक निःस्वार्थ भाव से अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। आप की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आप कोई भी कार्य चाहे वह छोटा हो या बड़ा उसे करने में सदैव तत्पर रहते थे और बड़े ही प्रेम भाव से उस कार्य को सम्पन्न करते थे। आपके द्वारा प्रदत्त निःस्वार्थ सेवा के लिए आपको आचार्यश्री हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष 2011 में पीपाड़ शहर में स्वाध्याय संघ द्वारा सम्मानित भी किया गया। आपने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड में निरीक्षक के रूप में भी महनीय सेवाएँ दी। आप नित्य प्रतिदिन 7-8 सामायिक करते थे। अष्टमी एवं चतुर्दशी तथा अति विशिष्ट तिथियों में प्रवचन श्रवण एवं रात्रि भोजन त्याग तथा पक्खी प्रतिक्रमण करते थे। आप हर माह गौशाला में गौ सेवा करते थे एवं हर जरूरतमन्द की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आपके पुत्र राजेश एवं पुत्री मधु जी भी आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारों का पालन कर रहे हैं।

-शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

**तिळवन्नामल-धर्मनिष्ठ,** समाज-सेवी सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोहरा का 83 वर्ष की आयु में 27 मई, 2021



को देवलोकगमन हो गया। आप श्री जैन संघ के अध्यक्ष थे। आप दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, उदारमना, साधर्मिक भाइयों के प्रति आत्मीयता एवं स्नेह, जैन संस्कृतियों के रक्षक, गरीबों के प्रति दया भावना, परिवार-मित्रजनों को व्रत-नियम, नित्य प्रार्थना, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धर्म-साधना आदि का अपने अन्तिम समय तक पालन किया। गुरु भगवन्तों के प्रति सदैव समर्पित रहे।

आपके जीवन में कथनी और करनी एक समान थी। नगर में हर रविवार को प्रार्थना और पाक्षिक प्रतिक्रमण करवाने में आप प्रयत्नशील और प्रोत्साहित करते रहते थे और सफल बने। जीवदया में सहयोग, चारित्रनिष्ठ पूज्य सन्त-सतियों पर दृढ़ श्रद्धा और ऐतिहासिक चातुर्मासों में संयोजक तथा एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में संघ को मार्ग-दर्शन में आपका योगदान बहुत ही सहरानीय रहा।

-विजय कुमार घटवर, मन्त्री

**चौथ का बरवाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका** श्रीमती धूलीबाईजी धर्मसहायिका श्री चौथमलजी जैन चौधरी का 10 मार्च,



2021 को 96 वर्ष की वय में तिविहार संथारे के साथ देवलोक गमन हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी तथा धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे भूरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



**मन्दसीढ़ी-सुश्राविका** श्रीमती स्नेहलताजी तलेरा धर्मपत्नी स्व. श्री कमल कुमारजी तलेरा का 83 वर्ष की उम्र में 29 अप्रैल, 2021 का संलेखना संथारे सहित देवलोकगमन हो गया। चारित्रनिष्ठ पूज्य सन्त-सतियों पर आपकी दृढ़ श्रद्धा थी। जर्मानी-दत्याग, रात्रि चौविहार त्याग आदि के आपके प्रत्याख्यान थे। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय आपके जीवन चर्चा का हिस्सा था। आपने पूरे परिवार को धर्मसेवा तथा समाज-सेवा में अग्रणी रखा। आपके परिवार के सूरजमलजी, सुरेशचन्द्रजी, अनिलजी, सुनीलजी, गौरवजी, अभिनजी एवं लविनजी तलेरा भी आपके द्वारा बताये समाज सेवा मार्ग पर अग्रसर हैं।

10 मई-जून 2021



**अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ,** श्रद्धानिष्ठ, संघ समर्पित सुश्राविका श्रीमती युगलबेन रांका धर्मपत्नी श्री नेमीचंदजी रांका वाले) का देहावसान 12 मई, 2021 को हो गया। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय धर्म की आराधना एवं आत्म-साधना में व्यतीत किया। वर्तमान में आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अहमदाबाद के मन्त्री पद को सुशोभित कर रही थीं। संघ के कार्यों तथा सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थी। आप स्वभाव से सलमना तथा मृदुभाषी प्रवृत्ति की श्राविका थी। आज आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-जगेन्द्र कुमार जैन, ज्वल्पुर



**अहमदाबाद-युवारत्न** श्री अरिष्ठजी सुपुत्र श्री नेमीचन्दजी रांका का 42 वर्ष की वय में 26 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप मूलरूप से मारवाड़ में सूर्यनगरी जोधपुर के रहने वाले थे। आप आध्यात्मिक गतिविधियों में भाग लेते रहते थे तथा अपने पुरुषार्थ का परिचय देते थे। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे आपके पिता श्री नेमीचन्दजी रांका तथा आध्यात्मिक संस्कारों से परिपूर्ण आपकी धर्मसहायिकाजी को छोड़कर गये हैं।

-जगेन्द्र कुमार जैन, ज्वल्पुर



**अजमेर-धर्मनिष्ठ** सुश्रावक श्री नवरत्नमलजी लोढ़ा का 17 मई, 2021 को देवलोकगमन हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप की आराधना करते थे। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया था। आपके पूज्य पिता श्री स्व. श्री कीरतमलजी लोढ़ा पुलिस विभाग से सेवानिवृत्ति के पश्चात् धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहे और वे नित्यप्रति सुजानशान पौष्टशाला, जोधपुर में नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप की आराधना करते थे। आपके बड़े भ्राता आदरणीय स्व. श्री प्रसन्नमलजी लोढ़ा ने सेवानिवृत्ति के पश्चात् वर्षों तक सम्यज्ञान प्रचारक गण्डल में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। आप अपने पीछे सुपुत्र, सुपौत्र, सुपौत्री, सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये।

-अशेष कुमार सेठ, मन्त्री



**अजमेर-धर्मनिष्ठ,** संघनिष्ठ सुश्रावक श्री केंवरीलालजी सुपुत्र स्व. श्री रावलमलजी कोठारी का 7 मई, 2021 को नियम प्रत्याख्यान पूर्वक स्वर्गगमन हो गया। विगत कुछ वर्षों से आप निवृत्ति पूर्ण जीवन जी रहे थे। प्रतिदिन दोनों समय प्रतिक्रमण, 9 से 11 सामायिक तथा शास्त्र स्वाध्याय उनकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा थे। प्रतिदिन पोरसी, डेढ़ पोरसी करते थे। वे सभी को कुछ न कुछ सीखने की ग्रेणा देते थे। स्वर्गवास के दिन भी सुबह तीन सामायिक और प्रतिक्रमण की आराधना की थी। गुरु हस्ती-हीरा के प्रति आपकी भक्ति अनुपम थी।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

**अजमेर-धर्मनिष्ठ** सुश्रावक श्री नवीनजी और सुशीलजी (दोनों भ्राता) सुपुत्र श्री कमलजी गाँधी का देवलोकगमन हो गया। श्री नवीनजी का निधन 15 मई को बैंगलोर में तथा छोटे भाई श्री सुशीलजी का 8 मई को अजमेर में हो गया। आप दोनों नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

**अजमेर-धर्मनिष्ठ** सुश्राविका श्रीमती निधिजी धर्मसहायिका श्री राजकुमारजी पुत्रवधू श्री हस्तीमलजी लोढ़ा का 6 मई, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आप गुरु हीरा की परम भक्त थीं तथा धार्मिक आयोजनों में सेवा देने में अग्रणी रहती थीं। आपका जीवन सरल, सहज और सादगी से पूर्ण था।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्रावक श्री विजयमलजी मेहता (कालूसा)** का 1 मई, 2021 को 86 वर्ष की आयु में न हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में सदैव तत्पर रहते थे और समय-समय पर सपरिवार गुरु दर्शन-वन्दन का लाभ लेते रहते थे। आप सरल स्वभावी एवं स्पष्ट वक्ता थे। आप रत्नसंघीया महासती प्रवर्तिनी श्री बदनकंबरजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

**हैदराबाद-धर्मपरायण, तपस्विनी श्राविकारत्न श्रीमती शान्तादेवीजी धर्मसहायिका स्व.** श्री प्यारेलालजी बोहरा (पीपाड़ वाले) का 88 वर्ष का आयु में 22 मई, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपने अन्तिम मनोरथ को पूर्ण कर संधारा सहित 84 लाख जीवों से क्षमायाचना कर नश्वर देह को त्यागा है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

**छोलकाता-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कमलपतराजजी सुपुत्र श्री जसवन्तराजजी भंसाली (जोधपुर वाले)** का 23 अप्रैल, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रबर, उपाध्यायप्रबर एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति प्रगाढ़ आस्था थी। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती सुशीलाजी धर्मपरायण एवं सामायिक-प्रतिक्रियण तथा त्याग-तपस्याएँ करती रहती हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार धर्मनिष्ठ एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहता है।

**जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पिस्तादेवीजी धर्मसहायिका तपस्वीराज श्री नवरतनमलजी लूँकड़** का 21 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थी। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थी तथा सामायिक, दया, मौन उपवास आदि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहती थीं। आपके धर्मसहायक श्री नवरतनमलजी लूँकड़ 30 मासखमण एवं 51 दिवसीय तपस्या सम्पन्न कर चुके हैं।

-देवेन्द्र जैन

**पीपाड़सिंही-सेवाभावी युवारत्न श्री पंकजजी सुपुत्र श्री राणुसिंहजी कच्छवाह** का 13 मई, 2021 को 28 वर्ष की अल्पायु में देहावसान हो गया। आप पिछले छह वर्षों से जैनधर्म की त्यागपरक क्रियाओं से प्रेरित होकर धर्मसंघ से जुड़े। आप श्री जैन रत्न युवक परिषद् (पीपाड़ शहर) से जुड़े और वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सेवाएँ दे रहे थे। आप भक्तिधारा से प्रेरित होकर निरन्तर नवकार महामन्त्र और लोगस्स के जप में लीन रहते थे। आपने पुरुषार्थ कर सामायिकसूत्र, उपासकदशाङ्क, राजप्रश्नीय, सुखविपाक, ज्ञाताधर्मकथाङ्कसूत्र जैसे आगमों का स्वाध्याय भी किया। आप किसी भी धर्म-परम्परा के सन्त-सतीमण्डल के प्रति विनयभक्ति रखते हुए गोचरी लाभ, विश्राम लाभ की भावना रखते थे। संघ के प्रत्येक कार्य के प्रति सजग, समर्पित थे और साथ ही विहारसेवा में तत्पर रहते थे। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध ऋद्धभक्ति रही। आप अपने पीछे माता, भाई, पत्नी और सुपुत्री का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। 4 दिवस पूर्व 9 मई, 2021 को आपके पिताश्री राणुसिंहजी कच्छवाह का भी 48 वर्ष की अल्पायु में असामयिक निधन हो गया। कोसाणा चातुर्मास 2020 के पश्चात् पीपाड़ शहर की ओर पधारते समय विहार में आपके आवास पर आचार्य भगवन्त आदि ठाणा के विराजने पर उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक सहर्ष सदार आजीवन शीलब्रत के नियम अङ्गीकार किए थे।

-नमन मेहता, पीपाड़सिंही

**जोधपुर-सुश्राविका श्रीमती चन्द्रकलाजी धर्मपत्नी श्री प्रवीणजी सेठिया** का 11 मई, 2021 को हैदराबाद में देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा



मैं तत्पर रहने वाली श्राविकाजी का जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण सेठिया परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। आप परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सांसारिक भतीजा पुत्रवधू थी। आप समय-समय पर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाली अग्रणी श्राविकारत्न थी।

-प्रकाश सरलेच्छ, संयुक्त महामन्त्री

**मुमर्झ-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नवीनजी सुपुत्र श्रीमती मधु-महावीरचन्द्रजी सुपौत्र श्रीमती चीमनकंवर-ज्ञानचन्द्रजी** मोहनोत का 10 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति असीम आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा एवं संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।



**कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाबाईजी धर्मसहायिका स्व.** श्री रामप्रसादजी जैन (सुमेरगंजमण्डी वाले) का 27 मई, 2021 को 82 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप सरल स्वभावी एवं मिलनसार थी तथा आपका सम्पूर्ण जीवन त्याग, तपस्या एवं सन्त-सतीवृन्द की सेवा में व्यतीत हुआ। आपने दो वर्षीतप, दो अठाई, फचोला, तेला सहित अन्य कई तपस्याएँ की तथा पिछले 40 वर्षों से आपके चौविहार त्याग एवं आजीवन नवकारसी के नियम थे। आप प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करती थी। आपके सुपुत्र श्री जगदीशप्रसादजी जैन संघ के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं एवं वर्तमान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोटा के मन्त्री हैं। आप अपने पीछे भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

-हेमन्त कुमार जैन, ज्यधुर

**पाली-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती जेठीबाईजी धर्मसहायिका स्व.** श्री भीकमचन्द्रजी भंसाली का 72 वर्ष की आयु में 30 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया। आप स्थानीय रत्नसंघ की बुजुर्ग एवं अनुभवी श्राविका थी। आप सरलता, सदाशयता, सहिष्णुता, उदारता जैसे विशिष्ट गुणों से ओतप्रोत धर्मनिष्ठ श्राविका थी। विनम्रता और मधुरता की प्रतिमूर्ति श्राविकाजी सन्त-सतियों के प्रति सेवा की भावना जैसे गुणों से परिपूर्ण थी। आप धर्मध्यान एवं तप-त्याग में सजगतापूर्वक संलग्न रहती थी। आप अपने पीछे दो पुत्र श्री झूमरलालजी, नवीनकुमारजी सहित सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।



**आगरा-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री सुमेरचन्द्रजी जैन (सोनी जी)** का 25 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया। आप आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति पूर्ण समर्पित श्रावक थे। आप किशनगढ़ के मूल निवासी थे एवं पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. के परिवार में पड़पौत्र लगते थे। आचार्य भगवन्त के सन् 2012 के जयपुर चातुर्मास में आपका बीर परिवार के नाते अभिनन्दन किया गया था। आप अपने पीछे धर्मपत्नी, एक पुत्र एवं एक पुत्री, पौत्र-पौत्री से भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



**जोधपुर-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्राविका श्रीमती चाँदकैवरजी धर्मपत्नी स्व.** श्री सोहनराजजी बरडिया का 26 अप्रैल, 2021 को 83 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप प्रतिदिन कम से कम 7-8 सामायिक करती थी। सिंहपोल स्थानक पथारने वाले सन्त-सतियों की सेवा में आप हमेशा तत्पर रहती थी। आपने अपने जीवन में कई नियम ग्रहण कर रखे थे।

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री धर्मेन्द्रजी मुराणा** का 15 अप्रैल, 2021 को 45 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सिंहपोल क्षेत्र के सक्रिय युवा कार्यकर्ता थे। आपने इतनी छोटी उम्र में जर्मीकन्द के त्याग ग्रहण कर रखे थे। आपकी आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। पिछले काफी समय से आप कैंसर जैसी बीमारी से पीड़ित होते हुए भी अपना कार्य स्वयं करते तथा अपने पास आने वाले जरूरतमन्द लोगों का भी सहयोग करते थे।



**ब्यावर-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री अमरचन्द्रजी संचेती** (श्री महावीर जैन नवयुवक संघ के इस्टबोर्ड के पूर्व अध्यक्ष) का 90 वर्ष की आयु में 13 मार्च, 2021 को देहावसान हो गया। सम्पूर्ण संचेती परिवार संघसेवा में हमेशा तत्पर रहता है। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं कर्तव्यनिष्ठ सुश्रावक थे। आप मिलनसार एवं हँसमुख प्रवृत्ति के व्यक्ति तथा सभी गुरु भगवन्तों के प्रति आस्थावान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा एवं धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।



-इन्द्रचन्द्र संचेती, ब्यावर

**दिल्ली-श्री भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन महासभा** के आधारस्तम्भ, जैन समाज के पितामह, विराट व्यक्तित्व के धनी, जैन संस्कृति के सम्पोषक, संरक्षक एवं तीर्थोद्घाकर श्री निर्मल कुमारजी सेठी का 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप अपने विचारों में सदैव निर्मलता रखने वाले श्रेष्ठ सरल स्वभावी व्यक्तित्व के रूप में पहचान रखने वाले श्रावक थे। विगत 40 वर्षों से श्री भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने सम्पूर्ण जैन समाज, मुनि-आर्थिका, द्वादशांग जिनवाणी की सेवा मुश्रूषा की, तीर्थों का जीर्णोद्घार आदि कराया तथा निःस्वार्थ सेवाभाव से संगठन की समस्त शाखाओं के पदाधिकारियों को एकजुटता भ्राता तुल्य स्नेह रखा है। आपने धर्म और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य किया। आप भारत ही नहीं विदेशों में भी दिग्म्बर जैन के विकास के लिए बहुत काम किये। तीर्थों की रक्षा के लिए आपने अभूतपूर्व कार्य किया। जैनधर्म के सिद्धान्तों की अनेक पुस्तकों का प्रकाशन कर जिनवाणी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जिनवाणी के संरक्षण का कार्य भी किया। आपका सामाजिक, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक, अवदान सदियों तक जैन समाज याद रखेगा।



-डॉ. मुकन्द जजू

**चेन्नई-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री शिवराजजी नाहर** (कोसाणा वाले) का 23 मई, 2021 को देहावसान हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के कोसाना ग्राम चातुर्मास में तथा चेन्नई में रत्नसंघीय सन्त-सतीवन्द के शेखेकाल विराजने पर और चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप नाहर परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी नाहर परिवार सदैव समर्पित रहा है।

**भीलवाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तादेवीजी** धर्मसहायिका श्री पारसमलजी कटारिया का 8 मई, 2021 को निधन हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।



**जयपुर-धर्मनिष्ठ युवा सुश्राविका श्रीमती सुरभिजी धर्मपत्नी** श्री विमोरजी पुत्रवधू श्री नरेन्द्रजी जैन चोरू वाले का 29

अप्रैल, 2021 को 28 वर्ष की वय में निधन हो गया। संघनिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ परिवार की बहू का जीवन अल्प रहा।  
**चेन्नई-धर्मनिष्ठ** सुश्रावक श्री अशोकचन्द्रजी खींवसरा कोठारी का 22 मई, 2021 को देहावसान हो गया। सन्त-  
 सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता,  
 सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। चेन्नई में रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के शेषेकाल विराजने  
 तथा चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-बन्दन, प्रवचन-श्रमण के साथ धर्म-  
 ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया।

-धन्यवाद स्टेटियर, महामन्दीर

**नागपुर-धर्मनिष्ठ**, संघसेवी सुश्रावक श्री मणिलालजी कटारिया का 23 मई, 2021 को 69 वर्ष की आयु में  
 देहावसान हो गया। कटारिया परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आदरणीय  
 श्री महेन्द्र कुमारजी कटारिया अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष पद, श्री  
 नरेन्द्र कुमारजी कटारिया श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नागपुर शाखा के मन्त्री पद तथा श्री  
 श्रेणिकजी कटारिया, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़शहर के अध्यक्ष पद का दायित्व  
 बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। डॉ. वागेशजी कटारिया गजेन्द्रनिधि के द्रस्टी के रूप में अपनी महनीय सेवा प्रदान कर रहे  
 हैं।

-धन्यवाद स्टेटियर, महामन्दीर

**स्वार्गाधोपुर-धर्मनिष्ठ** सुश्राविका श्रीमती बादामदेवीजी धर्मपत्नी श्री लड्डुलालजी जैन (अध्यापक, चकेरी वाले)  
 का 5 मई, 2021 को 78 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप अत्यन्त सरल, सहज एवं सौम्य  
 व्यवहार की धनी थी। आपने पन्द्रह, ग्यारह, अठाई, तेले-बेले आदि की तपस्या की। आप नियमित  
 सामाजिक-स्वाध्याय, माला जप-तप की साधना-आराधना किया करती थी। आपने उपाध्याय श्री  
 मानचन्द्रजी म.सा. से शीलब्रत का नियम लिया था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई  
 हैं।

**कोटा-धर्मनिष्ठ** सुश्राविका श्रीमती अनिताजी धर्मसहायिका श्री बुद्धिप्रकाशजी पुत्रवधु श्री रामप्रसादजी जैन  
 स्वाध्यायी (बाबई वाले) का 45 वर्ष की आयु में 14 मई, 2021 को निधन हो गया। श्रद्धानिष्ठ,  
 बहुमुखी प्रतिभा की धनी, हँसमुख, मिलनसार, कर्तव्यनिष्ठ एवं सेवाभावी श्राविका नवसारी के  
 श्रावकरत्न श्री हरकचन्द्रजी जैन की सुपुत्री थी। उन्होंने गुजराती से कुछ पुस्तकों का हिन्दी में  
 अनुवाद भी किया था। श्राविकारत्न सुपुत्र पार्थ एवं यथार्थ की माँ थी।

**जगपुर-धर्मनिष्ठ** सुश्रावक श्री गौतमचन्द्रजी सुपुत्र श्री रामनिवासजी जैन (जरखोदा वाले) मानसरोवर का 7 मई,  
 2021 को 48 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। 1987 से वे जयपुर में कार्यरत रहे। कर्तव्यनिष्ठा  
 एवं प्रामाणिकता से उन्होंने अपना व्यक्तित्व बनाया। आप समाजसेवा करने के साथ हँसमुख,  
 मिलनसार एवं स्नेहशील थे। देव, गुरु धर्म के प्रति आस्थावान श्रावक ने 4 तेले की तपस्या की। वे  
 करुणाशील थे तथा गुप्त रूप से सेवा में संलग्न रहते थे। सन्त-सतियों की सेवा में तत्पर रहते थे।  
 आपका सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ को समर्पित है।

**सोप-टोंक-धर्मनिष्ठ** सुश्राविका श्रीमती सुशीलादेवीजी धर्मसहायिका श्री रमेशचन्द्रजी जैन का 57 वर्ष की आयु में  
 22 मई, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल और सादगी से परिपूर्ण था।  
 प्रतिदिन सामाजिक और माला आपके जीवन का अभिन्न अङ्ग था। आप अपने पीछे भरा-पूरा  
 परिवार छोड़कर गई हैं।

-मेवराज जैन, ज्ञानपुर



**आदर्श नगर-स्वार्थगाथोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका** श्रीमती रानीदेवीजी धर्मसहायिका श्री जीतमलजी जैन (एण्डवा वाले) का 21 अप्रैल, 2021 को 62 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका स्वभाव बहुत सरल था तथा गुरु, दर्शन, वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेकर हर्षित होती थी। सामायिक-स्वाध्याय एवं नवकारासी करना आपका नित्यक्रम था। आपने अठाई सहित कई बार तेले एवं बेले की तपस्याएँ की।

-श्रिलोकचन्द्र जैन, ज्येष्ठ



**बजाइया-स्वार्थगाथोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका** श्रीमती रामप्यारीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री राजूलालजी जैन (एण्डवा वाले) का 12 मई, 2021 को 84 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप नित्य प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आपने अपने जीवन में 40 वर्ष शीलद्रवत का पालन किया। 55 वर्ष तक की आयु में आपने उपवास, बेले, तेले एवं दो अठाई के साथ ही दो वर्षी तप, 10 वर्ष तक प्रत्येक रविवार को आयम्बिल ब्रत, रात्रिभोजन त्याग एवं जर्मीकन्द के त्याग आदि किए। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



**जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक** श्री रणजीतनाथजी सुपुत्र स्मृतिशेष श्री जबरनाथजी मोदी का 31 मार्च, 2021 को स्वर्गगमन हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना, सजगता, आत्मीयता, बात्सल्य आदि अनेक सद्गुणों से ओतप्रोत था। मोदी परिवार सदैव गुरुभक्त एवं प्रतिष्ठित परिवार रहा है। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री विश्वनाथजी, विमलनाथजी, रंजननाथजी मोदी एवं सुपुत्री श्रीमती प्रतिभाजी बाफना, पौत्र-पौत्रियों, दौहित्र-दौहित्रवधू सहित भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

-देवेन्द्रनाथ यदेवी, ज्येष्ठ



**इन्दौर-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक** श्री मदनलालजी बोडाना का 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जीवन धर्म, सेवा और परोपकार का त्रिवेणी संगम था। अपने जीवन व्यवहार में सत्यनिष्ठ, सरल और विनम्र थे। जिनशासन के प्रति दृढ़ श्रद्धाशील रहते हुए जैन सन्तों-साध्वीण की सेवा आपका जीवन धर्म था। आप अम्मा-पिया की भूमिका में रहते उन्हें संयम में दृढ़ रहने की प्रेरणा देते रहते थे। धर्म को आचरण में जीने वाले आदर्श सुश्रावक के रूप में नियमित रूप से सामायिक, प्रतिक्रियण, स्वाध्याय, रात्रि भोजन-त्याग उनका नित्यकर्म था। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट, महावीर भवन के ट्रस्टी रहे। आपकी प्रेरणा से स्वाध्याय मण्डल, महावीर स्वास्थ्य केन्द्र, पर्याप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, महावीर जैन स्वाध्याय शाला की स्थापना हुई। जो समाज की युवा पीढ़ी को धर्म और चरित्र निर्माण की दिशा में कार्य कर रही है।

-हस्तीमल झेलरावत, इन्डौर



**जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक** श्री दिनेशजी खिंवसरा का 13 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। सूर्यनगर-जोधपुर में सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। आप अखिल भारतीय आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सह-सचिव के रूप में तथा शिक्षण बोर्ड के प्रचार-प्रसार संयोजक के रूप में अपना दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे थे। साथ ही श्री अखिलेशजी खिंवसरा ने भी युवक परिषद् के विभिन्न पदों पर रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान की।

खिंवसरा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आपकी मातुश्री श्रीमती बुधकंवरजी भी संघ की वरिष्ठ श्राविकारत्न है।

-श्वेतश्वर सेठिवत, महामन्त्री

**जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक** श्री सुरेशचन्द्रजी जैन का 15 मई, 2021 को देहावसान हो गया। जयपुर विराजित साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के जयपुर चातुर्मास तथा शेखेकाल विराजने पर आप

सहित समस्त काश्मीरिया परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में काश्मीरिया परिवार सदैव तत्पर रहा है। -**क्षन्यत स्टेटियर, महामन्त्री बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महावीरचन्दजी सुपुत्र श्री भगवानचन्दजी छाजेड़ का 13 मार्च, 2021 को 51 वर्ष**



की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति से युक्त थे। आप जैन सोशियल ग्रुप, महावीर इण्टरनेशनल से जुड़े होने से जैन परिवारों को सहायता देने का ध्यान रखते थे। आपका परिवार धार्मिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। -**स्टेटियर, बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी धर्मपत्नी स्व.**



श्री गणपतलालजी दांती का 2 अप्रैल, 2021 को 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी थीं। आप 35 साल से एकाशन एवं रात्रि संवर करती थीं तथा सन्त-सतीयों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। -**स्टेटियर, बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी धर्मपत्नी स्व.**

**भड़गाँव-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाजी सिंघवी का 73 वर्ष की आयु में 1 अप्रैल, 2021 को संथारा पूर्वक**



समाधिमरण हो गया। आप महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित शिविरों में अनेक वर्षों तक ज्ञानाराधना हेतु उपस्थित रहीं। आपने स्वाध्यायी के रूप में 15 वर्ष से अधिक वर्षों तक सेवाएँ प्रदान की। 20 वर्ष तक श्री महावीर जैन पाठशाला में पढ़ाने का कार्य किया। आपकी धर्म आराधना प्रतिदिन निरन्तर बनी रहती थी। आप सरलस्वभावी एवं वचनों में विनम्र थीं। जिनवाणी पत्रिका में भी

इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। आपने एक वर्ष पूर्व ही पत्र लिखकर परिवार को सूचित कर दिया था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् भोजन, उठावणा, रौद्रध्यान में समय न लगाकर दान, धर्म में समय लगाना है। -**डॉ अर्जितराज रांकर कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी धर्मसहायिका श्री हनुमानप्रसादजी जैन (चकेरी वाले) का 30 अप्रैल,**



2021 को 74 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति गहरी आस्था थी तथा उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय, माला, जप-तप की साधना-आराधना किया करती थीं। आपने अपने जीवन में 'नवपद ओली तप, बड़ी तपस्याएँ, तीर्थङ्कर साधना तथा आयम्बिल तप' भी किए। आपके दो सुपुत्र एवं पाँच सुपुत्रियाँ हैं।

आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री महेन्द्रजी वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में कई वर्षों से नियमित पर्युषण में अपनी सेवाएँ संघ को देने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार आपके संस्कारों की महक से पल्लवित, पुष्टि एवं सुगन्धित है।

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नगराजजी मेहता का 2 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आपने रात्रि-भोजन**



त्याग के प्रत्याख्यान अङ्गीकार कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में मेहता परिवार सदैव तत्पर रहा है। आप रत्नसंघीय महासती सरलकैवरजी म.सा. के सांसारिक सुपुत्र थे। आपको संघ द्वारा जो भी कार्य दिया गया उसका बखूबी निर्वहन किया। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सह-कोषाध्यक्ष के रूप में तथा श्री

जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर में तथा कई अन्य संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहकर अपना दायित्व बखूबी निर्वहन किया। आप काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे, परन्तु नियमित रूप से नेहरू पार्क स्थानक पथारकर सामायिक-प्रतिक्रियण करते थे। -**क्षन्यत स्टेटियर, महामन्त्री**

**जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघसेवी सुश्रावक श्री सोहनलालजी लूँकड़ का 28 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया। आप**

सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। परम श्रद्धेय आचार्यप्रबवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रबवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने परिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया था जिसके फलस्वरूप लूँकड़ परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी बातसल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी लूँकड़ परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-क्षम्यत सेठिवर महामन्त्री

**जपपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी दूनीवाल का 7 मई, 2021 को स्वर्गगमन हो गया। संघनिष्ठ,**



कर्तव्यनिष्ठ विविध गुरुओं से युक्त श्राविका का जीवन संघ और समाज-सेवा में समर्पित रहा। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी श्रद्धा-भक्ति थी। साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के जयपुर चातुर्मास एवं सन्त-सतीमण्डल के शोखेकाल जयपुर पथारने पर आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। दूनीवाल परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी है। आदरणीय श्री ज्ञानचन्द्रजी दूनीवाल श्री वर्द्धमान जैन श्रावक संघ, मानसरोवर के अध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। स्वधर्मी बातसल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी दूनीवाल परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-क्षम्यत सेठिवर महामन्त्री

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाङ्गलि

युवती मंडल जयपुर की ओर से प्रस्तुत



**वीडियो कॉंटेस्ट - “धोवन पानी”**

अपने रचनात्मकता दिखाएं, कैमरा अंडे करें और वीडियो बनाएं।

**वीडियो में क्या क्या होना चाहिए?**

1. वैज्ञानिक, धार्मिक कारण
2. राखा वे प्रकार
3. राखा और पानी का सामंजस्य
4. धोवन पानी बनने का समय
5. लाभ
6. अविल रहने का समय
7. बचे हुए पानी का क्या करें

**याद रखने की बातें।**

1. टॉप 3 बच्चों के वीडियो को पुरस्कार
2. टॉप 3 बड़ों के वीडियो को पुरस्कार
3. अधिकतम समय 5 मिनिट
4. वीडियो इस नेबर पर भेजें 8696170903
5. अंतिम तारीख June 25
6. इनाम इस प्रकार :

1st

Rs.  
2500

2nd

Rs.  
2000

3rd

Rs.  
1500

वीडियो की क्वालिटी, कंटेंट, प्रेजेटेशन और उच्चारण के आधार पर अंक दिए जायेंगे।

वीडियो कोई भी भाषा में, बच्चों या बड़ों द्वारा बनाया जा सकता है।

## ❖ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❖

### **4000/-मण्डल साहित्य सदस्यता**

**(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**

817 श्री विकासजी मेहता, कोप्पल (कर्नाटक)

### **1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन**

**(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**

क्रम संख्या 16214 से 16219 तक कुल 6 सदस्य बने।

### **जिनवाणी मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु**

#### **साभार प्राप्त**

100000/- इन्द्रमल मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट,  
बीकानेर (राज.)

100000/- डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली

### **जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त**

51000/- श्री प्रदीपजी, श्री हेमन्तजी, श्री संजयजी, श्री आलोक जी कोठारी, जयपुर श्रीमती पारसदेवीजी कोठारी जवाहर नगर, जयपुर के पड़पोत्र (पुत्र श्री मनीषजी-श्रीमती चाँदनीजी) के जन्म अवसर पर।

25000/- श्री महावीर चन्द्रजी बाफणा, सूरत जिनवाणी बाल स्तम्भ पुरस्कार (अप्रैल 21 से मार्च 22) हेतु सप्रेम।

11000/- श्रीमती कमलाबाईजी, श्री नरेन्द्रजी, श्री महेन्द्रजी, श्री प्रदीपजी लोढा, जोधपुर पूज्य श्री नवरत्नमलजी लोढा का 17 मई, 2021 को अजमेर में देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

10000/- श्री अनिलजी बम्ब, जयपुर पूज्य पिताजी श्री विनयचन्द्रजी बम्ब का 25 मार्च, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में।

5101/- श्री अरविन्दजी जैन (एडवोकेट), श्री रविन्द्र कुमारजी जैन, बजरिया सवाईमाधोपुर पूज्य पिताजी श्री सौभाग्यमलजी जैन एडवोकेट का 8 अप्रैल, 2021 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

5100/- श्रीमती जयाजी-श्री सुरेशजी गोखरू, जयपुर हाल निवासी मुम्बई, सुपुत्र श्री सुजग गोखरू के एम.बी.बी.एस. डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने पर।

5100/- श्री भागचन्द्रजी अंकित कुमारजी साण्ड,

विजयनगर, सुश्राविका श्रीमती मंजूदेवीजी साण्ड धर्मसहायिका श्री भागचन्द्रजी साण्ड का 20 अप्रैल, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में।

श्री बसन्तकुमारजी, श्री अमितजी, श्री अभिषेकजी हीरावत, जयपुर श्रीमती राजकुमारीजी हीरावत का 4 मई, 2021 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

श्री झूमरमलजी नवीनकुमारजी भंसाली, पाली पूज्या मातुश्री जेठाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री भीकमचन्द्रजी भंसाली का 30 अप्रैल, 2021 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

श्रीमती मीनाजी-अभिनन्दनजी जैन, जयपुर वैवाहिक वर्षगाँठ पर सप्रेम।

श्री लक्ष्मीनारायणजी, ऋषभ कुमारजी जैन, सुमेरगंजमण्डी, श्रीमती लीलाजी धर्मसहायिका श्री ऋषभजी पुत्रवधू श्री लक्ष्मीनारायणजी-रतनबाई जी जैन के वर्षीतप पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

श्री महेन्द्रजी-श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत सुपौत्र आरब एवं विवान के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।

श्री महेन्द्रचन्द्रजी मेहता, जोधपुर नूतन गृह प्रवेश करने पर सप्रेम।

श्री घीसालालजी राजेशकुमारजी बम्ब, (अमेरिका) जयपुर, श्रीमती पारसदेवीजी धर्मपत्नी श्री घीसालालजी बम्ब की पुण्य स्मृति में।

श्रीमती सुशीलाजी भंसाली, जोधपुर कमलपतराजजी सुपुत्र स्व. श्री जसवन्तराजजी भंसाली का 23 अप्रैल, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में।

श्रीमती अनितादेवीजी, श्री उन्नतजी, श्री प्रियंकजी, श्री सौम्यजी मेहता, अहमदाबाद श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता का 6 मार्च, 2021 को निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

श्रीमती किरणजी-डॉ. ए.ए.एम. भण्डारी, जयपुर स्व. श्रीमती उमरावकेंवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री सरदारमलजी भण्डारी की पुण्य स्मृति में।

श्रीमती विजयलक्ष्मीजी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री

प्रेमबाबूजी जैन पौत्र सौरभ जैन, सवाईमाधोपुर स्व.	देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।
श्रीमती रामकन्याबाईजी पत्नी स्व. श्री गोपीलालजी जैन एण्डवा वालों की छठी पुण्य तिथि पर।	श्री बाबूलालजी जैन कंजोली वाले, हिण्डौनसिटी वैवाहिक वर्षगाँठ 20 मई, 2021 के उपलक्ष्य में।
2000/- श्री आर. प्रसन्नचन्द्रजी चोरडिया, चेन्नई सप्रेम।	श्री उमेदचन्द्रजी, श्री दानमलजी, श्री राजेन्द्र प्रसादजी, श्री ऋषभ कुमारजी जैन (जरखोदा वाले) जयपुर पूज्य पिताजी स्व. श्री हरकचन्द्रजी जैन बोहरा की 16 मई, 2021 को 25वाँ पुण्य तिथि पर।
1202/- श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, सुपुत्र अभिषेक गांग के 40वें जन्मदिवस एवं धर्मसहायिका श्रीमती ललिताजी गांग के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।	श्री रितेशजी श्री प्रतीकजी जैन, कोटा पूज्य पिताजी श्री रमेशचन्द्रजी जैन (चकेरी वाले) का 6 अक्टूबर, 2020 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।
1100/- श्रीमती पृष्ठादेवीजी, पूर्णिमाजी गोलेछा, जयपुर सुश्रावक श्री विकास जी गोलेछा की पुण्य स्मृति में।	श्री मोहितजी-श्रीमती मेघनाजी, सुश्री माया, श्री जय सिंधवी, जोधपुर श्री राजेन्द्रचन्द्रजी एवं श्रीमती मधुजी सिंधवी, जोधपुर के प्रथम वर्षीतप की तपस्या अक्षय तृतीया को पूर्ण होने पर सप्रेम।
1100/- श्री महेन्द्रजी-श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत मोक्षधाम के मसीहा और समाज के असली हीरो स्व. श्री मखतूरमलजी गांग का जोधपुर में 9 मार्च, 2021 को स्वर्गवास होने पर कोटि-कोटि नमन और वन्दन के साथ पुण्य स्मृति में।	<b>सम्पर्कग्रन्थान् प्रचारक मण्डल हेतु साभार</b>
1100/- श्री महेन्द्रजी-श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत समाजसेवी, धर्मनिष्ठ गुरुभक्त एवं स्वाध्यायी श्री चंचलमलजी गांग पुत्र स्व. श्री केवलमलजी गांग जोधपुर का 6 अप्रैल, 2021 को स्वर्गवास होने पर कोटि-कोटि नमन एवं वन्दन के साथ पुण्य स्मृति में।	11000/- श्री शंकरलालजी भूरचन्द्रजी जैन, नन्दूबार साहित्य प्रकाशन हेतु।
1100/- श्री राहुलजी, हितेषजी, श्री नितेशजी जैन, (अलीगढ़-रामपुरा वाले) पूज्य पिताजी श्री महेन्द्रकुमारजी जैन का 31 मार्च, 2021 को देहावसान होने पर पुण्य स्मृति में।	5000/- डॉ. निर्मलकुमारजी प्यारेलालजी बोहरा, हैदराबाद पूज्या मातुश्री श्रीमती शांतादेवी जी धर्मसहायिका स्व. श्री प्यारेलालजी बोहरा का 22 मई, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में।
1100/- श्री जम्बूकुमारजी जैन, चौथ का बरवाडा, पूज्या मातुश्री श्रीमती धूलीबाईजी धर्मपत्नी श्री चौथमलजी जैन चौधरी का 10 मार्च, 2021 को	<b>गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु द्रष्टव्य</b>
	1. श्रीमती संगीताजी-देवांशजी कुम्हट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
	2. श्रीमती सुजाताजी-नरेन्द्रजी हीरावत, मुम्बई (महाराष्ट्र)

### आगामी पर्व तिथि

ज्येष्ठ शुक्ला 8, शुक्रवार	18.06.2021	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला 14, बुधवार	23.06.2021	चतुर्दशी, क्रियोदारक आचार्यग्रवर पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. का 176वाँ स्मृति-दिवस
ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा, गुरुवार	24.06.2021	पक्खी
आषाढ़ कृष्णा 8, शुक्रवार	02.07.2021	अष्टमी
आषाढ़ कृष्णा 14, गुरुवार	08.07.2021	चतुर्दशी
आषाढ़ कृष्णा अमावस, शुक्रवार	09.07.2021	पक्खी
आषाढ़ शुक्ला 8, शनिवार	17.07.2021	अष्टमी
आषाढ़ शुक्ला 14, शुक्रवार	23.07.2021	चतुर्दशी, चातुर्मासिक पर्व (चातुर्मास प्रारम्भ)

# बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द्र प्रेमकंवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्द्रजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्झ्यज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

## माँ का भरोसा

### श्रीमती निरधि दिनेश लोढ़ा

विमलाजी ने मैगजीन खोली, अपने बेटे का फोटो देखा, उसका इंटरव्यू पढ़ा और खुशी से आँखें भर आईं। उन्हें वह दिन याद आ गया जब उसका जन्म हुआ था। पहली बार देखते ही मन मोह लिया, लेकिन यह क्या पाँव पूरे मुड़े हुए थे। देखते ही सबने कह दिया-यह बच्चा तो कभी चल ही नहीं पाएगा। डॉक्टरों को दिखाया, उन्होंने भी यही जवाब दिया कि यह बच्चा कभी चल नहीं पाएगा।

एक माँ का मन, यह मानने को तैयार ही नहीं था। जैसे-जैसे एक-डेढ़ महीना पूरा हुआ और विमलाजी ने अपने पति से राजस्थान के छोटे से गाँव से बड़े शहर मुम्बई जाने की जिद की। वह अपने बेटे के इलाज के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहती थी।

घर वालों ने भी कहा-“यह लोग बाबले हो गये हैं पाँव पूरे टेढ़े हैं तो क्या चल पाएगा? फालतू पैसा और समय बर्बाद करेंगे।” जैसे-जैसे मुम्बई तो आ गये, जसलोक हॉस्पिटल में दिखाया।

डॉक्टर ने कहा-“मैं कोशिश कर सकता हूँ, पर ठीक होगा या नहीं, कोई गारण्टी नहीं है और इलाज के लिए लगभग 7,000 रुपये लगेंगे।”

बात है आज से 40-45 साल पहले की। उनके लिए 500 रुपये की व्यवस्था करना भी भारी था। पहचान वालों से, यार-दोस्तों से, रिश्तेदारों से मदद की गुहार लगाई। पैसे शीघ्र वापस लौटाने का आश्वासन भी दिया, मगर किसी ने हाथ आगे नहीं बढ़ाया। किसी ने ठीक ही कहा है कि धी में धी तो सब डालते हैं, पर जब कुछ नहीं होता तो आगे कोई नहीं आता। विमलाजी ने तो जैसे ठान रखी थी कि इलाज होकर रहेगा। चाहे गहने बेचने पड़े; चाहे कुछ और भी। आखिर पैसे का इन्तज़ाम भी हो गया।

यह डॉक्टर के लिए भी एक्सपेरिमेण्ट वाला ही केस था। छह माह के लिए पाँवों पर प्लास्टर चढ़ा दिया, यह सोचकर कि बच्चे की हड्डियाँ नाजुक और सॉफ्ट होती हैं, शायद सीधी हो जायें। कुछ परिणाम मिला, पर पाँव अभी भी एकदम सीधे नहीं हुये। फिर छह माह का प्लास्टर चढ़ा दिया, पर शायद परीक्षा की घड़िया अभी भी बाकी थीं। पर उम्मीद भी जिन्दा थी, इसलिये फिर छह माह का प्लास्टर चढ़ा दिया।

इतना धैर्य रखकर उम्मीद के सहारे वक्त गुज़ारना आसान न था। पर कहते हैं न कि माँ का विश्वास, उसकी आस्था, उसका निश्चय, उसका फैलादी भरोसा, नियति भी बदल देता है। दिन-रात भगवान से

माँगती दुआएँ आखिर रंग लाई और डेढ़ साल तक प्लॉस्टर में रहने के बाद पाँच सीधे हो गये। माँ और बच्चे का जो कनेक्शन है शायद उसी दिन बच्चे ने भी अपने सब कॉन्शियस में बैठा लिया कि माँ एक दिन तुझे मुझ पर गर्व होगा, तेरा सपूत्र कुछ ऐसा करेगा। तेरी मेहनत निष्फल नहीं जायेगी।

बेटा बड़ा हुआ, मेहनत की। कभी सफलता तो कभी विफलता मिली, पर जिसमें जुनून है कुछ कर दिखाने का ज़ज्बा है, उसे एक मुकाम तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता।

यह एक सत्य घटना है उन्होंने नाम, पैसा और शौहरत सब कमाया, पर पूरा श्रेय माँ के आशीर्वाद को देते हैं। माँ का हाथ जिसके सिर पर है, सारा जहाँ उसकी मुट्ठी में है।

-बी 2402, इण्डिया बुल्स ब्लू, डॉ. इंस्ट्रेस्स रोड, वर्ली नालू, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

## सामायिक-प्रश्नोत्तर

**प्र. 1—सिद्ध मुक्त हैं, फिर भी सिद्धों के पहले अरिहन्तों को नमस्कार क्यों किया गया?**

उत्तर— अरिहन्त धर्म को प्रकट कर मोक्ष की राह दिखाने वाले और सिद्धों की पहचान कराने वाले हैं। अरिहन्त सशरीरी हैं और सिद्ध अशरीरी। परम उपकारी होने के कारण सिद्धों के पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया है।

**प्र. 2—आचार्य किसे कहते हैं?**

उत्तर— चतुर्विध संघ के वे श्रमण, जो संघ के नायक होते हैं और जो स्वयं पञ्चाचार का पालन करते हुए साधु-संघ में भी आचार पलवाते हैं, उन्हें आचार्य कहते हैं। ये 36 गुणों के धारक होते हैं।

**प्र. 3—उपाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर— वे श्रमण, जो स्वयं शास्त्रों का अध्ययन करते हैं और दूसरों को अध्ययन करवाते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं। ये 25 गुणों के धारक होते हैं।

**प्र. 4—साधु किसे कहते हैं?**

उत्तर— गृहस्थ धर्म का त्याग कर जो पाँच महाब्रत-1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अचौर्य, 4. ब्रह्मचर्य और 5. अपरिग्रह को पालते हैं एवं शास्त्रों में बतलाये गये समस्त आचार सम्बन्धी नियमों का पालन करते हैं, उन्हें साधु कहते हैं। ये 27 गुणों के धारक होते हैं।

—‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र’ पुस्तक से

**सुख देने वाली स्त्रिख**

डॉ. दिलीप थिंग

सितम्बर-2009 में मैं चेन्नई आया। मुझे चेन्नई बुलाने और लाने का श्रेय श्री पी. शिखरमलजी सुराणा को है। सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज के संस्थापक भागीदार और समर्पित समाजसेवी श्री सुराणाजी ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल और रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर भी अविस्मरणीय सेवाएँ दी हैं। चेन्नई आते ही मैं उनके कार्यालय की सेवाओं से जुड़ गया। यहाँ जुड़ने के उपरान्त उन्होंने मुझे एलएल.बी. करने का सुझाव दिया। सारा खर्च उन्होंने बहन करते हुए एलएल.बी. के लिए कर्नाटिक स्टेट लॉयनिंवर्सिटी में मेरा पञ्चीयन करवा दिया।

इससे पूर्व मैंने उदयपुर में बी.कॉम., एम.ए. और पीएच.डी. तक की उच्च शिक्षा ले रखी थी। अब मुझे फिर से स्नातक की पढ़ाई करनी थी। पहली बार अंग्रेजी माध्यम से कोई पाठ्यक्रम पूरा करना था। इस तीन वर्षीय प्रोफेशनल कोर्स में हर छह माह में परीक्षाएँ होती हैं। पहली परीक्षा में मैं पाँच में से तीन विषयों में ही उत्तीर्ण हो सका। मैंने सुराणाजी को बताया कि मेरा परिणाम आशाजनक नहीं है। अतः मैं यह पढ़ाई छोड़ना चाहता हूँ। सुराणाजी ने मुझे इस प्रोफेशनल डिग्री का महत्व बताया तथा प्रोत्साहित करते हुए कहा—“देखो भाई! आप पाँच में से तीन पेपर में पास हो गये। यानी साठ प्रतिशत पेपर में आप उत्तीर्ण हो गये। साठ प्रतिशत तो प्रथम श्रेणी होता है।”

इस तरह उनके अन्तरराष्ट्रीय कार्यालय में सेवारत

रहते हुए कुल छह परीक्षाओं में-से पाँच परीक्षाएँ मैंने उत्तीर्ण कर लीं। सितम्बर-2012 में मैं उनके वहाँ से सेवामुक्त हुआ। तब मेरी माँ उमरावदेवी धर्मि (अब स्मृतिशेष) ने मुझे कहा था- “उनका उपकार मत भूलना। कठिन घड़ियों में उन्होंने जो सहयोग किया, उसे सदा याद रखना।” जीवन और व्यवहार के बारे में माँ का विवेक विलक्षण था।

सुराणाजी के वहाँ से सेवामुक्ति के बाद मार्च-2013 में अन्तिम परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गया; यानी मैं विधि में स्नातक (एलएल.बी.) हो गया। मैंने चेन्नई से फोन करके गाँव में माँ को यह समाचार दिया। माँ ने कहा- “सुराणा साहब की वजह से यह उपाधि मिली है। सबसे पहले उनसे प्रत्यक्ष मिलकर उनका आभार व्यक्त करना।” मैंने कहा- “प्रेम और कृतज्ञता की आपकी सीख सुख देती है। अभी शाम हो गई है। मैं कल सुबह ही उनसे मिलने जा रहा हूँ।”

अगले दिन मैं सुराणाजी से मिलने गया। कृतज्ञता के साथ मैंने उनका अभिवादन किया। पैर छूने लगा तो उन्होंने रोक लिया। उन्होंने अपने अनूठे प्रेम और विद्वत्प्रेम के साथ मेरा सत्कार किया। मेरे जीवन में उनसे प्राप्त स्नेहिल सत्कार का एक प्रेरक प्रसङ्ग और जुड़ गया।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7, अरव्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारयेट, चेन्नई

## All depends on your perspective

Sh. shrikant Gupta

A professor, in her Philosophy class had some items in front of her. When the class began, wordlessly, she picked up a very large and empty mayonnaise jar and proceeded to fill it with golf balls.

She then asked the students if the jar was full. They agreed that it was. So the professor picked up a box of pebbles and poured them into the jar. She shook the jar lightly. The pebbles, of course, rolled into

the open areas between the golf balls. She then asked the students again if the jar was full. They agreed it was.

The professor then picked up a box of sand and poured it into the jar. Of course, the sand filled up everything else. She then asked once more if the jar was full. The students responded with a unanimous yes.

“Now”, said the professor, “I want you to recognize that this jar represents your life. The golf balls are the important things. Your family, your spouse, your health, your children, your friends, your favorite passions.... things that if everything else was lost and only they remained, your life would still be full.”

“The pebbles are the other things that matter like your job, your house, your car.” “Ths sand is everything else--the small stuff.” “If you put the sand into the jar first”, she continued, “there is no room for the pebbles or the golf balls. The same goes for your life. if you spend all your time and energy on the small stuff, you will never have room for the things that are important to you. Pay attention to the things that are critical to your happiness.” “Take care of the golf balls first the things that really matter. Set your priorities. The rest is just sand.”

-जोधपुर (राज.)

## बच्चों की खुराक

- |                   |                        |
|-------------------|------------------------|
| One-One-One       | - पापों को हन।         |
| Two-Two-Two       | - धर्म को छू।          |
| Three-Three-Three | - पापों से हो जा फ्री। |
| Four-Four-Four    | - कभी न बनना चोर।      |

Five-Five-Five	- सुन्दर बनाना लाइफ।
Six-Six-Six	- धर्म का टाइम फिक्स।
Seven-Seven-Seven	- हमारे गुरु ए-बन।
Eight-Eight-Eight	- खोलो मोक्ष का गेट।
Nine-Nine-Nine	- हमारे भगवान सुपर फाइन।
Ten-Ten-Ten	- हम हैं सच्चे जैन।
एक दो, एक दो	- झूठ बोलना छोड़ दो।
तीन चार, तीन चार	- मिलकर रहे जैन समाज।
पाँछ छः, पाँच छः	- ज्यादा है तो बाँट दे।
सात आठ, सात आठ	- शिविर का है ठाट-बाट।
नौ दस, नौ दस	- काम ज्यादा बातें बस।
नौ दस, नौ दस	- धर्म ज्यादा पाप बस।
-संकलनकर्ता, मौलिक जैन, बी-174, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)	

## क़दम क़दम पर जाल बिछा है, देखो भौतिकवाद का

मोहन कोठारी 'विन्द्र'

क़दम क़दम पर जाल बिछा है, देखो भौतिकवाद का,  
फैशन की धमा चौकड़ी, क्या होगा इंसान का।

क़दम क़दम पर जाल बिछा है.....॥टेर॥

भूल गये हम मर्यादाएँ, नैतिकता को भूल गये,  
भूल गये हम वीर की राहें, विषयों में हम झूल गये।  
क्या होगा भावी पीढ़ी का और इस जैन समाज का?

क़दम क़दम पर जाल बिछा है.....॥1॥

अमन चैन को लूट रहे हैं, टी.वी. इण्टरनेट हैं,  
सभी सेट हैं घर में लेकिन, मालिक खुद अपसेट है।  
पता नहीं लगता कुछ भी है, मानव के मिजाज का,

क़दम क़दम पर जाल बिछा है.....॥2॥

गरिमा वाली पोशाकें, अब यदा-कदा ही दिखती हैं,  
जोड़-तोड़ वाले कपड़ों की, छटा निराली खिलती है।  
क्या होगा नैतिक मूल्यों का, धर्म-ध्यान के काज का?

क़दम क़दम पर जाल बिछा है.....॥3॥

धन-दौलत की मदहोशी में, डूब गया इंसान है,  
सन्तानें खो गई व्यसनों में, हो रहे बेहाल हैं।  
पैसे का लो बना दीवाना, ध्यान नहीं घर बार का,  
क़दम क़दम पर जाल बिछा है.....॥4॥

-जनता साझी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन  
रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

## सुरक्षित पर्यावरण में हमारा योगदान

- ◆ कम दूरी के लिए पैदल जाएँ या साइकिल का प्रयोग करें। सावर्जनिक यातायात (बस, ट्रेन आदि) का प्रयोग करें। हवाई यात्रा के स्थान पर रेलयात्रा का प्रयोग करें-वायु प्रदूषण कम करने के लिए। समय पर गाड़ी की सर्विस कराएँ। टायरों में हवा पर्याप्त हो, ट्रैफिक सिग्नल पर, लाल बत्ती पर गाड़ी बन्द कर दें। इन छोटे-छोटे प्रयासों से इंधन की बचत होगी।
- ◆ घर में साफ-सफाई में रासायनिक द्रव्यों के स्थान पर सिरका, नींबू, खाने का सोड़ा आदि का प्रयोग करें। (भूमि एवं जल प्रदूषण कम होगा)।
- ◆ घर में लीक हो रहे नल को ठीक करवाकर 10 गैलन तक पानी बचा सकते हैं।
- ◆ प्लास्टिक एवं थर्माकोल डिस्पोजल के स्थान पर पत्तों एवं मिट्टी से बनी प्लेटें, दोनें और कुल्हड़ का प्रयोग करें।
- ◆ बगीचे में रासायनिक खाद और कीटनाशकों के स्थान पर प्राकृतिक उपायों को प्राथमिकता दें।
- ◆ प्लास्टिक के डिब्बों में रखी जाने वाली खाने की चीजों में हानिकारक रसायनों के मिलने की सम्भावना रहती है। अतः रसोई में प्लास्टिक की बजाय धातु का विकल्प अपनाएँ।
- ◆ आधुनिक तकनीक की दीवानगी हमें नये-नये गैजेट्स खरीदने के लिए प्रेरित करती है, जिससे

- प्रतिवर्ष लाखों टन ई-वेस्ट बढ़ रहा है। अतः पसन्द और जुनून को नहीं, जरूरत के गैजेट्स ही क्रय करने का लक्ष्य रखें।
- ◆ Use and Throw की प्रवृत्ति प्रकृति के लिए नुकसानप्रद है। अतः चीजों को जहाँ तक सम्भव हो, पुनः उपयोग करने की आदत डालें।
  - ◆ घर को साफ-सुथरा रखने के साथ-साथ आस-पास के वातावरण को भी स्वच्छ रखें एवं दूसरों को भी प्रेरित करें।
  - ◆ कागज का दुरुपयोग नहीं करें।
  - ◆ प्लास्टिक का कचरा भूमि के लिए बड़ा खतरा है। अतः कपड़े या जूट के बैग का इस्तेमाल करें।  
- ‘संस्कारम्’ पुस्तक से साभार

### हाँ, मैं गुरु को मानती हूँ!

श्रीमती अंशु संजय सुराणा  
 सुना है गुरुवर से मैंने,  
 पृथ्वी, पानी, वनस्पति में भी होती है चेतना  
 छूने मात्र से भी इनको होती है वेदना,  
 जो कंकर को पानी में फेंकना,  
 नंगे पैर बो धास पर ढौङना  
 चलते-चलते बो फूल-पत्ती तोड़ना,  
 बो रिमझिम बारिश की चादर ओढ़ना  
 छोड़ दिया मैंने, यकीन मानो  
 जो आँखों से नहीं दिखता,  
 उस पर मैं विश्वास करना नहीं जानती हूँ  
 लेकिन मैं गुरु को मानती हूँ,  
 हाँ मैं गुरु की मानती हूँ।  
 हर सुबह नवकार बोलकर,  
 मांगलिक सुनकर घर से बाहर  
 निकलने की आदत डाल ली मैंने  
 क्योंकि गुरुवर कहते हैं,  
 नवकार विघ्नहर्ता है, मांगलिक सुखप्रदाता है,  
 दरवाजे पर पहुँचते ही,

ठिठक जाते हैं क़दम दहलीज़ पर,  
 खुद-ब-खुद आ जाता है,  
 नवकार अधरों के ताबीर पर,  
 यकीन मानो.....  
 मुहूर्त की चलनी में,  
 मैं अपशगुन-शगुन नहीं छानती  
 लेकिन मैं गुरु को मानती हूँ,  
 हाँ, मैं गुरु की मानती हूँ।  
 फरमाते हैं गुरुवर,  
 तो विश्वास अन्तर में जाता है उत्तर  
 तेरे कर्मों का हिसाब है तेरे गुण और पाप,  
 बीज तूने ही बोए, जो फल बन तेरे  
 सामने आ गए अपने आप।  
 अपने दुःख का तूही कर्ता,  
 न देना अन्य को कदापि दोष,  
 हर विपरीत परिस्थिति में भी,  
 सम्भाले रखना अपना होश।  
 हर छोटी-सी तकरार पर भी,  
 जुबां से करती थी मैं वार  
 गलती हो या न हो मेरी,  
 न थी कभी झुकने को तैयार।  
 यकीन मानो,  
 जवाब सामने वाले को,  
 देने की आज भी है ताकत मेरी  
 पर गुरु कृपा से समझ आने लगी है,  
 कर्मों की हेरा-फेरी।  
 नहीं छूटा आज भी मेरा हृदय में क्रोध को पालना,  
 पर होती है कोशिश फिर भी,  
 प्रतिकूलता को मुस्कुरा के टालना  
 जिछा से अब गुरु के गुण ही बखानती हूँ  
 हाँ, मैं गुरु को मानती हूँ, हाँ मैं गुरु की मानती हूँ।

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड,  
 जयपुर-302015 (राज.)

## माता मदालसा

श्री दुलरीचन्द जैन 'सारहित्यरत्न'

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जुलाई, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

**प्राचीन भारत में जो महान् तेजस्वी नारियाँ थीं,** उनमें माता मदालसा का नाम भी सुविख्यात है। उनके पति का नाम था, कुवलयाज्वा। युवावस्था में ही वे एक प्रतापी राजा बन गए थे। एक दिन मन्दिर में उन्होंने एक सुन्दर युवती को देखा, जो अपनी माँ के साथ आई हुई थी। वे उस युवती पर मुग्ध हो गए। उन्होंने उसकी माँ से कहा- “मैं यहाँ का राजा हूँ और आपकी लड़की से विवाह करना चाहता हूँ।”

उसकी माँ ने कहा- “महाराज! मेरी बेटी विवाह न करने का निर्णय कर चुकी है।”

राजा उदास हो गया, तब उस लड़की ने कहा- “राजन्! मैं एक शर्त पर आपसे विवाह कर सकती हूँ।”

राजा ने पूछा- “क्या है तुम्हारी शर्त?”

वह लड़की, जिसका नाम मदालसा था, बोली- “मैं जो कुछ भी करूँ, उसे देखना, पर मुझे रोकना मत।” राजा ने शर्त स्वीकार कर ली।

मदालसा रानी बनकर राजमहल में आ गई। राजा उसे किसी भी कारण से नहीं रोकता था। कुछ वर्षों के बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया, नाम रखा श्रावणगिरि। उसके मन में अच्छे भाव भरने के लिए वह उसे लोरी सुनाती थी-

“शुद्धोसि सिद्धोसि निरंजनोऽसि  
संसार-माया-परिवर्जितोऽसि।  
न मेऽस्ति कश्चिन्न कस्यचित् चाहम्  
निरस्त-निःशेषित-बंधनोऽसि॥”

अर्थात् तुम शुद्ध हो, तुम सिद्ध हो, तुम निर्मल हो, तुम सदैव संसार की माया से निर्लिप्त रहना आदि। इस प्रकार वह उसको अध्यात्म के सुन्दर संस्कार देती थी। बड़ा होकर वह लड़का संसार से विरक्त होकर जंगल में चला गया तथा तपस्वी बन गया। थोड़े दिनों में रानी ने एक और पुत्र को जन्म दिया। राजा को चिन्ता थी कि उसका राज्य कार्य कौन सम्भालेगा। उसे रोकना चाहा कि इस कुमार को संन्यासी नहीं बनाएँ। रानी ने विवाह की शर्त याद दिलाई। इस पुत्र का नाम था, सुब्राहु। वह भी बड़ा होकर संन्यासी बन गया।

कुछ वर्षों बाद रानी ने तीसरे पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम रखा, अलर्क। राजा को पहले ही पता था कि रानी इसे भी संन्यासी बना देगी। अतः उसने रानी से पहले ही प्रार्थना की कि इसे संन्यासी नहीं बनाना। रानी ने उसे गृहस्थ जीवन की शिक्षा दी। पर उसको शिक्षा समझ में नहीं आती थी।

कुछ वर्षों के बाद राजा और रानी तीसरे पुत्र अलर्क को राज्य सौंपकर वन में चले गए। चलते

समय रानी ने पुत्र को एक अँगूठी दी। इस अँगूठी को एक रेशमी वस्त्र में बाँधकर उसमें एक उपदेश-पत्र बाँध दिया और कहा-“जब भी तुम पर कोई मुसीबत आए तो इसे खोलकर पढ़ लेना।”

अलर्क ने अँगूठी सम्भालकर रख ली। पर वह विशाल साप्राज्य का स्वामी होने पर भी बहुत लालच में रहता था। प्रजा के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता था। नगर के प्रमुख व्यक्ति मन्त्री से मिले। मन्त्री ने कहा-“राजा मेरी भी नहीं सुनता है।” आप कुवलयाज्व से मिले। उनसे अपना कष्ट कहें। शायद वे कुछ उपाय कर सकें। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति जंगल में आए और कुवलयाज्व एवं मदालसा से मिले। मदालसा ने अपने दोनों बड़े पुत्रों को बुलाया और कहा-“मैं आज तुम दोनों की परीक्षा लेना चाहती हूँ।”

उन्होंने कहा-“आप आज्ञा दें।”

उसने उनको सभी निर्देश दिए और कहा कि तुम दोनों को अलर्क के पास जाना है और राज्य का हिस्सा माँगना है। माँ का कहा मान दोनों पुत्र राजमहल आए और अपने छोटे भाई से मिले। उन्होंने अलर्क से कहा-“तुम तो जानते हो, महाराज कुवलयाज्व के बड़े पुत्र हम हैं। अतः सिंहासन पर हमारा अधिकार है। यह राज्य हमें चाहिए।”

अलर्क ने कहा-“लेकिन आप लोग तो संन्यासी हैं। संन्यासियों को राजकार्य से क्या मतलब?”

श्रावणगिरि ने कहा-“हमने सुना है कि तुम

राजकार्य से विमुख हो गए हो। अतः राजकार्य हमें सम्भालना होगा।” तुम या तो राज्य हमें दो, नहीं तो हमसे युद्ध करो। अलर्क नहीं माना। दोनों ने पड़ोस के राजाओं की सेना इकट्ठी की और अलर्क को हरा दिया।

अलर्क ने माँ की दी हुई अँगूठी को खोला। उसमें लिखा था, ‘मोह, माया एवं आसक्ति को त्यागकर धर्म की शरण लो।’ अलर्क ने जैसे ही पढ़ा, उसकी आँखें खुल गईं। उसने आत्मसमर्पण कर दिया। उसी समय मदालसा वहाँ आई। उसने कहा-“बेटा! इनको राज्य का लोभ होता तो ये संन्यास क्यों लेते? ये तो तुमको कर्तव्य-पथ पर लाना चाहते थे।” उसके बाद अलर्क प्रजा की भलाई में जुट गया। राज्य में पुनः खुशहाली आ गई। दोनों बड़े भाई माँ के साथ बन में चले गये।

-पुस्तक ‘रेचक ब्रोथकथाएँ’ से सामार

- प्र. 1. आज तेजस्वी नारियों में माता मदालसा का नाम क्यों लिया जाता है?
- प्र. 2. राजा की उदासी का क्या कारण था?
- प्र. 3. मदालसा ने राजा से शादी के पूर्व क्या शर्त रखी थी?
- प्र. 4. मदालसा ने अपने पुत्रों को किस मार्ग पर अग्रसर किया?
- प्र. 5. मदालसा अलर्क को किस तरह सही राह पर लाई?
- प्र. 6. संन्यासी, निर्लिप्त, निर्मल, विरक्त शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग कीजिए।

**WATCH YOUR THOUGHTS,**

**FOR THEY BECOME WORDS.**

**WATCH YOUR WORDS,**

**FOR THEY BECOME ACTIONS.**

**WATCH YOUR ACTIONS,**

**FOR THEY BECOME HABITS.**

**WATCH YOUR HABITS,**

**FOR THEY BECOME CHARACTER.**

**WATCH YOUR CHARACTER,**

**FOR IT BECOME YOUR DESTINY.**

**बाल-स्तम्भ [मार्च-2021] का परिणाम**

जिनवाणी के मार्च-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'कूरता के बिना सुन्दरता' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	22
प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	22
अदिति बाँठिया, नागपुर (महाराष्ट्र)	22
तुषार रमेश जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	22
पहर जैन, आसीन्द (राजस्थान)	22

**बाल-जिनवाणी अप्रैल, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जुलाई, 2021)**

- प्र. 1. सेठ के चिन्तित होने का क्या कारण था ? (सत्यदृष्टि कहानी के आधार पर उत्तर लिखिए)।
- प्र. 2. साधु ने सेठ की अशान्ति को दूर करने का क्या उपाय बताया ?
- प्र. 3. एक सफल मनुष्य के लिए क्या आवश्यक है?
- प्र. 4. 'पापा की पाती' में निहित मूल सन्देश लिखिए।
- प्र. 5. भगवान महावीर ने श्रेणिक महाराज को नरक में जाने से बचने हेतु क्या उपाय बताए ?
- प्र. 6. राजा श्रेणिक को भगवान महावीर ने सामायिक का क्या महत्व बताया ?
- प्र. 7. जैनधर्म में दान देते समय किसका महत्व है और क्यों ?
- प्र. 8. अरिहन्त और सिद्ध में किस आधार पर भिन्नता है ?
- प्र. 9. Does birth in a Jaina Family automatically make us Jainas?
- प्र. 10. तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-व्यापार, प्रतिभा, आराधना, विफलता।

**बाल-जिनवाणी [फवरी-2021] का परिणाम**

जिनवाणी के फवरी-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	36
भावित सुराणा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)	36
सितेश जैन, कोटा (राजस्थान)	36

**संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन**

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्याजान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों 'प्रभो! तुम्हारे यावन यथ यर' और 'हमारे जीवन की नई कहानियाँ' का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर  
विनाश के फल लगते हैं।



## ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती  
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की  
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी  
यहाँ उपलब्ध है।

**ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर**

४७, रत्नज्योति हॉटस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,  
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : [oswalmatrimony@gmail.com](mailto:oswalmatrimony@gmail.com)

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

## गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....  
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spiritual Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168  
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूर्णार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुण्डोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, हूस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाङ, चैन्नई।	श्रीमान् दूलीचन्द बाधमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाङ, पूऱ्णामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाङ, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकर्दं जी भंडारी, द्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजय जटिन जी नाहर, इन्दौर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पजी लोदा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकमारजी, उपेन्द्रकमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
SHRI M. MOFATRAJ JI MUNDOOT, MUMBAI. SHRI M. RAJEEV JI NEETA JI DAGA, HOUSTON. YUVARATNA SHRI HARIOSH JI KAVANG, CHENNAI.  SILVER MEMBER (RS.50000) SHRI M. GUPT SAHAYOGI, CHENNAI. SHRI M. GUPT SAHAYOGI, CHENNAI. SHRI M. GUPT SAHAYOGI, CHENNAI. SHRI M. MAHADEV S. SHOBHANAL JI BODESHRA, JALGANV (BHOPALAGढ). SHRI M. SHOBHANAL JI BHADAMAR, KOREMBUDR. KANHAIYALAL VIMALADEVIHIRA CHAIRITABAL TRUST, AHMEDABAD. SHRI M. GUPT SAHAYOGI, AHMEDABAD. SHRI M. HEMALATA MUDGAL JI SAMBALI, MUMBAI. SHRI M. AMRISHCHAND JI JAIN (JANGAPURISIDH VATE), MAKAROGAR, JAYPUR. SHRI M. SUKHLAL JI SAAD DHARMPALJI SW. SHRI KARSTROMLAL JI SAAD, AJMER.	SHRI M. DULICHAND BADHAMAR END SONS, CHENNAI. SHRI M. DALICHAND JI SURESH JI KAVANG, PUNJAMALLEI. SHRI M. RAJESH JI VIMAL JI PAVAN JI BOHARA, CHENNAI. SHRI M. PREM JI KAVANG, CHENNAI. SHRI M. AMBALAL JI BASANTIDEVI JI KARNAVAT, CHENNAI. SHRI M. SAMPUTRAJ JI RAJAKARDAM JI BANDARI, DRIPALIKEEN-CHENNAI. KANHAYALAL VIMALADEVIHIRA CHAIRITABAL TRUST, AHMEDABAD. PRO. DR. SHAILA VIJAYKUMAR JI SANHALA, CHALIESINGHAW (MAH.). SHRI M. VIJAY JATIN JI NAHAR, INDIA. SHRI M. GUPT SAHAYOGI, CHENNAI. SHRI M. VIJAYKUMAR JI MUKESH JI VINIET JI GOTHI, MADANGANG-KISHANGAD. SHRI JAIN RATN SHRAWIKA MANDAL, TAMILNADU. SHRI M. PUSHPAJEE LODA, NEHRU PARK, JODHPUR. SHRI M. JI. GANPATRAJJI, HEMANTKUMARJEE, UPENDRAKUMARJEE, KOYAMBUUR (KOOSAAN VALA).

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर मेरे - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56  
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्हित यरिखः को हल्का करदे का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करदे का’

## जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्जान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 बर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितेषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेपट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्जान प्रचारक मण्डल, 9314625596

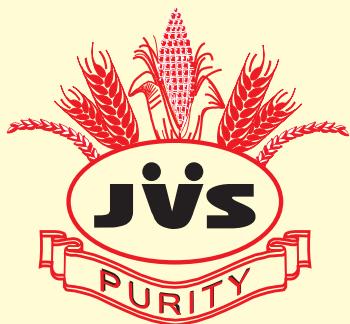
## जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

**'जिनवाणी'** हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-त्वयस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्वों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्बन्धित प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
- (2) श्री विनयचन्द्रजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (3) डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (4) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (5) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (6) श्री हिमांशुजी सुप्रति श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
- (7) श्री गौतमचन्द्रजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
- (8) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
- (9) श्री मुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
- (10) श्री रतनराजजी नेमीचन्द्रजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
- (11) नयनतारा रतनलाल सी. बाफण एण्ड सन्स, जलगाँव
- (12) श्री गरजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
- (13) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
- (14) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
- (15) श्री उम्मेदराजजी, एवन्टकुमारजी, राजेशकुमारजी ढूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
- (16) श्री दुलीचन्द्रजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
- (17) श्री चंचलमलजी, अशोक कुमारजी चौरड़िया, जोधपुर
- (18) श्री प्रपोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
- (19) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
- (20) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (दहरा वाले), हिंडौनसिटी-जयपुर
- (21) श्री सागरमलजी, हुकमचन्द्रजी नागसेठिया, शिरपुर
- (22) श्री क्रान्तिचन्द्रजी मेहता, अलवर

### वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री भागचन्द्रजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
- (2) श्री सौभायमलजी, हरकचन्द्रजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्द्रजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सर्वाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
- (3) श्री स्वरूपचन्द्रजी बाफना, सूरत
- (4) श्री सुमतिचन्द्रजी कोठारी, जयपुर
- (5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
- (6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इंदौर
- (7) श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत, जयपुर
- (8) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
- (9) श्री रंगरूपमलजी चौरड़िया, चेन्नई
- (10) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (11) इन्द्रमल मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
- (12) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर



# JVS Foods Pvt. Ltd.

**Manufacturer of :**

**NUTRITION FOODS**

**BREAKFAST CEREALS**

**FORTIFIED RICE KERNELS**

**WHOLE & BLENDED SPICES**

**VITAMIN AND MINERAL PREMIXES**

*Special Foods for undernourished Children  
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

*With Best Wishes :*

**JVS Foods Pvt. Ltd.**

G-220, Sitapura Ind. Area,  
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





## WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE. BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT  
**IMMENSA**  
THANE (W)  
EVERYTHING UNDER THE SUN

**TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065**

**Site Address:** Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | Website: www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. \*Conditions apply.

*If undelivered, Please return to*

**Samyaggyan Pracharak Mandal**  
Above Shop No. 182,  
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)  
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक – अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन